—: सम्पादक :—
डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी
— सहायक —
मु० गुफ़रान नदवी
मु० हसन अन्सारी
हबीबुल्लाह आज़मी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही !
मजलिसे सहाफत व नशरियात
पो० बॉ० नं० 93
टैगोर मार्ग, नदवतुल उलमा, लखनऊ
फोन : 0522-2740406
फैक्स : 0522-2741231
e-mail :
nadwa@sancharnet.in

सहयोग राशि

एक प्रति	रु० 9/—
वार्षिक	रु० 100/—
विशेष वार्षिक	रु० 500/—
विदेशों में (वार्षिक)	25 यूएस डालर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें :
"सच्चा राही"
पता : सेक्रेटरी मजलिसे सहाफ़त
व नशरियात नदवतुल उलमा,
लखनऊ—226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ़्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात, टैगोर मार्ग नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

H.I.Computers - 9335214913

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक
लखनऊ

फरवरी, 2008 वर्ष 6 अंक 12

कलिमाते तय्यिबात

बन्दे को चाहिए कि सिवा अपने रब के किसी से उम्मीद न रखे। और अपने गुनाहों के सिवा किसी चीज़ से ख़ौफ़ न करे।

जिस ने अपने आप को पहचान लिया उसने अपने रब को पहचान लिया।

(हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु)

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

विषय एक नज़र में

औरतों पर इस्लाम का एहसान	सम्पादकीय	3
कुर्आन की शिक्षा	मौलाना मंजूर नोमानी	5
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	8
चल बसे (पद्य)	इस्हाक़ इल्मी	10
इन्सान की तलाश	मौ० अ़ली मियां (रह़०)	11
खुत्ब-ए-सदारत	मौलाना आज़ाद	15
भारत का संक्षिप्त इतिहास	स० अबूज़फ़र नदवी	17
ख़ाक हो जाएंगे हम	इशरत सिद्दीक़ी	19
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती मुहम्मद तारिक नदवी	20
कुछ अहम शुहदाए इस्लाम	इदारा	22
नअ़त	ओम प्रकाश दिल	24
हज़रत उ़मर के अख़्लाक़	इरफ़ान फ़ारूक़ी नदवी	25
धरना प्रदर्शन	अनुवाद	30
सौन्दर्य प्रसाधन ख़तरनाक	उमेश कुमार साहू	32
काबा के मुताबिक चलें घड़ियां	ग्रहीत	33
गुजरात नरसंहार	रहमानी	34
कैरियर	इदारा	36
वेलेन्टाइन डे	एन साक़िब अ़ब्बासी	37
ऐ मालिके अर्शे बरीं	अमतुल अ़ज़ीज़	38
वैद्य की सलाह	डॉ० अजय शर्मा	39
अन्तर्राष्ट्रीय समाचार	डॉ० मुईद अशरफ़ नदवी	40

(सम्पादक का लेखकों से सहमत होना आवश्यक नहीं है)

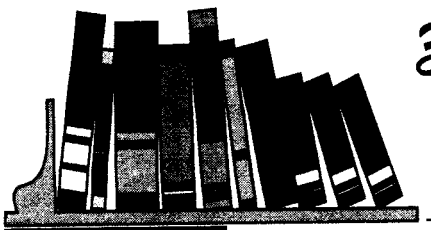

औरतों पर इस्लाम का एहसान

डा० हारून रशीद सिद्दीकी

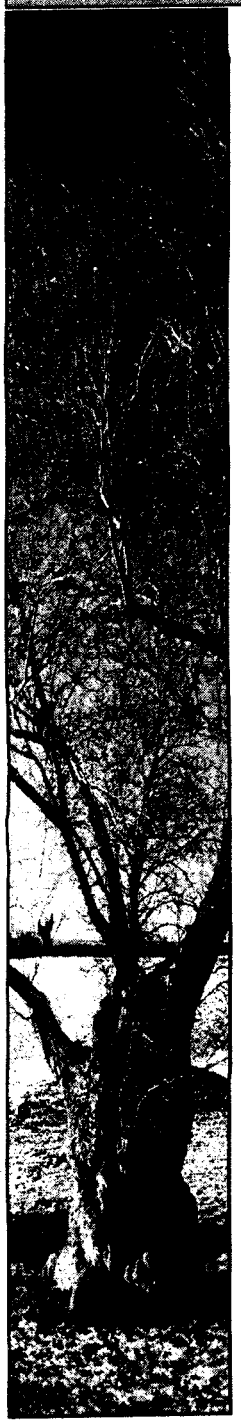

कहते हैं दौरे जाहिलीयत में अक्सर लोग बच्चियों के वजूद को ना पसन्द करते थे, अगर्चि वह मानते थे कि ख़ुद उनका वजूद (अस्तित्व) किसी औरत ही से हुआ है। अस्बाब मुख़्तलिफ़ थे। कोई तो दामाद बनाने में अपनी तौहीन समझता था जबकि वह किसी का दामाद था, कोई रोज़ी की तंगी के ख़तरे से बच्चियों का वजूद न चाहता था। अल्लाह तआ़ला ने उस ज़मान–ए–जाहिलीयत की उस हालत का जो ज़िक्र क़ुर्आन मजीद में किया है मुलाहज़ा कीजिए।

अनुवाद : और जब उन में से किसी को बेटी की शुभ सूचना मिलती है तो उसके चेहरे पर कलौंस छा जाती है और वह घुटा घुटा रहता है। जो सूचना उसे दी गई वह (उस की दृष्टि में) ऐसी बुराई की बात हुई कि उस के कारण वह लोगों से छिपता फिरता है कि अपमान सहन कर के उसे रहने दे या उसे मिट्टी में दबा दे, देखो कितना बुरा फ़ैसला है जो वह कर रहे हैं।

(१६:५८,५६)

कितने लोग अपनी बच्चियों को मिट्टी में दबा देते थे ऐसे ज़ालिमों को सख़्त सज़ा मिलेगी जैसा कि कुर्आने मजीद में इशारा है : "और (याद करो वह हिसाब व किताब का दिन) जब जीवित ज़मीन में दफ़नाई हुई लड़की से पूछा जाएगा कि उस की हत्या किस गुनाह के कारण हुई।"

(८१:८,९)

बेशक अल्लाह करीम है रहीम है अरहमुर्राहिमीन है उस ने अपने आख़िरी नबी (सल्ल०) को भेज कर बच्चियों और औरतों पर होने वाले इस ज़ुल्मे अ़ज़ीम से बचाने का इन्तिज़ाम किया आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया : "जिस ने दो लड़कियों की परवरिश की यहां तक कि वह सिन्ने बुलूग़ को पहुंच गईं, क़ियामत के दिन मैं और वह साथ आएंगे और अपनी उंगलियों को मिला लिया।" (मुस्लिम)

फ़रमाया :

"जिस ने तीन लड़कियों की परवरिश की उन को तहज़ीब व अदब सिखाया और शादी कर दी और उनके साथ हुस्ने सुलूक किया तो उस के लिए जन्नत है।" (अबूदाऊद)

फ़रमाया: "मैं तुम को बेहतरीन सदक़ा न बता दूं वह तुम्हारी बेटी पर ख़र्च है जिसके इख़राजात तुम्हारे ही ज़िम्मे हों।" (इब्नि माजा)

फ़रमाया :

"जिस के लड़की हो और वह उस को ज़िन्दा दरगोर न करे और उस पर अपने लड़के को तरजीह न दे तो अल्लाह तआ़ला उसको जन्नत में दाखिल फ़रमाएंगे। (बुख़ारी)

औरतों के बारे में फ़रमाया :

मैं तुम्हें औरतों के साथ हुस्ने सुलूक की वसीयत करता हूं, तुम इस वसीयत को क़बूल कर लो औरत पसली से पैदा की गयी है, पस्ली में सब से टेढ़ा उसका ऊपर का हिस्सा है अगर सीधा करने लगोगे तो तोड़ दोगे और छोड़ दोगे तो टेढ़ी ही रहेगी। लिहाज़ा उन के साथ हुस्ने

सुलूक की नसीहत क़बूल करो (बुख़ारी) और **फ़रमाया :** "दुन्या चन्द रोज़ा काम आने वाला सामाने ज़िन्दगी है और उसका सब से बेहतर सामान नेक ख़ू औरत है। (मुस्लिम)

और क़ुर्आने पाक में अल्लाह तआला ने एअ़लान फ़रमाया :

मैं तुम में से किसी कर्म करने वाले के कर्म को अकारथ नहीं करूंगा चाहे वह पुरुष हो या स्त्री। (३:१६५)

और फ़रमाया :

किन्तु जो अच्छे कर्म करेगा, चाहे पुरुष हो या स्त्री यदि वह ईमान वाला है तो ऐसे मोमिन जन्नत में दाख़िल होंगे और उनका हक़ रत्ती भर भी मारा नहीं जाएगा। (४:१२४)

और फ़रमाया :

जिस किसी ने भी अच्छा कर्म किया पुरुष हो या स्त्री शर्त यह है कि वह ईमान पर हो तो हम उसे अवश्य आनन्दमय जीवन देंगे और ऐसे लोग जो अच्छा कर्म करते रहे उस के बदले में हम उन्हें अवश्य उन का प्रतिदान प्रदान करेंगे। (१६:६७)

और फ़रमाया :

जिस किसी ने बुराई की तो उसे वैसा ही बदला मिलेगा, किन्तु सिज किसी ने अच्छा कर्म किया चाहे वह पुरुष हो या स्त्री, पर हो वह मोमिन तो ऐसे लोग जन्नत में प्रवेश करेंगे, वहां उन्हें बे हिसाब रिज़्क़ दिया जाएगा। (४०:४०)

कहां फ़ुरसत है तस्लीमा को औरतों पर किये गये इस्लाम के इन एहसानों को पढ़ने और इन पर ध्यान देने की। उसके निकट तो मरने पर सब कुछ ख़त्म हो जाता है। अतः इस दुन्या का आनन्द जितना मिल सकता हो प्राप्त किया जाए, उस का दृष्टिकोण तो :

बाबर ब ऐश कोश कि दुन्या दोबारा नेस्त

का है, अर्थात यह दुन्या फिर न मिल सकेगी अतः आनन्द के लिए, भोग विलास के लिए जितना प्रयास हो सकता है कर डालो। उस को तो रूप मिला है कुरूपों की उस को चिन्ता नहीं, वह स्वस्थ्य है रोगियों की उसको परवाह नहीं, वह क्या जाने लंगड़ों, लूलों, अन्धों की क्या समस्याएं हैं? उसके सौन्दर्य के बदले दौलत की रेल पेल है, इस्लाम विरोध के कारण ऊंचे गेस्ट हाउसों में उस का स्वागत हो रहा है। तस्लीमा और उस जैसी सोच रखने वाली सभी युवतियों तथा धर्म से क्रुद्ध और अप्रसन्न सभी जनों से अनुरोध है कि वह सोचें और अपने ही को उत्तर दें कि मरने के पश्चात मनुष्य कहां जाता है? आज साइन्स ने बड़ी उन्नति की है क्या वह प्राण के तथ्य को समझ सकी है।

तस्लीमा जैसी सोच रखने वाले तनिक ध्यान तो दें क्या यह झूठ है कि इब्राहीम (अ०) को आग जला न सकी थी, क्या यह सत्य नहीं है कि मूसा (अ०) अपनी लाठी जब जमीन पर रखते थे तो वह अजगर बन जाती थी और उनके पकड़ लेने पर फिर लाठी हो जाती थी। क्या यह सत्य नहीं है कि ईसा (अ०) मुर्दों को ज़िन्दा कर दिया करते थे और उनके हाथ फेरते ही कोढ़ी अच्छे हो जाते और अन्धे देखने लगते।

जिन सहाब–ए–किराम ने अपनी आंखों से देखा था कि थोड़े से पानी में अन्तिम नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हाथ डाला तो पानी उबलने लगा फिर तो १४०० सहाबा ने वुज़ू किया और पिया, तीन किलो आटे की रोटी से आप (सल्ल०) की दुआ से १००० सहाबा ने पेट भर कर खाया, एक प्याला दूध से पूरे सुफ़्फ़ा वालों ने पेट भर कर पिया फिर भी

(शेष पृष्ठ १० पर)

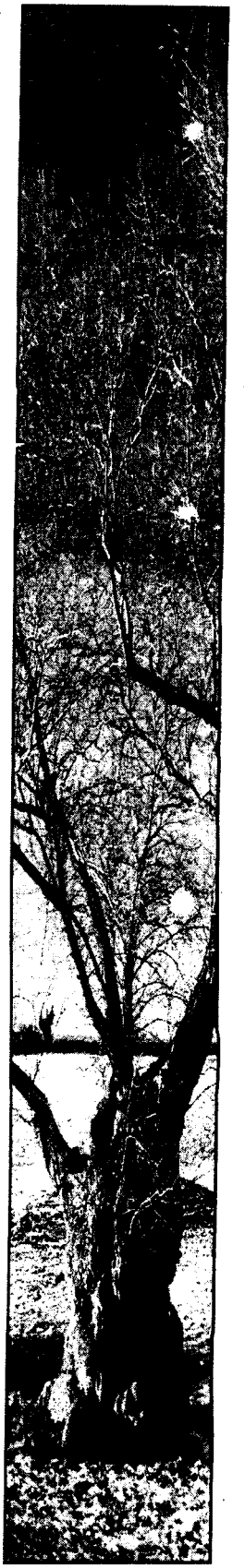

क़ुर्आन की शिक्षा

मौ० मु० मंजूर नोमानी

अ़मले सालेह़

हिदायत का इत्तेबा, रसूल की इताअ़त और रसूल वाली इसी ज़िन्दगी को अ़मले–सालेह़ वाली ज़िन्दगी कहा जाता है। क़ुरआने मजीद में बेशुमार जगहों पर ईमान के साथ अ़मले–सालेह़ का ज़िक्र किया गया है। मानो इन दोनों से मिलकर ही वह ज़िन्दगी बनती है जो अल्लाह को पसन्द है और जो हम को उस का महबूब बन्दा बना देती है। क़ुरआने–मजीद में बिला मुबालग़ा सैकड़ों जगहों पर अ़मले सालेह़, वाली ज़िन्दगी पर ऐसी ऐसी ख़ुशख़बरियां सुनाई गयी हैं जिन में ईमान वाली रूहों के लिये लज़्ज़त (स्वाद) व ख़ुशी व मस्ती का वास्तव में उस से ज़ियादा सामान है जितना कि शराब के मतवालों को शराब से हासिल होता होगा। चंद आयतें यहां भी सुन लीजिए।

सूरए ह़ज्ज में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को ह़ुक्म है कि आप पूरी दुन्या को हमारा पैग़ाम सुना दीजिए, इर्शाद है :

तर्जमा : ऐ पैग़म्बर! आप एलान कर दीजिए और सब को सुना दीजिए कि ऐ इन्सानो मैं तो अल्लाह की तरफ़ से तुम को सिर्फ़ ख़बरदार करने वाला और उसका पैग़ाम खोल खोल कर सुनाने वाला हूं, पस जो लोग ईमान लायें और अ़मले–सालेह़ वाली ज़िन्दगी इख़्तियार करें उन के लिए उनके पर्वरदिगार की तरफ़ से बख़्शिश है और इ़ज़्ज़त (सम्मान) की रोज़ी है। और जो लोग हमारे ह़ुक्मों के मुक़ाबले में ज़ोर आज़माई करें वे दोज़ख में जाने वाले हैं। (अल ह़ज्जः४६, ५०, ५१)

सूरए ताहा में फ़र्माया :

तर्जमा : और मेरी बड़ी बख़शिश है उन के लिये जो तौबा करें और ईमान लाये और अ़मले सालेह़ वाली ज़िन्दगी गुज़ारें और फिर ठीक–ठीक चलते रहें। (ताहा : ८२)

और सूरः अ़ंकबूत में फ़र्माया :

तर्जमा : और जो बन्दे ईमान लायें और अ़मले–सालेह़ वाली ज़िन्दगी गुज़ारें, हम उन की ख़ताएं (ग़लतियाँ) मुआ़फ़ और उनकी बुराइयां दूर कर देंगे और उनको उनके अ़मलों से बहुत ज़्यादा अच्छा बदला (फल) देंगे।

(अ़न्कबूत : ७)

और सूरए निसाअ में फ़र्माया :

तर्जमा : और जो बन्दे ईमान लायें और अ़मले–सालेह़ वाली ज़िन्दगी गुज़ारें, हम ज़रूर उन को उन बहश्ती बागों में बसायेंगे जिन के नीचे नहरें जारी (बह रही) हैं, वे उनमें हमेशा–हमेशा रहेंगे। वह वादा है अल्लाह का, बिल्कुल सच्चा। और किस की बात हो सकती है, अल्लाह से ज़ियादा सच्ची।(निसाः १२२)

और सूरए शूरा में इर्शाद फ़र्मायाः

तर्जमा : और जो बन्दे ईमान लायें और अ़मले–सालेह़ वाली ज़िन्दगी गुज़ारें वे जन्नत के बग़ीचों में रहेंगे। उन बहश्ती बागों में जिस चीज की वे ख़ाहिश करेंगे अपने पर्वरदिगार के पास वह उनको मिलेगी यह उन पर अल्लाह का बड़ा इनाम है। अल्लाह इस अच्छे अंजाम की ख़ुश ख़बरी अपने उन बन्दों को सुनाता है जो ईमान लायें और अ़मले–सालेह़ वाली ज़िन्दगी गुज़ारें। (शूरा : २२, २३)

और सूरए कह्फ़ में फ़र्माया :

तर्जमा : बेशक जो बन्दे ईमान लायें और अ़मले सालेह़ वाली ज़िन्दगी गुज़ारें उन को पर्वरदिगार की तरफ़ से उन की मेहमानी के लिए फ़िरदौस यानी जन्नत के बाग़ात हैं। वे उन में हमेशा रहेंगे। (न उनको वहाँ से कभी निकाला जायेगा, और) न वे खुद वहां से कहीं और जाना पसन्द करेंगे। (अलकह्फ़ : १०७) और सूरए ताहा में इर्शाद फ़र्मायाः

तर्जमा : और जो बन्दे अपने पर्वरदिगार के ह़ुज़ूर में मोमिन ह़ाज़िर होंगे, और अ़मले–सालेह़ वाली ज़िन्दगी उन्होंने गुज़ारी होगी, उन के लिए वहां निहायत बलन्द दर्जे हैं, कभी न फ़ना (नष्ट) होने वाले बिहिश्ती बाग़ात जिन के नीचे नहरें जारी हैं। उन में वे हमेशा–हमेशा रहेंगे। और यह सिला (बदला) मिलेगा उनको जो कुफ़्र व ना फ़र्मानी की गन्दगी से पाक होंगे। (कह्फ़ : ७५, ७६)

इन सब आयतों में ईमान और अ़मले सालेह़ वाली ज़िन्दगी गुज़ारने वालों के लिये आख़िरत में अल्लाह की

रह्मत व मग़फ़िरत और उसके फ़ज़्ल व बख़शिश और जन्नत और जन्नत की नेमतों की बशारतें हैं। और इसमें कोई शक नहीं है कि अल्लाह ने अपने जिन बन्दों को आख़िरत पर ईमान व यक़ीन नसीब फ़र्माया है उन के लिए इस से बढ़ कर कोई बशारत और नेमत नहीं हो सकती कि आख़िरत की हक़ीक़ी और कभी न ख़त्म होने वाली ज़िन्दगी में उनको अल्लाह की रिज़ा व मग़फ़िरत और जन्नत नसीब हो जाये।

मान लो अगर ईमान व अ़मले–सालेह़ के बदले में फ़ानी दुन्या में कुछ भी न मिले और सिर्फ़ आख़िरत ही में वह मिल जाये जिसका वादा इन आयतों में किया गया है तो भी यक़ीनन फ़ायदा ही फ़ायदा है। और हर मोमिन बन्दा इस सौदे पर दिल व जान से राज़ी हो कर अपने करीम रब का शुक्र गुज़ार (आभारी) ही होगा। लेकिन बात यह है कि अ़मले–सालेह़ और ईमान के सिले में आख़िरत में मग़फ़िरत और जन्नत के अ़लावा इस दुन्या में भी जो कुछ देने का वादा क़ुरआने मजीद में किया गया है। वह इस दुन्या की भी सबसे बड़ी नेमत है। उदाहरण सूरए मर्यम् में फ़र्माया :

तर्जमा : बेशक जो बन्दे ईमान लायें और अ़मले–सालेह़ वाली ज़िन्दगी गुज़ारें, बड़ी रह्मत वाला पर्वरदिगार उन को ज़रूर मह़ब्बत से नवाज़ेगा। (मरयम : ६६)

यानी इस दुन्या की ज़िन्दगी में उनको अल्लाह की मह़ब्बत व मह़बूबियत का मकाम नसीब होगा। और अल्लाह तआ़ला अपनी मख़लूक़ात के दिलों में भी उनकी मह़ब्बत पैदा फ़र्मा देगा।

सोचिए ! किसी बन्दे के लिए इस दुन्या में इससे बड़ी नेमत और क्या हो सकती है कि उस के दिल को अल्लाह की मह़ब्बत व तअ़ल्लुक़ की दौलत नसीब हो जाये, और

अल्लाह तआ़ला उस को अपनी मह़ब्बत के लिये चुन ले, और तमाम मख़लूक़ के दिलों में भी उसकी मह़ब्बत व मह़बूबियत और मक़बूलियत पैदा कर दी जाये।

सिर्फ़ माद्दी लज़्ज़तों और बुराइयों से दिलचस्पी रखने वाले जो इन्सान अपनी इन्सानियत खो कर हैवानियत (पशुता) की सतह़ (स्तर) पर आचुके हैं, उन के नज़दीक तो इस दुन्या की बड़ी नेमतें सिर्फ़ रूपयों के ढेर, ईंटों और पत्थरों से बने हुए आ़लीशान महल, क़िस्म–क़िस्म के मज़ेदार खाने, बहुमूल्य कपड़े और क़ीमती सवारियाँ ही होंगी। लेकिन जो वास्तव में इन्सान हैं उन्हें इस में कोई शक नहीं हो सकता कि अल्लाह की मह़ब्बत व मह़बूबियत और आ़म मख़लूक की नज़र में मक़बूलियत का एक पल इस पूरी उ़म्र से ज़ियादा लज़ीज़ और क़ीमती है, जिस में ऊपर लिखी गयी सारी माद्दी नेमतें तो मुयस्सर हों लेकिन अल्लाह की मह़ब्बत व मह़बूबियत और मक़बूलियत की इस नेमत से मह़रूमी हो।

अल्लाह तआ़ला इस दुन्या में अपने जिस बन्दे को अपनी मह़ब्बत व मह़बूबियत और मक़बूलियत का कोई हिस्सा नसीब फ़र्माये, बस वही जानता है कि इस को कितनी बड़ी दौलत और ज़िन्दगी का कैसा मज़ा हासिल है। इसी को क़ुर्आने मजीद में एक दूसरी जगह ह़याते तय्यिबा (पाक ज़िन्दगी) फ़र्माया गया है। सूरए नह्ल में ईर्शाद है:

तर्जमा : जो बन्दा अ़मले–सालेह़ वाली ज़िन्दगी गुज़ारे, चाहे मर्द हो या औ़रत, और वह ईमान वाला भी हो तो हम ज़रूर उस को ह़याते तय्यिबा (बहुत अच्छी मज़े वाली ज़िन्दगी) देंगे। और आख़िरत में उनके आमाले–ह़सना (अच्छे कर्मों) का उन के ह़क़ से बहुत ज़ियादा अच्छा सिला (बदला) उनको अ़ता फ़र्मायेंगे। (अन्ह़ल : ६७)

इस आयत में अ़मले–सालेह़ वाली ज़िन्दगी पर जिस ह़याते–तैयिबा का वादा किया गया है उस का संबंध इस दुन्या से है। और वह अल्लाह की मह़ब्बत व मह़बूबियत सुख व संतोष और मख़लूक़ में मक़बूलियत की वह ज़िन्दगी है, जिस का अभी ऊपर ज़िक्र किया गया है। और बेशक वह इस दुन्या की सब से बड़ी दौलत व नेमत और सबसे बड़ी लज़्ज़त है।

दुन्या में यह "ह़याते – तैयिबा" मिलना तो ईमान व अ़मले–सालेह़ वाली ज़िन्दगी का वह सिला (बदला) है जिस से हर वह आदमी नवाज़ा (सम्मानित किया) जाता है जो ईमान व अ़मले–सालेह़ की शर्त को पूरा करे, चाहे मर्द हो या औ़रत। इस के अ़लावा एक और बहुत बड़ा इनाम और सिला इस दुन्या में ईमान और अ़मले सालेह़ की ज़िन्दगी रखने वालों को यह भी दिया जाता है कि अल्लाह तआ़ला मुल्क (देश) का इन्तिज़ाम उन के ह़वाले कर देता है और उस का शासन उनके हाथ में दे दिया जाता है जिस के बाद वे अल्लाह की ज़मीन पर इन्तिज़ाम अल्लाह की मर्ज़ी के मुताबिक़ करते हैं और इस इन्तिज़ाम में वे अल्लाह के नाइब और ख़लीफ़ा होते हैं। लेकिन

यह इनाम और सिला इन्फ़ेरादी (व्यक्तिगत) नहीं बल्कि इज्तेमाई (सामूहिक) होता है। यानी हर आदमी को उसके ईमान और अ़मले–सालेह़ पर यह सिला नहीं दिया जाता। बल्कि अगर कोई क़ौम और जमाअ़त ईमान और अ़मले सालेह़ की ज़िन्दगी को इख़्तियार कर ले तो अल्लाह तआ़ला उस क़ौम और जमाअ़त को इस नेमत से नवाजते हैं।

ईमान और अ़मले सालेह़ के इसी इनाम का वादा सूरए नूर में इन शब्दों में फ़र्माया गया है :

तर्जमा : अल्लाह का वादा है उन लोगों से जो तुम में से ईमान लायें और अ़मले–सालेह़ वाली ज़िन्दगी इख़्तियार करें कि उनको ज़रूर मुंतज़िम (व्यवस्थापक) और ख़लीफ़ा बनायेगा ज़मीन का जैसा कि उन से पहले की उम्मतों के मोमिनों, सालेहों को ख़लीफ़ा बनाया था। (अन्नूर : ५५)

इस आयत से मालूम हुआ कि यह अल्लाह तआ़ला की "सुन्नते क़दीमा" (हमेशा का तरीक़ा) और उसका अज़ली (सदैव) क़ानून है कि अगर दुन्या में ईमान और अ़मले सालेह़ की ज़िन्दगी रखने वाली उम्मत मौजूद हो तो अल्लाह तआ़ला ज़मीन के इन्तिज़ामे–हुकूमत (शासन प्रबन्ध) के लिय उसी को चुन लेता है और उसी को अपनी ख़िलाफ़त व नियाबत देता है। यह आयत बताती है कि क़ुरआन के नाज़िल होने से पहले के ज़मानों में भी यही हुआ और इसके बाद के लिये भी यही होगा, यह खुदा का वादा और उस का तरीक़ा और मेनी फ़ेस्टो है। सूरए अम्बियाअ के आख़िरी रूकूअ़ में इसी ख़ुदावन्दी–दस्तूर का बयान इन शब्दों में फ़र्माया गया है:

तर्जमा : और हम लिख चुके ज़बूर में नसीह़त के बाद कि ज़मीन के वारिस होंगे और उसका इन्तिज़ाम करेंगे मेरे सालेह़ बन्दे। (अल अंबिया : १०५)

ज़रूरी तंबीह

इन आयतों से यह समझना कि दुन्या में हुकूमत सिर्फ़ सालिहीन (नेक बन्दों) को मिलती है और किसी ग्रुप के हाथ में हुकूमत का होना उस के सालेह़ होने की निशानी है, बड़ी घटिया दर्जे की ग़लत–फ़हमी है। इन आयात का मफ़ाद जैसा कि हम ने बतलाया सिर्फ़ यह है कि जब दुन्या में ईमान व अ़मले सालेह़ वाली कोई उम्मत और जमाअ़त मौजूद होगी तो अल्लाह तआ़ला अपनी ख़ास नुसरत और मदद से ज़मीन का अधिकार व प्रबन्ध उस के हवाले कर देगा। और यह उस के हक़ में अल्लाह तआ़ला का इनाम और अधिक तरक्कियों का सबब होगा।

क़ुर्आन समझ कर पढ़िये

(पृष्ठ ६ का शेष)

थे। मैंने इन्तिजार किया। जब उन्होंने नमाज पूरी की तो मैंने उनके सामने आकर सलाम किया, फिर अ़र्ज किया, ख़ुदा की क़सम मैं आपसे महब्बत करता हूं। उन्होंने कहा सच? मैंने कहा सच। बोलो सच–सच। मैंने कहा सच। तो उन्होंने मेरी चादर का कोना पकड़ कर मुझको अपनी तरफ़ खीच लिया। फिर फ़रमाया, ख़ुश हो। मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से सुना है कि अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है, मेरे लिए आपस में महब्बत करने वालों और मेरे लिए एक दूसरे के पास बैठने वालों और मेरी ही रज़ा के लिए एक दूसरे की मुलाक़ात करनेवालों और मेरी ख़ातिर एक दूसरे पर ख़र्च करनेवालों के लिए मेरी महब्बत वाजिब होगयी। (मालिक)

मुसलमान भाई को अपनी महब्बत की ख़बर दे देनी चाहिए

ह़ज़रत मिक़दाम (र०) बिन मअ़दीकर्ब से रिवायत है कि नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया , जब आदमी अपने किसी मुसलमान भाई से महब्बत करे तो उसको चाहिए कि वह उससे बता दे कि मैं तुमसे महब्बत करता हूं। (अबूदावूद – तिर्मिज़ी)

आँ ह़ज़रत सल्ल० की ह़ज़रत मआ़ज़ को महब्बत की इत्तिलाअ़ और दुआ की तालीम

ह़ज़रत मआ़ज (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने मेरा हाथ पकड़ कर फ़रमाया, ऐ मआ़ज़ (र०) मुझे तुम से महब्बत है। और फ़रमाया कि मैं तुमको वसीयत करता हूं कि अपनी हर नमाज़ के पीछे "अल्लाहुम्म अ़िन्नी अ़ला ज़िकरिक व शुकरिक व हुस्नि अ़िबादतिक कह लिया करो। (अबूदावूद–तिर्मिज़ी)

महब्बत की इत्तिलाअ़

ह़ज़रत अनस (र०) से रिवायत है कि एक साहब नबी (सल्ल०) के पास ह़ाज़िर हुए। दूसरे साहब आये और अ़र्ज़ किया मुझे इनसे महब्बत है। आपने फरमाया, इनसे बतला भी दिया? बोले नहीं। आपने फ़रमाया बतला दो। उन्होंने उन साहब से कहा मैं आपसे अल्लाह के लिए महब्बत करता हूं। वह बोले आप जिसके लिए मुझसे महब्बत करते हैं वह आपसे भी महब्बत करे। (अबू दावूद)

प्यारे नबी की प्यारी बातें

अमतुल्लाह तस्नीम

नेक और मक़बूल बन्दों से दुआ कराना

हज़रत असीर बिन अम्र या हज़रत इब्नि जाबिर से रिवायत है कि हज़रत उमर के पास जब यमन के कबाइल के लोग आते थे तो वह उन से पूछते थे कि क्या तुम में उवैस बिन आमिर है? यहां तक कि हज़रत उवैस आए, हज़रत उमर ने पूछा आप उवैस बिन आमिर है? हज़रत उवैस : हां।

हज़रत उमर : आप मुराद के घराने में क़र्न क़बीले से तअल्लुक रखते हैं?

हज़रत उवैस : हां

हज़रत उमर : आप के सफ़ेद दाग़ था अब अच्छा हो गया है, सिर्फ़ एक दिरहम के बराबर बाक़ी है?

हज़रत उवैस : हां

हज़रत उमर : आप की वालिदा ज़िन्दा है?

हज़रत उवैस : हां

हज़रत उमर : मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना है कि तुम्हारे पास उवैस बिन आमिर अहले यमन के क़बाइल वालों के साथ आएंगे, क़र्न के क़बीले से होंगे, उन के सफ़ेद दाग होगा फिर वह अच्छा हो जाएगा, सिर्फ़ एक दिरहम के बराबर बाक़ी रह जाएगा और उनकी मां होंगी जिन के वह बड़े फ़रमांबरदार होंगे, अगर वह अल्लाह पर क़सम खाएंगे तो अल्लाह उन की क़सम पूरी करेगा तुम अगर कर सको तो उन से अपने लिये बख़शिश की दुआ कराना, तो आप अल्लाह से मेरे लिये बख़शिश चाहें। उन्होंने उनके लिए बख़शिश की दुआ की फिर हज़रत उमर ने पूछा अब आप कहां का इरादा रखते हैं? कहा कूफ़े का कहा मैं आप के लिए वहां के हाकिम को लिख दूं? फ़रमाया मुझे ग़रीबों में रहना ज़ियादा पसन्द है।

दूसरे साल कूफ़ा के शुरफ़ा में से एक आदमी हज्ज को आया हज़रत उमर (रज़ि०) से मुलाक़ात हुई, हज़रत उमर ने हज़रत उवैस के बारे में दर्याफ़्त किया, उन्होंने कहा मैं ने उनको ऐसी हालत में छोड़ा है कि घर बोसीदा है और सामान थोड़ा है। हज़रत उमर ने कहा मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम से सुना है कि तुम्हारे पास उवैस बिन आमिर अहले यमन के क़बाइल वालों के साथ आएंगे, क़र्न कबीले से होंगे उनके सफ़ेद दाग होंगे, उस से वह अच्छे होंगे, सिर्फ़ एक दिरहम के बराबर बाक़ी रह जाएगा उनकी मां, होंगी, जिन के वह फ़रमांबरदार होंगे वह अल्लाह पर क़सम खाएंगे तो अल्लाह उनकी क़सम पूरी कर देगा, अगर तुम कर सको तो अपने लिये बख़शिश की दुआ कराना, सो तुम भी उनसे दुआ कराओ फिर वह उवैस के पास आए और अर्ज किया मेरे लिये बख़शिश की दुआ कीजिये। हज़रत उवैस ने फ़रमाया: तुम अभी एक अच्छे सफ़र से आ रहे हो। तुम ख़ुद मेरे लिये बख़्शिश की दुआ करो। फिर फ़रमाया, क्या तुम हज़रत उमर (रज़ि०) से मिल कर आ रहे हो? बोले, हां। पस उनके लिये भी बख़्शिश की दुआ की। फिर उनको मालूम हुआ कि लोग हमको कुछ समझने लगे हैं, तो वह सर उठाये हुए चल दिये। (मुस्लिम)

हज़रत उमर (र०) से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना है कि बेहतरीन ताबिअ़ीन में से एक साहब हैं। उनका नाम उवैस (र०) है। उनकी मां हैं। और उनके सफ़ैद दाग है। जब उनसे मिलो तो अपने लिए बख़्शिश की दुआ कराओ।

मुसलमान से दुआ की दरख़्वास्त

हज़रत उमर (र०) से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से उमरः की इजाज़त चाही। आपने इजाज़त दी और फ़रमाया, हमारे भाई ! अपनी दुआओं में हमको न भूलना। हज़रत उमर (र०) कहते हैं कि आपने यह बात ऐसी कही कि अगर मुझे पूरी दुनिया इसके एवज़ में मिलती तो मुझे इतनी खुशी न होती।

एक रिवायत में है कि मेरे भाई, अपनी दुआओं में हमको भी शरीक करना। (अबूदावूद : तिर्मिज़ी)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का क़ुबा में तशरीफ ले जाना

हज़रत इब्नि उमर (र०) से रिवायत है कि नबी (सल्ल०) क़ुबा में सवार और पैदल तशरीफ़ ले जाते और उसमें दो रकअत नमाज़ अदा फ़रमाते।

एक रिवायत में है कि नबी (सल्ल०) हर सनीचर को क़ुबा में सवार

और पैदल तशरीफ़ ले जाते, इब्नि उ़मर (र०) भी ऐसा ही करते थे।

किसी से महब्बत करे तो लिल्लाही महब्बत करे। कुफ़्र की तरफ़ वापस हो जाना, जिससे अल्लाह ने उसको बचाया है, (उसको) इतना बुरा समझे जितना आग में डाले जाने को बुरा समझता है। (बुख़ारी–मस्लिम)

सात आदमी जो क़ियामत में अल्लाह की रहमत के साये में होंगे

ह़ज़रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया, सात आदमी हैं जिन पर अल्लाह तआ़ला अपना साया करेगा जिस दिन बजुज़ ख़ुदा के अ़र्श के साये के कोई और साया न होगा। और वह सात यह है –

१. मुन्सिफ़ हाकिम । २. वह जवान जिसने अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल ही की अ़िबादत में नश्व व नुमा पायी। ३. वह जिसका दिल मस्जिद में अटका रहे। ४. वह दो आदमी, जो अल्लाह के लिए महब्बत करें, मिलें तो उसी के लिए और अलग हों तो उसी के लिए। ५. वह जिसको कोई साहबे जमाल औरत बुलाये तो कहे मैं अल्लाह से डरता हूँ। ६. जो इस तरह छुपा कर सदक़ः करे कि बांया हाथ भी न जाने कि सीधा हाथ क्या खर्च करता है। ७. जो तनहाई में अल्लाह को याद करे और उसके आंसू बहने लगें। (मुस्लिम बुख़ारी)

लिल्लाही मुहब्बत रखने वालों पर अल्लाह का साया

ह़ज़रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया, अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन फरमायेगा, मेरी अ़ज़मत की वजह से जो आपस में महब्बत करते थे वह कहाँ हैं? आज मैं उन पर अपना साया करूंगा और आज मेरे साये के(यअ़नी अ़र्श का साया) सिवा कोई साया नहीं। (मुस्लिम)

बाहमी महब्बत और उसकी तरकीब

ह़ज़रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया, क़सम है उसकी जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है तुम जन्नत में न जा सकोगे जब तक कि ईमान न लाओगे। और जब तक एक दूसरे से महब्बत न करोगे, मोमिन न होगे। मैं तुमको ऐसी बात न बतला दूं कि तुम अ़मल करो तो आपस में महब्बत हो जाये। अपने दर्मियान सलाम फैलाओ।

मुसलमान से ख़ुदा के लिए महब्बत की फ़ज़ीलत

ह़ज़रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया, एक आदमी अपने किसी मुसलमान भाई की मुलाक़ात के लिए किसी दूसरी बस्ती जा रहा था। अल्लाह ने उसके रास्ते पर एक फ़िरिश्ता मुक़र्रर कर दिया। जब वह फ़िरिश्ते के क़रीब हुआ तो फ़िरिश्ता बोला कहाँ का इरादः रखते हो? उसने जवाब दिया कि फ़ुलां भाई से फ़ुलां जगह मिलने के लिए जाता हूं। फ़िरिश्ते ने कहा, क्या तुम पर उसका कोई एहसान है, जिसको तुम निभा रहे हो? उसने कहा कि उससे मेरी कोई ग़रज़ नहीं, हां मुझे उससे लिल्लाहि महब्बत है। फ़िरिश्ते ने कहा कि मैं अल्लाह का क़ासिद हूं। अल्लाह ने तुमसे महब्बत की जैसी तुमने उसकी वजह से उससे महब्बत की। (मुस्लिम)

अन्सार से महब्बत ईमान की अ़लामत है।

ह़ज़रत बरा (र०) बिन आ़ज़िब से रिवायत है कि नबी (सल्ल०) ने अन्सार के बारे में फ़रमाया कि उनसे महब्बत करनेवाला मोमिन होगा और बुग़्ज़ रखनेवाला मुनाफ़िक़ होगा। जो उनसे महब्बत करेगा अल्लाह उससे महब्बत करेगा। और जो उनसे बुग़्ज़ रखेगा अल्लाह उनसे बुग़्ज़ रखेगा। (मुस्लिम बुख़ारी)

अल्लाह के लिए महब्बत रखनेवालों का क़ियामत में एज़ाज़

ह़ज़रत मआ़ज़ (र०) से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से सुना है कि अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है जो मेरी अ़ज़मत की वजह से आपस में महब्बत रखें उनके लिए नूर के मिम्बर होंगे। उन पर अम्बिया और शुहदा रश्क करेंगे। (तिर्मिज़ी)

अल्लाह के लिए महब्बत करने वाला अल्लाह का महबूब है।

ह़ज़रत अबू इदरीस (र०) अलखौलानी से रिवायत है कि दमिश्क़ की मस्जिद में मेरा गुज़र हुआ। मैंने एक चमकदार दांतों वाले नौजवान को देखा कि उनके गिर्द लोग बैठे हुए हैं। जब किसी बात पर इख़्तिलाफ होता तो उनकी तरफ़ रूजूअ़ होते। और उन्हीं की राय पर फ़ैसला करते। मैंने उनके मुतअ़ल्लिक़ दर्याफ़्त किया, मालूम हुआ कि यह मआ़ज़ (र०) बिन जबल हैं। दूसरे दिन मैं दोपहर को बहुत सबेरे आया और मैंने उनको अपने पहले से आया हुआ पाया। वह नमाज़ पढ़ रहे

(शेष पृष्ठ ७ पर)

(पृष्ठ ४ का शेष)

बच रहा जिसे अबू हुरैरा (रज़ि०) और ख़ुद हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने पिया। सहा़बा ने अपने कानों सुना कि खजूर का तना बच्चों की भांति रो रहा है। इस जैसे हज़ारों मुअ़जिज़ात को अगर तस्लीमा झुटला सकती है और पैग़म्बरों की पैग़म्बरी को नकार सकती है, और उनकी बताई सूचनाओं और आदेशों को झुठला देती है। और इसी हा़ल में उस को मौत आती है तो हम उसको उस के अन्तिम ठिकाना जहन्नम की सूचना देते हैं। उस को अधिकार है कि वह इस सूचना को भी झुठला दे परन्तु वह इस सत्य (जहन्नम की आग) को पा कर रहेगी। कोई भारती कहे कि अमरीका नहीं है, लन्दन नहीं है तो उस के इस झुठलाने से अमरीका और लन्दन का अस्तित्व समाप्त न हो जाएगा। इसी प्रकार सच्चे पैग़म्बरों की बताई हुई जन्नत, जहन्नम, कि़यामत आदि किसी के झुठलाने से समाप्त न हो जाएंगी।

हम लोग तो पैग़म्बरों पर ईमान रखते हैं और अन्तिम पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के लाये हुए क़ुर्आन शरीफ़ की एक आयत तस्लीमा और उस की जैसी सोच रखने वालों के सामने प्रस्तुत करते हैं।

अनुवाद : हर जान को मौत का मज़ा चखना है और तुम को (जो कुछ तुम ने इस दुन्या में अच्छा बुरा किया है उसका) पूरा बदला कि़यामत ही के रोज़ मिलेगा तो जो व्यक्ति जहन्नम से बचा लिया गया और जन्नत में दाख़िल किया गया पस वह पूर्णतया सफल हुआ और सांसारिक जीवन तो कुछ भी नहीं केवल धोखे का सौदा है। (आलि इम्रान १८५)

और क़ुर्आन ही की एक और घोषणा सुनाना चाहूंगा, अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी सल्लललाहु अ़लैहि वसल्लम को सम्बोधित करके फ़रमायाः अनुवाद :

"और आप कह दीजिए कि यह (दीने) हक़ तुम्हारे रब की ओर से आया है सो जिस का जी चाहे ईमान ले आए और जिस का जी चाहे काफ़िर रहे। निःसन्देह हम ने (न मानने वाले) अत्याचारियों के लिए (जहन्नम की) आग तैयार कर रखी है, उस आग की क़नाते उन को घेरे होंगी, और अगर वह फ़रयाद करेंगे तो ऐसे पानी से उनकी फ़र्याद रसी की जाएगी जो तेल की तलछट की भांति होगा मुखों को भून डालेगा क्या ही बुरा पानी होगा और दोज़ख़ क्या ही बुरी जगह होगी। निःसन्देह जो लोग ईमान लाये और भले काम किये तो हम ऐसों का बदला, जो भले काम करें, अकारथ नहीं करेंगे, ऐसे लोगों के लिए सदैव रहने की बाटिकाएं हैं, जिन के नीचे नहरें बहती होंगी, वहां सोने के कंगन पहनाए जाएंगे और हरे हरे रंग के कपड़े बारीक और स्थूल रेशम के पहनेंगे और वहा मसहरियों पर तक्या लगाए बैठे होंगे, कितना अच्छा बदला है और (जन्नत) क्या ही अच्छी जगह है। (अल्कहफ़ : २९, ३०, ३१)

लेखकगण से अनुरोध है कि वह सुन्दर तथा स्पष्ट लिखें।

— सम्पादक

चल बसे

यूसुफ़ो शीरीं व अ़ज़्रा लैला वो बिल्क़ीस से
कितने आए सैर को देखो तमाशे चल बसे
वामिक़ो क़ैसो ज़ुलैख़ा और सुलैमा कोह कन
आशिक़े कामिल थे ये लाखों में अच्छे चल बसे
थे जो लुक़्मा और अरस्तू और अफ़लातूं हकीम
कुछ न हिकमत ज़िन्दगी की अपनी सीखे चल बसे
साथ जिन के था यहां पर लशकरो फौजो सिपाह
बेकसाना क़ब्र के अन्दर अकेले चल बसे
एक साअ़त भी न ठहरे जिन का वअ़दा आ गया
जी के जी ही में रहे अरमान सारे चल बसे
देखते ही देखते अक्सर अज़ीज़ो आशना
तन्दुरूस्तो ख़ूबसूरत चलते फिरते चल बसे
थी सियासत में जो यकता चल बसी वो बेनज़ीर
उनसे पहले बाप उसके प्यारे भुट्टू चल बसे
चल बसे आख़िर ज़िया भी और हां सद्दाम भी
कैसे कैसे सोरमा आख़िर यहां से चल बसे
चल बसेंगे बुश भी इक दिन और मुशर्रफ़ भी जनाब
जैसे उनके पेशरौ दुन्या में आए चल बसे
बैबी तस्लीमा भी जाएगी यहां से बिज़्ज़रूर
कितने आए हैं यहां पर और यहां से चल बसे
हाए कोई भी न पल्टा और न आई कुछ खबर
चुपके चुपके शहरे ख़ामोशां में ऐसे चल बसे
बू अ़ली से भी हज़ारों आए दुन्या में तबीब
मौत की दारू कहीं से पर न लाये चल बसे
कैसे कैसे बादशाहो कैसे कैसे पहलवां
रह गया कोई न यां पर सब यहां से चल बसे
ना रहा हा़तिम सा दानी और ना क़ारूं बख़ील
छोड़कर तो मालो दौलत सब यहां से चल बसे
चल बसेंगे एक दिन हम भी इसी सूरत से यार
जिस तरह ज़ेरीं ज़मीं ये लोग अगले चल बसे
जैसे चल बसना बयां औरों का हम करते हैं आज
लोग हमको कल कहेंगे आज वो भी चल बसे
ख़ान–ए–अस्ली में जाने की ज़रा तू फ़िक्र कर
खोल आंखें देख इल्मी यार कैसे चल बसे।
इस्हाक़ इल्मी की रूह से मअ़ज़िरत के साथ

इन्सान की तलाश

मौलाना अबुल हसन अली नदवी (अली मियां)

सात सौ वर्ष पहले तुर्की की सीमाओं में एक बड़े मशहूर शायर और हक़ीम गुज़रे हैं जिन का नाम मौलाना रूम है। आपने उनकी मसनवी सुनी होगी। उन्होंने एक रोचक घटना लिखी है। वह मैं आप को सुनाता हूं। वह कहते हैं कि, "कल रात की घटना है एक बूढ़ा आदमी चिराग लिये शहर में घूम रहा था और अन्धेरी रात में कुछ तलाश कर रहा था। मैंने कहा, "हजरत! आप क्या तलाश कर रहे हैं?" कहने लगे, मुझे इन्सान की तलाश है। मैं चौपायों और दरिन्दों के साथ रहते आजिज आ गया हूं। मेरा धैर्य टूट चुका है। अब मुझे एक ऐसे इन्सान की तलाश है जो खुदा का शेर और मर्द कामिल हो।"

मैंने कहा, "बुजुर्गवार! अब आप का अन्तिम समय है, इन्सान को आप कहां तक ढूंढेगे? इस विलप्त पक्षी (अनका) का मिलना आसान नहीं। मैंने भी बहुत ढूंढा है, लेकिन नहीं पाया उन बुजुर्ग ने उत्तर दिया, "मेरी आदत रही है कि जब किसी चीज को सुनता हूं कि वह नहीं मिलती तो उस को और जियादा तलाश करता हूं। तुम ने मुझे उस बात पर आमादा कर दिया कि मैं उस गुमशुदा इन्सान को और जियादा ढूंढूं और उसकी तलाश से कभी बाज न आऊँ।

सज्जनो! यह एक कवि का संवाद है। आप को शायद आश्चर्य हो कि क्या कोई ऐसा भी समय था कि इन्सान बिल्कुल नायाब हो गया था? मौलाना रूम ने हमारे सामने एक सवाल खड़ा कर दिया कि क्या हर इन्सान, इन्सान नहीं है, और क्या इन्सानों की बड़ी–बड़ी आबादियों में भी इन्सान नायाब है? हम तो समझते थे कि इन्सान की एक ही किस्म है, इससे मालूम हुआ कि इन्सानों की दो किस्में हैं, एक वह जो देखने में इन्सान है लेकिन हकीकत में इन्सान नही है और दुनिया में हमेशा इन्हीं लोगों की कसरत रही है, दूसरी वह जो हकीकत में इन्सान हैं और वह कमी ऐसे गुम हो जाते हैं कि उन को चिराग लेकर ढूंढने की जरूरत पड़ती है।

मौलाना रूम को सात सौ वर्ष हो चुके। उन के बाद से दुनिया में बड़ी तरक्कियां हुईं। हर शहर में इन्सानों की तादाद बढ़ती रही है और आज की इन्सानी आबादी पहले से बहुत जियादा हो गई है और इस की तरक्कियां भी बहुत विशाल हैं। आज इन्सान ने बिजली, भाप, हवा और पानी पर कब्जा जमा लिया है। हवाई जहाज, रेडियो, टीवी और ऐटम बम से इन्सानों की तरक्की का अन्दाजा किया जा सकता है। लेकिन दोस्तो ! इन्सानों की तरक्की का अन्दाजा जनगणना के आंकड़े और बड़े–बड़े सभ्य तथा विकसित देशों की तस्वीर से करना सही नहीं है। इन्सानियत की तरक्की इन भौतिक विकास का नाम नहीं है और मात्र नस्ले इन्सान की तरक्की को इन्सानियत की तरक्की नहीं कहा जा सकता। इन्सानियत की तरक्की का अन्दाजा इन्सानों के अखलाक व किरदार से होता है और अखलाक व किरदार का अन्दाजा आपस में मिलने जुलने, रेल के डिब्बों, पार्कों, होटलों, दफतरों और बाजरों में हो सकता है। उर्दू के मशहूर शायर अकबर ने बिल्कुल सही कहा है–

नक्शों को तुम न जांचो, लोगों से मिल के देखो।
क्या चीज जी रही है, क्या चीज मर रही है।

इन्सानियत से बगावत :

इन्सानियत का सही अन्दाजा परीक्षा की घड़ी में और ऐसी स्थिति में होता है जब हर प्रकार का सोर्स और अवसर प्राप्त हो कि चोरी, गुनाह और हक तल्फी की जा सके मगर इन्सान के अन्दर की आवाज उसका हाथ पक्ड़ ले। जहां इन्सानियत का गला घोटा जा रहा हो वहां इन्सानियत अपना जौहर दिखाये। इन्सानियत का अन्दाजा हमारे वर्तमान जीवन के सांचों तथा भौतिक विकास के पैमानों से नहीं हो सकता।

मानवता वास्तव में एक बड़ा मर्तबा है लेकिन मानवता के खिलाफ इन्सान हमेशा खुद बगावत करता रहा है। उस को इन्सानियत के स्तर पर कायम रहना हमेशा मुश्किल और दूभर मालूम हुआ है। वह कभी नीचे से कतरा कर निकल गया और कभी उसने अपने आपको इन्सानियत से बरतर समझा, अर्थात उसने कभी इन्सानियत से बालातर कहलवाने और खुदा और देवता बनने की कोशिश की और सच्ची बात

यह है कि लोगों ने खुदा और देवता बनने की कोशिश कम की, लोगों ने उन्हें खुदा और देवता बनाने की कोशिश जियादा की। हम इतिहास पढ़ें तो मालूम होगा कि लोग इन्सानियत से उच्चतर किसी मर्तबे की तलाश में रहे और इन्सानों को इन्सानों का सही मकाम समझने के बजाय उस से ऊंचा होने की फिक्र करते रहे। इस के विपरीत दूसरा प्रयास यह रहा कि इन्सान को इन्सानियत से गिरा दिया जाये वह पाशविक (हैवानी) और मनमानी जिन्दगी का आदी बने और दुनिया में मनमानी जिन्दगी का रिवाज है।

इन दोनों कोशिशों के नतीजे हमेशा खराब हुए हैं। जब इन्सान को इन्सानियत से उठाकर खुदा या देवता बना दिया गया तो दुनिया में अव्यवस्था फैली और बड़ा फसाद बर्पा हुआ दुनिया में लोगों ने जब खुदाई का दावा किया या लोगों ने उनको यह दर्जा दिया तो दुनिया में बिगाड़ ही बिगाड़ बढ़ता गया और इन्सानी जिन्दगी में नई गांठें पड़ीं। जब एक मामूली सी घड़ी किसी अनाड़ी के हाथ पड़ जाती है और वह उसकी मशीन में दखल देता है तो वह बिगड़ जाती है। तो यह संसार की व्यवस्था बनावटी खुदाओं से कैसे चल सकती है? इस दुनिया की इतनी समस्यायें, इतने मरहले और इसमें इतनी पेचीदगियां हैं कि अगर एक इन्सान दुनिया को चलाना चाहे तो निश्चय ही इसका नतीजा बिगाड़ होगा। मेरी मंशा यह नहीं कि इन्सान इन्सानियत के दायरे में तरक्की न करे, बल्कि यह कि इन्सान खुदाई की कोशिश न करे उस ने इन्सानियत ही में कौन सी काम्याबी हासिल कर ली है कि अब वह खुदाई की हवस करे।

धर्मों का इतिहास बताता है कि जब इस प्रकार का प्रयास किया गया तो ऐसी पेचीदगियां सामने आईं जिन का कोई इलाज न था। यह कोशिश दुनिया के कोने में हमेशा थोड़े–थोड़ गैप के बाद होती रही। ऐसे लोगों ने प्रकृति से जोर आजमाई की है और प्रकृति से लड़कर इन्सान ने हमेशा हार ही खाई है।

दूसरी तरफ ऐसे इन्सान गुजरे हैं जिन्होंने अपने आप को चौपाया जाना। उनको इन्सान की हैसियत से अपनी तरक्की का कोई एहसास नहीं हुआ। अपनी इन्सानियत, अपनी रूहानियत और खुदशनासी की तरक्की देने का उनको कभी खयाल तक नहीं आया। दुनिया में अधिकता इन्हीं इन्सानों की रही है।

इस युग की विशेषता यह है कि इस में यह दोनों बगावतें, दोनों ऐब और यह दोनों फसाद जमा हो गये हैं। इस समय लगभग सारी दुनिया इन्हीं दो गिराहों में बंटी हुई है। चन्द आदमी हैं जो खुदाई के दावेदार हैं और जिन को देवता बनने का शौक है। बाकी अक्सर वह इन्सान हैं जो चौपायों और दरिन्दों की सी जिन्दगी गुजार रहे हैं। इस जमाने का बिगाड़ हर जमाने के बिगाड़ से बढ़ गया है और जिन्दगी अजाबे जान बन गई है।

इस समय जनगणना के खानों में कोई ऐसा खाना नहीं कि जो लोग अपनी इन्सानियत की कद्र करते और उस को सही ढंग से इस्तेमाल करते हैं उसमें उन का इन्द्राज किया जाये। मगर आप स्वयं इन्साफ कीजिए कि आप के चारों तरफ जिन्दगी का जो तूफान उमड़ा हुआ है उस में कितने इन्सान हैं जिन को इन्सानियत का एहसास है, जो यह समझते हैं कि मुझे सिर्फ एक मेदा और पेट ही नहीं दिया गया है बल्कि अल्लाह ने इन्सान को एक रूह (आत्मा) भी दी है। दिल भी दिया है और दिमाग भी अता किया है, जिन को हम हमेशा नजर अन्दाज करते और इनके सही इस्तेमाल से बचते हैं। हम जिन्सी ख्वाहिशात तथा भौतिक आवश्यकताओं के रेले में ऐसे बहे चले जा रहे हैं, जैसे एक गाड़ी अपने कन्ट्रोल से बाहर लुढक रही हो जिस पर किसी का कोई काबू न हो। मैं और समझा कर कहूं यूं समझिये कि इन्सानियत एक साइकिल है और वह साइकिल एक ढलवान पर से फिसल रही है, इसमें न कोई घंटी है न ब्रेक और न इसके हैंडिल पर किसी का हाथ है। भूगोल की पुरानी शिक्षा यह बताती थी कि जमीन चपटी है। भूगोल की नई खोज से यह साबित होता है कि जमीन गोल है, लेकिन मुझे भूगोल के शिक्षक और विद्यार्थी क्षमा करें, मैं तो यह देख रहा हूं कि लोग अखलाकी बलन्दी से हैवानी पस्ती की तरफ लुढ़कते चले जा रहे हैं और दिन प्रतिदिन उनकी रफतार तेज होती जा रही है। हमारी धरती अवश्य सूर्य की परिक्रमा कर रही है। मगर इस धरती पर बसने वाला इन्सान भौतिकता और पेट की परिक्रमा कर रहा है धरती की गति का तमाम दुनिया के अखलाक और हालात पर असर पड़ रहा है। सौर्य परिवार में असल केन्द्र सूरज हो या जमीन लेकिन व्यवहारिक जीवन में इन्सानों का असली केन्द्र मेदा या पेट और हैवानी तत्व बना हुआ है और सारी इन्सानियत इस

का चक्कर लगा रही है। आज दुनिया में सबसे विशाल क्षेत्र मेदे का है। यूं कहने को तो वह मानव शरीर का बहुत छोटा सा अंग है लेकिन इस की लम्बाई चौड़ाई और गहराई व समाव इतना बड़ा हो गया है कि सारी दुनिया इस में समायी चली जा रही है। यह मेदा इतनी बड़ी खन्दक है कि पहाड़ों से भी नहीं भरता। सब से बड़ा मजहब, सब से बड़ा दर्शनशास्त्र मेदे की इबादत है। शिक्षण संस्थाओं में इसी का गुलाम बनाना सिखाया जा रहा है।

आज कामयाब इन्सान बनने का फन सिखाया जाता है दूसरे शब्दों में दौलतमन्द बनने का। यह दौलतमन्द बनने की रेस है। दौलतमन्द बनने को हिर्स इतनी बढ़ गयी है कि इन्सान को खुद अपने तन मन का होश नहीं रहा। अध्ययन ज्ञान और ललित कलाओं का मकसद भी यही हो गया है कि इन्सान कहां से जियादा से जियादा रूपया हासिल कर सकता है? आज सब से बड़ा इल्म और हुनर यह है कि लोगों की जेबों से किसी तरह रूपया निकाल कर अपनी जेब भरी जाये? इतना ही नहीं बल्कि थोड़े से थोड़े समय में जियादा से जियादा दौलतमन्द बनने की कोशिश की जाती है। दौलतमन्द बनने की कोशिश सभ्यता और सोसाइटी के लिए इतनी हानिकारक नहीं, जितनी दौलतमन्द बनने की हवस है। यही हवस रिश्वत, खियानत, गीबत, चोरबाजारी, जखीरा अन्दोजा और दौलत हासिल करने के दूसरे अपराधिक स्रोतों को अपनाने पर आमादा करती है। इस लिये कि इन अपराधिक तरीकों के बिना जल्द दौलतमन्द बनना मुमकिन नहीं। इस विचार धारा के कारण सारी दुनिया में एक मुसीबत बर्पा है। दफतरों में तूफान है। मँडियों में कियामत का मंजर है। आज इंसान जोंक बन गये हैं और इन्सान का खून चूसना चाहते हैं। आज कोई काम बेगरज़ और बेमतलब नहीं रहा। आज कोई व्यक्ति बिना अपने फायदे और मतलब के किसी के काम नहीं आता। आज हर चीज अपनी मजदूरी और फीस मांगती है। कभी कभी तो यह खयाल होने लगता है कि अगर पेड़ की छाया में दम लेंगे तो शायद पेड़ भी अपनी फीस और मजदूरी मांगने लगेंगे। सब का हाल यही हो रहा है कि दौलत और मनमानी का नशा सवार है। आज दौलत कमाना ही जिन्दगी का मकसद बन गया है और सारी दुनिया इस के पीछे दीवानी है। आज जिस इन्सान को खुदा का तालिब होना चाहिए था, उसकी मार्फत व महब्बत से अपना वीरान दिल आबाद, अपना नीरस जीवन बामकसद और पुरकैफ और सरस बनाना चाहिये था और उसके रास्ते में सब कुछ मिटा कर हकीकी जिन्दगी हासिल करनी चाहिए थी, अफसोस कि वह इन्सान हकीकी महब्बत और सही मार्फत से महरूम है। इस लिए जिन्दगी की असल लज्जत से महरूम है। हकीकी इन्सानियत से महरूम है और अफसोस है कि लाखों करोड़ों इन्सानों को इस महरूमी का एहसास भी नहीं। आज जिस इन्सान को खुदा का परस्तार होना चाहिए था वह दौलत का परस्तार और नफ्स का गुलाम बना हुआ है और उसको फितरत के खिलाफ इस गुलामी का एहसास भी नहीं।

हर जगह मनमानी का कब्जः है

राजनीतिक विरोध और शासन व्यवस्था तो फुर्सत की बातें हैं। हम तो यह जानते हैं कि असल हुकूमत इच्छाओं की है। हुकूमत पर कब्जः चाहे किसी कौम या पार्टी का हो और चाहे कोई मन्त्री या अध्यक्ष हो मगर दरअसल हर जगह मनमानी का कब्जः है। पहले ब्रिटेन के बारे में कहते थे की उस की सल्तनत में सूर्य नहीं डूबता लेकिन आज जिस हुकूमत और सल्तनत में सूरज नहीं डूबता वह मन की कामना और उसकी चाहत है।

समय की पुकार यह है कि मनोकामना पूरी की जाये, दिल की आग बुझाई जाये चाहे इन्सानों के खून की नहरें बहती हों। चाहे नेशन्स उस रास्ते पर मिट जायें पामाल हो जायें, चाहे मुल्क के मुल्क वीरान व तबाह हो जायें। लेकिन इस में आश्चर्य की बात नहीं। सैकड़ों साल से जो शिक्षा इन्सान को दी जा रही है चाहे वह स्कूलों के जरिये हो या सिनेमाओं के जरिये या साहित्य व शायरी के जरिये, जो हर मुल्क और हर कौम में रायज है, इसका निचोड़ यही है कि तुम मन के राजा और नफस के गुलाम हो।

दोस्तो ! इस जमाने के सारे इन्सानों की आबादियां इस लेहाज से एक तल पर हैं और इसके खिलाफ कोई आवाज सुनाई नहीं देती। मुल्कों के खिलाफ बगावत करने वाले बहुत हैं। छोटी छोटी समस्याओं के लिये भूख हड़ताल करने वाले बहुत हैं, स्थानीय समस्याओं के लिये जान की बाजी लगा देने वाले बहुत हैं। लेकिन इन्सानियत के लिये मरने वाले कितने हैं? कितने ऐसे हैं जिनको हकीकी इन्सानियत की फिक्र हैं? आज दुनिया

में अगर किसी को इन्सानियत की गिरावट का एहसास भी है तो उस में यह साहस नहीं है कि इन्सानियत के लिये आवाज उठाये। सारे संसार में एक आदमी भी ऐसा नहीं जो मानवता के लिए अपना बलिदान दे।

पैगम्बरों की बेगरज़ी व बेनियाज़ी

वास्तव में पैगम्बरों ही का साहस था कि उन्होंने सारी दुनिया को चैलेंज कर के इन्सानियत के खिलाफ जो बगावत जारी थी उस से रोका। उनके सामने दुनिया की लज्जतों और दौलतें लाई गई मगर उन्होंने सब को ठुकरा दिया और इन्सानियत के बचाव में अपनी जान को खतरे में डाला। अल्लाह की पसन्दीदः और चुनिन्दा बन्दों की यह जमाअत जिसको पैगम्बरों की जमाअत कहा ज़ाता है, दुनिया को कुछ देने के लिए आई थी, दुनिया से कुछ लेने के लिए नहीं आयी थी, उनकी कोई जाती गरज़ (स्वार्थ) न थी, उन्होंने दूसरों के जीने की खातिर अपने को मिटाया। उन्होंने दूसरों की आबादी की खातिर अपने घरों को उजाड़ा। उन्होंने दूसरों की खुशहाली के लिए अपने सम्बन्धियों को भूखा रखा। उन्होंने गैरों को नफा पहुंचाया और अपनों को लाभ से वंचित रखा। क्या दुनिया के लीडरों में ऐसी बेगरजी और निष्ठा की मिसालें मिल सकती हैं? पैगम्बरों ने अपने अपने जमाने में अपनी अपनी कौमों में खलिश पैदा की और उनको महसूस कराया कि मौजूदा जिन्दगी खतरे की है। जो लोग इतमीनान के आदी थे और मीठी नीन्द सो रहे थे, और मीठी नीन्द सोना ही चाहते थे उन्होंने पैगम्बरों की इस दावत (बुलावा) और चेतावनी के विरूद्ध कठोर प्रदर्शन किया और बड़ी शिकायत की कि उन्होंने हमारा सुख चैन खराब कर दिया और हमारी नीन्द खराब की। लेकिन जो घर में आग लगी हुई देखता है वह सोने वालों की परवाह नहीं करता। और उसको किसी की नीन्द पर तरस नहीं आता। पैगम्बर इन्सान के हकीकी हमदर्द थे। वह दुनिया को सोते से जगाने को अपना फर्ज समझते थे। दुनिया के गुमराह रहनुमाओं और नफ्स के बन्दों ने दुनिया को मारफिया के इन्जेकशन दिये और उस को थपक थपक कर सुलाया। मगर पैगम्बरों ने इन्सानों को झंझोड़ा और गफलत से जगाया। यह छोटी छोटी जंगे और लड़इयां दरअसल इसीलिये हुईं कि दुनिया से गफलत दूर हो और दुनिया पर जो अन्धेरा छाया है वह समाप्त हो। इन्सान हकीकी इन्सानियत को समझे।

पैगम्बरे इस्लाम सल्ल० का व्यक्तित्व

हमारे सामने सब से जियादा मुमताज (विशिष्ट) और सब से जियादा स्पष्ट और रोशन सब से जियादा बुलन्द मर्तबः हजरत मुहम्मद सल्ल० का व्यक्तित्व है। अगर हम इस सच्चाई का इजहार न करें तो यह एक खियानत होगी, हमारा जमीर (अन्तःकरण) इस बात की इजाजत नहीं देता है कि उनके उन एहसानात को न बतलायें जो उन्होंने इन्सानियत पर किया।

जब दुनिया में एक इन्सान यह नहीं कह सकता था कि अल्लाह ही इस दुनिया को अकेला चला रहा है और वही बन्दगी और इताअत (आज्ञापालन) का मुस्तहिक है तब आप सल्ल० ने इस हक का एलान किया और इस आवाज को बुलन्द किया आज दुनिया के हर हिस्से से यह आवाज बुलन्द हो रही है और जब कोई आवाज सुनने में नहीं आती तो यही आवाज कानों में आती है। आज यह आवाज तमाम दुनिया में फैल गई है। आप सल्ल० की तालीम और आप ने दुनिया को जो कुछ दिया वह इन्सानियत का मुश्तरकः सरमाया है जिस पर किसी कौम की इजारादारी कायम नहीं हो सकती। जिस तरह हवा, पानी और रौशनी पर किसी को इजारादारी का हक नहीं और कोई इस पर अपनी मुहर और अपनी छाप नहीं लगा सकता। इसी तरह हजरत मुहम्मद सल्ल० की तालीमात पर सारी दुनिया का हक है और हर व्यक्ति का इसमें हिस्सा है जो इन से फायदा उठाना चाहे। यह दुनिया की तंगनजरी है कि वह इन हुकूक को किसी कौम या मुल्क की जागीर समझे। दोस्तो। मुहम्मद सल्ल० मुहसिने इन्सानियत थे और सारी इन्सानियत आप सल्ल० की ममनून (अनुग्रहीत) है। दुनिया में जो कुछ इन्साफ इस समय मौजूद है और जिन हकीकतों को इस समय तस्लीम किया जा रहा है वह सब आप सल्ल० का फैज (वरदान) है। *बहार अब जो दुनिया में आई हुई है, यह सब पौद उन्हीं की लगाई हुई है।*

मित्रो! हम इस मौजूदा जीवन व्यवस्था को चैलेंज करते हैं हम लोगों से डंके की चोट पर कहते हैं कि तुम दुनिया को आज जितना बुलन्द समझते हो वह इतनी ही पस्त है। हम साफ कहते हैं कि दुनिया सोपानवार आत्महत्या की तरफ जा रही है। यह रास्ता इन्सानियत की तबाही का रास्ता

(शेष पृष्ठ २४ पर)

मजलिसे ख़िलाफ़त में

मौलाना आज़ाद का अध्यक्षीय भाषण (खुतब–ए–सदारत) का एक अंश

अनुवादक–हबीबुल्लाह आज़मी

हिन्दुस्तान के लिए हिन्दुस्तान की आजादी के लिए सच्चाइ, हक परस्ती के बेहतरीन और आला (उच्च) फर्ज अदा करने के लिए हिन्दुस्तान के हिन्दू व मुसलमानों की एकता और एकजेहती जरूरी है। मेरा इरादा न था कि इस विषय पर कुछ कहूं क्योंकि अलहम्दुलिल्लाह यह मसला अमल तक पहुंच चुका है। अब इस बात की जरूरत नहीं है कि इस पर बहस की जाय।

हिन्दू मुसलमानों की एकता का मसला अगरचः सियासी मसला होने के लिहाज से हिन्दुस्तान की निजात के लिए एक जरूरी मसला रहा है यह मसला आज खिलाफत आन्दोलन की बदौलत ही हमारे सामने नहीं आया है। हिन्दुस्तान में ऐसे लोग मौजूद थे जिन्होंने खिलाफत आन्दोलन के कारण नहीं बल्कि चूंकि उन्होंने अपनी हिदायत (पथ प्रदर्शन) के लिए अपनी हर फिक्र और हर काम के लिए एक ही रास्ता हिदायत (निर्देश) अपने हाथ में पकड़ लिया था इस लिए कि इस्लाम के सिद्धान्तों (उसूलों) ने, इस्लाम की तालीम ने उनको मजबूर किया था कि इसका हिन्दुस्तान में ऐलान करें।

खिलाफत आन्दोलन के लगभग दस साल पहले मैं ने इस हकीकत को महसूस किया कि अगर हिन्दुस्तान के मुसलमान अपने बहतरीन शरअी और इस्लामी फराएज (कर्तव्यों) अंजाम देना चाहते हैं तो हिन्दुस्तानी होने की हैसियत से उन्हें अंजाम देना चाहिये। यह भी एक सच्ची हैसियत है मगर सबसे पहली हैसियत यह है कि बहैसियत मुसलमान होने के मुसलमान का फर्ज है कि वह अपने हिन्दू भाइयों के साथ हो जाए। मैं अपने सीने में वह दिल रखता हूं जिसके लिए हिदायत की कोई किरण नहीं हो सकतीं जो आसमान वाले ने न भेजी हों। मेरा अकीद (विश्वास) है कि हिन्दुस्तान में हिन्दुस्तान के मुसलमान अपने बेहतरीन फराएज (कर्तव्य) अंजाम नहीं दे सकते जब तक वह इस्लामी आदेशों के मातहत हिन्दुस्तान के हिन्दुओं से पूरी सच्चाई के साथ एकता और एकीकरण (इत्तिहाद इत्तिफाक) न कर लें। यह विश्वास कुर्आन मजीद के निर्देशों पर आधारित है। वास्तव में यह वह चीज है जो अगर एक तरफ तर्के मवालात (असहयोग) के सिद्धान्त को हमारे सामने नुमायां करती है तो दूसरी तरफ हिन्दू मुस्लिम मसले को वाजेह (स्पष्ट) करती है।

तर्के मवालात (असहयोग) के बारे में कुर्आन मजीद के आदेश क्या हैं? मवालात वलायत से है वलायत का अर्थ महब्बत, सहायता और सहयोग के तो तर्क मवालात का अर्थ हुआ मददगारी के हर तरह के सम्बन्ध तोड़ लेना जब तक वह जमाअत अपने जुल्म से बाज न आए। कुर्आन मजीद ने दुन्या की तमाम गैर मुस्लिम कौमों को दो भागों में बांट रखा है। यह तकसीम (विभाजन) सूरः मुम्तहनः में मौजूद है। कुर्आन मजीद ने बताया है कि दो प्रकार की कौमें दुन्या में पेश हो सकती हैं। एक तो वह गैर मुस्लिम कौमें जो मुसलमानों पर हमला नहीं करतीं। मुसलमानों की हुकूमत और खिलाफत पर हमला नहीं करतीं ऐसी गैर मुस्लिम कौमें जिन्होंने न तो हमला किया है और न मुसलमानों की आबादियों और बस्तियों पर हमला करना चाहती है, ऐसी कौमों के लिए कुर्आन एक क्षण के लिए भी मुसलमानों को नहीं रोकता कि उनके साथ समझौता करें और बेहतर से बेहतर और अच्छे से अच्छा व्यवहार करें लेकिन जिन गैरमुस्लिम कौमों का यह हाल है कि वह मुसलमान कौमों के साथ कत्ताल (युद्ध) करें, मुसलमानों को उनकी बस्तियों से निकालें, ऐसी गैर मुसलमान कौमों के बारे में बिला शुबहा कुर्आन मजीद की तालीम यह है कि उनके साथ सम्बन्ध तोड़ लिए जाएं और कुर्आन मजीद का यह कानून पूरे इंसाफ और न्याय पर आधारित है जिसको खुदा और खुदा की फितरत (स्वभाव) ने काइम किया है। आलमगीर और हमागीर (विश्वव्यापी और सर्वभौम) अदालत की बिना पर कुर्आन मजीद का यह एलान है कि ऐसी गैर मुस्लिम कौमों के साथ मुसलमान कोई ऐसा सम्बन्ध न रखें जो मुहब्बत, दोस्ती सुलह व वफादारी और किसी तरह की मदद या सहयोग का हो। यह आदेश बहुत सी कुर्आनी आयतों में मौजूद हैं सूरः मुम्तहनः में जो कुछ कहा गया है उनका अनुवाद यह है कि अल्लाह तआला इस बात से

नहीं रोकता कि जिन नामुसलमानों ने तुम से न लड़ाई लड़ी है न कत्ताल (कत्ल व खून) किया, न ही मुसलमनों को उनकी आबादियों से निकाला है, अगर मुसलमान ऐसे नामुसलमानों के साथ एकता करें। हर तरह की नेकी और बेहतर से बेहतर व्यवहार जो वह कर सकते हैं करें।'' एक मिनट के लिए कुर्आन उन्हें इससे नहीं रोकता।

कुर्आन दुन्या में दुश्मनी का सन्देश नहीं लाया है। वह तो प्रेम का सन्देश लाया है। इसलिए प्रेम काइम रखने के लिए जरूरी है कि ठीक उसी कानून के अनुसार जिस के आधार पर अदालत मुजरिम को फांसी के तख्ते पर खड़ा करती है, मुसलमान भी ऐसी गैर मुस्लिम कौमों के साथ कोई सम्बन्ध, प्रेम, सहायता और सहयोग को नहीं रख सकता जो उन की दुश्मन हों। इस तकसीम (विभाजन) के आधार पर आपके सामने तर्के मवालात (असहयोग) का मसला स्पष्ट हो गया।

बीते पांच साल के भीतर दुन्या में वह घटनाएं हुई हैं, जिनके बाद ब्रिटिश सरकार मुसलमानों के मुकाबले में फरीके महारिब हो गई है। अर्थात लड़ने वाली फरीक (पक्ष) है। मैंने "फरीके महारिब पर जोर दिया है। बहुत से लोग यहां महारिब (लड़ने वाली) और गैर महारिब (न लड़ने वाली) पर जोर नहीं देते। मैं ने महारिब और गैर महारिब पर जोर दिया है। ब्रिटिश सरकार इस्लाम और मुसलमानों के मुकाबले शरीअत के अनुसार फरीके महारिब (लड़ने वाली फरीक) हो गई है। इस लिए ग्यारह से अधिक कुर्आनी आयतों और इस्लाम के कानून के अनुसार मुसलमानों के लिए हराम और नाजाइज हो गया फिस्क (ईश्वरी अवज्ञा) निफाक (द्वेष) हो गया। मुसलमानों के लिए करीब करीब कुफ्र हो गया कि वह ब्रिटिश सरकार से जहां तक हो सके महब्बत व मदद, वफादारी और आज्ञा पालन का का कोई सम्बन्ध रखें। अगर वह कोई सम्बन्ध इस तरह का रखेंगे तो एक मिनट के लिए उनके यह हक न होगा कि वह अपने आप को मुसलमानों की सफ (पंक्ति) में जगह दें। कुर्आन ने कहा कि जो मुसलमान ऐसे वक्तों में, ऐसी हालतों में इस महारिब (अपने खिलाफ लड़ने वाली) कौम के साथा और उनके सहयोगियों के साथ सहयोग का सम्बन्ध रखता है, चाहे वह धर्ती पर अपने आप को मुसलमान कहे, लेकिन अल्लाह के निकट उस की गिन्ती मोमिनों में न होगी, कुफ्फार में होगी।

आज भी यह एलान करता हूं। इसलिए कि सुलह की खबरें उड़ रही हैं। हर मुसलमान के दिल पर यह हकीकत नक्श है और होना चाहिए कि जब तक अंग्रेज हुकूमत अपने इस शैतानी घमण्ड से बाज न आएगी, मुसलमानों के शरअी मांगों को पूरा कर दे, इराक की धर्ती उसको दखल अन्दाजी से पाक न हो जाए, एशिया–ए–कोचक में कोई उसका विरोध न करे, कुस्तुनतुनिया से तमाम शरतें और पाबन्दियां उठा न ली जाएं हिन्दुस्तान को आजादी न दी जाए, उस वक्त तक अंग्रेज सरकार मुसलमानों के मकाबले फरीके मुखालिफ (मुखालिफ पक्ष) है। अगर मुसलमानों के दिल में आखिरी चिनगारी भी ईमान की बाकी है तो किसी मुसलमान के लिए जाइज नहीं है कि वह सुलह और सफाई का हाथ अंग्रेजों की तरफ बढ़ाए। वह मुसलमान अपेन आबाद नगरों को छोड़ दे, जंगलों में चला जाए, दद सांप और बिच्छू से सुलह करे मगर अंग्रेजी सरकार के साथ सुलह नहीं कर सकता।

लेकिन हां जिस क्षण हालात में तबदीली हो जाए, हालात पलट जाएं जो फरीके महारिब है फरीके महारिब न रहे अर्थात लड़ाई से बाज आजाए बल्कि उस हुक्म में आजाए जिस को तुम सुन चुके हो अर्थात जिन लोगों ने मुसलमानों से लड़ाई नहीं की, खून खराबा नहीं किया, उनकी आबादियों पर कब्जा नहीं किया है, उनको देश निकाला नहीं दिया और यही नहीं कि खुद जुल्म नहीं किया हो बल्कि दूसरों को भी जुल्म पर न उभारा हो। जिस क्षण ब्रिटिश सरकार में यह तब्दीली हो जाएगी, हकीकी तबदीली धोखे की नहीं जिस में चालीस साल से हिन्दुस्तान उलझा हुआ है। हालात की तबदीली के अनुसार हुक्म बदल जाएगा और मुसलमानों में हर व्यक्ति तैयार होगा कि सुलह व एकता का हाथ बढ़ाए। लेकिन जब तक ब्रिटिश सरकार फरीके महारिब है, वह खिलाफत की मांगें पूरी नहीं करती, जब तक हिन्दुस्तान को सुराज्य नहीं देती, जब तक सरकार इन तमाम बातों को पूरी नहीं करती उस समय तक मुसलमानों के लिए उस का वजूद उसके गवर्नरों का वजूद, उसकी अदालतों का वजूद जुल्म, व अत्याचार की कार्यवाहियां हैं, उनका वजूद लड़ने वालों का वजूद है, मुसलमान के लिए संभव है कि बिच्छुओं को हथेली पर लेकर दूध पिलाएं मगर यह संभव नही है कि अंग्रेजों के साथ सुलह कर लें।

(अल्लाहु अकबर कबीरा)

नवीं किस्त

भारत का संक्षिप्त इतिहास

मुस्लिम काल

सय्यिद अबू ज़फर नदवी

जौनपुर के बादशाह

महमूद शाह तुगलक ने १३६३ई० (७६६ हि०) में मलिक सरूद ख्वाजा सरा को जहानुश्शर्क का खिताब देकर जौनपुर का हाकिम बनाया उसने थोड़ी ही अवध में अपनी शक्ति इनती बढ़ाली कि पड़ोसी डरने लगे। चुनांचि बंगाल के बादशाह जो राज्य कर दिल्ली भेजते थे, वह अब जौनपुर के बादशाह को देने लगे। उसने अपना लक़ब सुल्तानुश्शर्क रखा। १३६६ (८०२ हि०) में उसका स्वर्गवास हो गया।

ख्वाजाजहां का गोदलिया हुआ पुत्र मलिक करूनिफिल मुबारकशाह के लकब से बादशाह हुआ। उसकी दिल्ली के बादशाहों से कई बार लड़ाई हुई लेकिन मुबारकशाह का १४०१ ई० (८०४ हि०) में देहान्त हो गया। उसके बाद उसका छोटा भाई इब्राहीम तख्त का मालिक हुआ।

इब्राहीम शर्की सब से उत्तम और बेहतर था। उसने चालीस वर्ष हुकूमत की। अपने राज्य को बढ़ाने के अतिरिक्त देश को उन्नति देने में उसने बड़ी कोशिश की। उसने निर्माण का सिलसिला बहुत दिनों तक जारी रखा। आलीशान महलों के अतिरिक्त एक मस्जिद की बुनियाद रखी। उसके जमाने में इल्म का बड़ा चर्चा रहा। बड़े–बड़े उलमा खुरासान और इराक से इकट्ठा हो गये। बड़े अच्छे पैमाने पर मदरसों की स्थापना की। जौनपुर का अरबी मदरसा बहुत दिनों तक मशहूर रहा। शेरशाह सूरी ने यहीं तालीम पाई थी। विभिन्न शास्त्रों (फनून) की पुस्तकें इसी जमाने में लिखी गईं।

वह आलिमों की बड़ी कद्र करता था। काजी शहाबुद्दीन दौलताबादी उसी जमाने में थे। बादशाह उनका बड़ा सम्मान करता था। एक बार बीमार हुए तो पानी उनके सिर से सदका करके खुद पी गया। जौनपुर यद्यपि फिरोज शाह तुगलक के काल में बसाया गया, मगर उस की रौनक और तकमील इसी बादशाह के जमाने में हुई।

बाप के बाद सुल्तान शर्की तख्त पर बैठा। यह भी बुद्धिमान और कूटनीतिज्ञ था। कुछ दिनों तक अपनी माली और फौजी ताकत को खूब मजबूत करता रहा। फिर मालवा के बादशाह के परामर्श से उसने कालपी फतह कर लिया। कालपी के हाकिम ने महमूद खिलजी मालवा के बादशाह से मदद मांगी। इस लिए उसने महमूद शर्की को वापस चले जाने की राय दी। लेकिन कालपी का काम इस से पहले समाप्त हो चुका था। आखिर शैख जमालुद्दीन के सहयोग से सुलह हो गई। कालपी का देश वापस हुआ। १४५७ (८६२ हि०) में उसका निधन हो गया।

फिर मुहम्मदशाह तख्त पर बैठा। उसने सबसे पहले बहलोल लोदी से सुलह कर ली। फिर बाज भाईयों को कैद कर दिया और जौनपुर के कोतवाल को हुक्म दिया कि शाहजादा हसन को कत्ल कर डाले। चुनानचि उसने मौका पाकर मार डाला। मलका जहां यह सुन कर कन्नौज चली गई और दूसरे शाहजादों ने बाज अमीरों (सरदारों) की सलाह से मुहम्मद से कहा कि बहलोल लोदी। शबख़ूं (रात्रयाक्रमण) मारना चाहता है इसलिए उसकी रोक थाम करनी चाहिए। चुनानचि हुसैन खां एक बड़ा लशकर लेकर कन्नौज पहुंचा और अपनी माता मलका जहां और दूसरे दरबारी अमीर जो मुहम्मद शाह की सख्ती से तंग आ गये थे, इन सब लोगों के परामर्श से ताज अपने सिर पर रखा और मुहम्मद शाह से लड़ने के लिए एक फौज भेज दी। इस लड़ाई में एक तीर ने मुहम्मदशाह का फैसला कर दिया।

सुल्तान हुसैन ने लोदी से सुलह कर ली जो सेना लेकर आगे बढ़ता चला आ रहा था और कुछ दिनों के बाद सुल्तान हसन ने तीन लाख सवार और चौदह सौ हाथी लेकर उड़ीसा पर हमला कर दिया। राजा से आज्ञापाल का करार और तीस हाथी एक सौ घोड़े, विभिन्न प्रकार के उपहार लेकर वापस आया। उस के बाद ग्वालियर पर हमला कर दिया। राजा ने घबरा कर पराजय स्वीकार कर ली।

१४७६ ई० (८७८ हि०) में अपनी बीबी के कहने से जो अलाउद्दीन शाह दिल्ली की लड़की थी, दिल्ली फतह

करने के लिए एक लाख चालीस हजार सवार और चौदह सौ हाथी लेकर निकला। सुल्तान बहलोल लोदी ने मजबूरन सुल्तान हुसैन शर्की को लिखा कि दिल्ली का क्षेत्र १८ कोस तक मेरे अधीन छोड़ कर बाकी पर अपना कब्जा कर लें। मैं आपका आज्ञाकारी रहूंगा मगर वह नहीं माना। विवश होकर वह १८ हजार अफगानों को लेकर सुल्तान हुसैन से लड़ने के लिए लौट पड़ा। सुल्तान हुसैन की भारी पराजय हुई। फिर कई बार दोनों में लड़ाई हुई जिस में हर बार हसुैन को पराजय हुई और आखिरी बार ऐसी पराजय हुई कि जौनपुर में भी न ठहर सका और सीमावर्ती क्षेत्र में चला गया। लोदी जौनपुर में अपने बेटे बारबक शाह को हाकिम बनाकर दिल्ली वापस हुआ। बहलाल के बाद सिकन्दर लोदी ने सरहदी क्षेत्र से भी निकाल दिया तो बंगाल के सुल्तान के पास चला गया और १४७६ई० (८८१ हि०) में इस खानदान का अंत हो गया।

इस शर्की बादशाहों की हुकूमत अस्सी वर्ष रही। उन्होंने इस अवध में देश को बड़ी उन्नति दी। बड़े–बड़े विद्वान इस जमाने में मौजूद थे चुनानचि जौनपुर का इलमी असर आलमगीर (औरंजेब) के बाद तक काइम रहा। उस जमाने में अनगिनत मदरसे काइम किये गये, मुसाफिर खाने और महलात तैयार हुए । व्यापार को बड़ी उन्नति मिली। पंजाब, बंगाल और मालवा से कारवां जौनपुर आता था।

मुलतान का बादशाह

सुल्तान अब्दुर्रशीद बिन महमूदगजनवी १०५२ई० (४४४हि०) में राजा बल (पाल) पुत्र सोमरह नामी एक सरदार इसमाईली था। सारे मुल्तान और मंसूरह (सिन्ध) पर कब्जा हो गया। उसका खानदान १३२ वर्ष तक शासन करता रहा। आखिर ११७६ ई० (५७५ हि०) में सुल्तान शहाबुद्दीन गौरी ने सिन्ध को सोमरह खानदान से ले लिया और अपनी तरफ से एक शासक मुकर्रर कर दिया लेकिन व्यवहारिक तौर पर सोमरह की ही सत्ता वहां काइम रही।

१२१० ई० (६०७ हि०) में सुल्तान के एक गुलाम नासिरुद्दीन कबाचा ने सिन्ध पर स्थायी शासन शुरू कर दिया, लेकिन १२२६ ई० (५२६ हि०) में शमशुद्दीन अलतमश सुल्तान दिल्ली ने कबाचा को पराजित करके सिन्ध को अपने राज्य में मिला लिया और चूंकि उस जमाने से तातारी मुगलों के हमले शुरू हो गये थे, इस लिए सीमा सुरक्षा की दृष्टि से सिन्ध के फिर दो भाग कर दिये गये। एक मुलतान और दूसरा ठठ मुलतान में एक अलग हाकिम रहने लगा और सोमरियों का व्यवहारिक शासन मुलतान से जाता रहा।

उस समय से सादात के जमाने तक मुलतान दिल्ली के अधीन एक प्रान्त की हैसियत रखता रहा। खानदान सादात के आखिरी बादशाह सुल्तान अलाउद्दीन मुहम्मद शाह आलम के शासनकाल में काबुल, गजाना और कन्धार पर मुगलों का कब्जा हो चुका था और आए दिन वह मुलतान पहुंच कर लूटमार करते थे। १४४३ ई० (८४७ हि०) में मुल्तान का कोई हाकिम न था। इस लिए शहर के लोगों ने मिल कर अपना हाकिम चुनना चाहा।

उस समय शैख बहाउद्दीन (रह०) की ख़ानकाह के मुतवल्ली शैख़ यूसुफ कुरैशी थे। शहर के तमाम सम्भ्रान्त लोगों ने मिलकर उन को अपना हाकिम बनाया। शैख ने भी उस को स्वीकार किया। मुल्तान और ओछ और उसके आस पास के शहरों में शैख के नाम का खुतबा और सिक्का जारी हुआ। शैख का प्रबन्ध इतना अच्छा था कि हर आदमी शैख के चुनाव से प्रसन्न हुआ खास कर जमीनदारों का वर्ग बहुत सम्पन्न हो गया।

उन्हीं क्षेत्रों में एक कौम लंकाह रहती थी। उस कौम का एक सरदार "रायसेहरा" नामी था जो कस्बा सवी का जमींदारा था। उस ने शैख को सन्देश भेजा कि मैं पुश्तहापुश्त से आपके खानदान से अकीदत (श्रद्धा) रखता हूं, इस लिए निवेदन करता हूं कि दिल्ली की हुकूमत बहलोल लोदी से आप को बहुत खतरा है, इस लिए उचित है कि लंकाह कौम का दिल हाथ में लीजिए ताकि जरूरत के समय वह आप की मदद करे।

शैख इस सन्देश से बहुत प्रसन्न हुए और राय के अनुरोध पर उसकी पुत्रीसे विवाह कर लिया। राय सहरा कभी कभी अपनी लड़की से मिलने आया करता था।

एक बार राय अपनी पूरी लंकाह कौम के साथ मुलतान पहुंचा और शैख को कहला भेजा कि इस बार मैं अपनी कौम को साथ लेकर आया हूं ताकि आप निरीक्षण (मुलाहिजा) करके मेरे योग्य कोई सेवा सपुर्द करें। शैख ने उस की बात मान ली। इशा की नमाज के बाद राय सेहरा अपनी लड़की को देखने के लिए किले के अन्दर आया और धोखा देकर अपने आदमियों को भी अन्दर बुला भेजा और कब्जा करके शैख यूसुफ को निकाल दिया।

शैख यूसुफ यहां से निकल कर दिल्ली सुल्तानबहलोल लोदी के दरबार में पहुंचे। सुल्तान ने बड़ा सम्मान दिया बल्कि अपनी लड़की की शादी भी उनके लड़के शैख अब्दुल्लाह से कर दी और मुलतान को फतह करा देने के वादे से बराबर उनको खुश करता रहा। शैख ने कुल ग्यारह साल सलतनत की।

कुतबुद्दीन लंकाह :

राय सहरा १४५४ ई० (८५८ हि०) में तख्त पर बैठा और अपना लकब कुतुबद्दीन रखा यह बड़ा कूट नीतिज्ञ था। देश में इतना बड़ा इन्कलाब हो गया। परन्तु देश की शान्ति भंग न हुई और न लोगों में इस से कोई नाराजगी पैदा हुई। नये बादशाह का सारा समय उनकलपुर्जों को ठीक करने में, जो शाहगर्दी से बिगड़ गये थे और उस वीरानी (विनाश) के दूर करने में, जो मुगलों की लूटमार से हर जगह छा गई थी, व्यतीत हुआ। सोलह साल राज्य करने के बाद १४६६ ई० (८७४ हि०) में उस का देहान्त हो गया।

अनुवाद : हबीबुल्लाह आजमी

इबादत

कर जवानी में इबादत काहिली अच्छी नहीं
जब बुढ़ापा आ गया कुछ बात बन पड़ती नहीं
हाथ में और पांव में ये जोर ये ताकत कहां
नुत्क में ये बात बीनाई में ये कुव्वत कहां
है बुढ़ापा भी गनीमत गर जवानी हो चुकी
ये बुढ़ापा भी न होगा मौत जिस दम आ गई

खाक हो जायेंगे हम तुम को खबर होने तलक एक खबर

इशरत सिद्दीकी

जस्टिस सच्चर कमेटी की रिपोर्ट आये एक वर्ष गुजर चुका है लेकिन इस रिपोर्ट और इसकी संस्तुतियों पर व्यवहारिक उपाय अब तक नहीं किये जा सके हैं। एक साल पहले जब यह रिपोर्ट सार्वजनिक की गयी थी और प्रधानमंत्री ने कहा था कि देश के संसाधनों पर अल्पसंख्यकों विशेषकर मुसलमानों का ही हक है और मुसलमानों को साधिकार बनाया जायेगा, तो रिपोर्ट और प्रधानमंत्री की घोषणाओं से यह उम्मीद जागी थी कि साठ वर्षों बाद ही सही मुसलमानों के हालात में सुधार तो आयेगा। रिपोर्ट जब आयी थी तो देश में बहस का यह एक बड़ा मुद्दा बना था। जगह जगह सेमिनार और रिपोर्ट पर अमल आवरी के लिय हुकूमत पर दबाव डालने की बातें हुईं। खुद कांग्रेस पार्टी ने उत्तर प्रदेश के विधान सभा इलेक्शन के मौके पर इस रिपोर्ट को अपने चुनावी हथकंडा के तौर पर इस्तेमाल किया, लेकिन फिर भी निराशा ही हाथ आयी।

मुवमेन्ट फार मुस्लिम इम्पावरमेंट ने एक साल गुजर जाने के बाद भी इस रिपोर्ट पर हुकूमत की ढुलमुल नीति की शिकायत करते हुए कहा है कि हुकूमत प्रोग्रमों और पालिसियों के ब्लूप्रिंट और घोषणाओं के बजाय इस रिपोर्ट पर अमल आवरी का एक लम्बा व संक्षिप्तकालीन प्रोग्राम तरतीब दे। मेघावी छात्र–छात्राओं को शिक्षा जारी रखने के लिए छात्रवृत्तियां, रोजगार के लिये सरकारी मुलाजिमते (नौकरियां) या फिर बैंकों और अल्पसंख्यक मालियाती तरक्कियाती कारपोरेशन से छोटा कारोबार करने वालों को माइक्रो लोन दे। कसीर मुस्लिम आबादी वाले इलाकों में जवाहर नवोदय विद्यालय और सेन्ट्रल स्कूल कायम करे। छात्राओं के लिय छात्रावास कायम कराये। आर्थिक और सामाजिक पिछड़ेपन की बुनियाद पर रिजर्वेशन दिया जाये। जब तक इन कामों को व्यवहारिक रूप न दिया जायेगा सिर्फ रिपोर्ट और घोषणाओं से मुसलमानों और सामाजिक दुर्दशा को बयान करने वाली यह रिपोर्ट पिछली रिपोर्टों की तरह विधान सभा की लाइब्रेरियों की जीनत बन कर रह जायेगी या फिर इस पर अमल होगा?

(राष्ट्रीय सहारा उर्दू २ दिसम्बर २००७ से साभार)

प्रस्तुति : एम० हसन अंसारी

आपके प्रश्नों के उत्तर?

मुफ्ती मु० तारिक नदवी

प्रश्न : अगर कोई शख़्स किसी की तरफ़ से ज़कात अदा कर दे और उस को उस की इत्तिलाअ न दे तो क्या ज़कात अदा हो जाएगी?

उत्तर : ऐसी सूरत में ज़कात अदा न होगी, जिस पर ज़कात फ़र्ज़ है अगर वह किसी से कह दे कि हमारी तरफ़ से हमारी ज़कात के इतने पैसे मुस्तहिक़ को दे दो और वह दे दे, तब तो ज़कात अदा हो सकती है लेकिन बे कहे और बे इजाज़त लिये किसी की तरफ़ से ज़कात अदा कर दी जाए तो उस की ज़कात अदा न होगी चाहे वह बाद में इजाज़त दे दे।

प्रश्न : अगर किसी ने किसी दूसरे की तरफ़ से उस को बिना बताए हुए क़ुर्बानी कर दी तो क्या उस की तरफ़ से क़ुर्बानी हो जाएगी। या नहीं?

उत्तर : अगर बिना इजाज़त किसी की तरफ़ से क़ुर्बानी कर दी जाए तो उसकी क़ुर्बानी अदा न होगी।

प्रश्न : ज़ैद ने एक शादी में शिरकत की, निकाह पढ़ाने वाले ने पांचों कल्मे नहीं पढ़ाए और ईजाब व क़बूल एक ही बार किया निकाह दुरुस्त हुआ या नहीं?

उत्तर : निकाह बिल्कुल दुरुस्त हुआ न कल्मे पढ़ाने की ज़रूरत है और न तीन बार ईजाब व क़बूल की ज़रूरत है, एक बार ईजाब व क़बूल काफ़ी है।

प्रश्न : नमाज़ इशा में शामिल हुआ तो पहली और दूसरी रकअत छूट गई तो नमाज़ पूरी करने में पहली और दूसरी रकअत में सूरे मिलाऊं या नहीं?

उत्तर : जब आप नमाज़ पूरी करें तो छूटी हुई पहली और दूसरी रकअतों में सूर–ए–फ़ातिहा के बाद कोई सूरे मिलाएं।

प्रश्न : एक शख़्स का अक़ीक़ा उस की ग़ैर मौजूदगी में उस के घरवालों ने कर दिया तो क्या अक़ीक़ा दुरुस्त हो गया?

उत्तर : अक़ीका दुरुस्त होने के लिये साहिबे अक़ीका की मौजूदगी ज़रूरी नहीं है अगर उस की ग़ैर मौजूदगी में उस के घर वाले उस का अक़ीक़ा कर दें तो अक़ीक़ा हो जाएगा।

प्रश्न : लड़कियों को मीरास का हिस्सा यह कह कर देना कि तुम अपने हिस्सों को लेकर भाइयों को दे दो, क्या यह जाइज़ है ?

उत्तर : मीरास में जितना हिस्सा लड़कियों का है वह उन का शरअी हक़ है, उन पर किसी क़िस्म का दबाव डालना कि वह लेने के बाद भाइयों को दे दे जाइज़ न होगा। अलबत्ता अगर वह अपनी ख़ुशी से भाइयों को अपने हिस्से में से कुछ या सब दे दें तो यह उन का अपना हक़ है, शरअन मुमानअत न होगी।

प्रश्न : आप के सच्चा राही में दो प्रकार की हिन्दी दिखाई पड़ती है कोई दुनिया लिखता है तो कोई दुन्या, कहीं बुन्याद लिखा मिलता है तो कहीं बुनियाद, कहीं खयाल है तो कहीं ख्याल, कहीं इन्सानीयत है तो कहीं इन्सानियत इस में किस को सहीह कहा जाए किस को ग़लत? समझा कर लिखें तो मेहरबानी होगी।

उत्तर द्वारा सम्पादक : वास्तविकता यह है कि अरबी फ़ारसी के जो शब्द हिन्दी साहित्यकारों ने अपनाए वह उनके शुद्ध उच्चारण पर ध्यान न देते हुए एक विशेष रूप से लिखा और वह रूप हिन्दी लिट्रेचर में प्रचलित हो गया अतः हमारे वह लेखक जो हिन्दी साहित्य में एक स्थान रखते हैं वह अरबी फ़ारसी के शब्द उसी रूप में लिखते हैं जो रूप हिन्दी में प्रचलित हैं वह लोग दुनिया, बुनियाद, ख्याल, रुझान, इन्सानियत, हैवानियत, जमहूरियत, ज्यादह, मुहब्बत, उनका आदि लिखते और बोलते हैं और यह उनका कमाल है कि सैकड़ों अरबी, फ़ारसी अल्फ़ाज़ का हिन्दी इम्ला याद किये हुए हैं जब कि उनके तलफ़्फ़ुज़ और उनकी बनावट से ना आशना है। उम्मीद है कि आइन्दा भी हिन्दी भाषी इसी तरह इन अल्फ़ाज़ का हिल्या बिगाड़ते रहेगे और उर्दू दां उन का शुक्रिया अदा करते रहेंगे कि हिन्दी में उनकी ग़ज़ल तो छपी।

काफ़ी अर्से से हिन्दी के वह साहित्यकार जो उर्दू से भी परिचित थे, ख़िदमत, ज़ी फ़हन, मामूं ज़ाद, ज़ुल्म, ज़रा, ग़ालिब, क़लम जैसे अल्फ़ाज़ में ख, ज, फ, ग, क अक्षरों के नीचे बिन्दी रखने लगे जब कि कट्टर हिन्दी साहित्यकारों ने इसे पसन्द न किया, इधर माज़ी क़रीब में कुछ लोगों के ज़रीअे हाकिम, आलिम के ह और अ के नीचे भी बिन्दी रखी जाने लगी लेकिन

ऐन साकिन को सब ने नज़र अन्दाज़ कर रखा है और सभी बाद और बाज लिख रहे हैं।

अल्बत्ता यह मेरी जुर्अत है चाहे आप इसे बदक़िस्मती से तअ़बीर करें या ख़ुश क़िस्मती से कि मैंने एहतिमाम किया कि मैं अ़रबी फ़ारसी के अल्फ़ाज़ हिन्दी में स्हीह़ तलफ़्फ़ुज़ के साथ लिखूं, चुनांचि मैं दुन्या, बुन्याद, ख़याल, रूजहान इन्सानीयत, हैवानीयत, जमहूरीयत, ज़ियादा, ज़रीआ़, वअ़दा, महब्बत अ़न्का, बअ़द, बअ़ज, शिअ़र लिखता हूं और बज़ाहिर यह तसन्नुअ़ मेरे साथ दफ़्न हो जाएगा, मेरी उम्र ७५ साल हो चुकी है अब मैं ज़ियादा दिनों तक आप को परेशान न कर सकूंगा। जब तक ज़िन्दा हूं अपनी इस उपज के लिए आप ह़ज़रात से मुआ़फ़ी का तलबगार हूं। ख़ुदारा आप मेरी इस जिद्दत को बर्दाश्त करते हुए मुझे मुआ़फ़ फ़रमा दें।

वैसे हम अगर परवेश, प्रलोक, स्वास्थ, अध्यन, प्रामर्श लिखें तो हिन्दी साहित्यकारों को अवश्य आपत्ति होगी फिर मैं जहमत, हिकमत और शर्फ आदि इम्लों से क्यों न दुखी हूं।

प्रश्न : जुग़राफ़िया वालों का कहना है कि ज़मीन गोल है यह अपनी धुरी पर लट्टू की तरह सूरज के सामने घूमती है, उसका जो हिस्सा सूरज के सामने आता है उस में दिन होता है और जो हिस्सा सामने नहीं रहता उस में रात रहती है, इससे मअ़लूम हुआ कि सूरज ठहरा हुआ है जब कि क़ुर्आने मजीद में आया है "वश्शम्सु तज्री" सूरज चलता है बल्कि यह भी कह सकते हैं कि सूरज दौड़ता है ऐसी सूरत में जुग़राफ़िया वालों की बात मानना कैसा है।

उत्तर : हां जुग़राफ़िया वालों की तह़क़ीक़ है कि ज़मीन गोल है, यह अपनी धुरी पर एक ओर को २३ १/२ डिग्री झुकी हुई है, यह अपनी धुरी पर लट्टू की भांति नाचती है जिस से दिन रात बनते हैं, यह अपनी धुरी पर एक चक्कर २४ घन्टों में पूरा करती है इसी लिये दिन रात में २४ घन्टे होते हैं या यूं कहिये कि इस के एक चक्कर के वक्त को २४ हिस्सों में बांट लिया गया है जिसका हर हिस्सा घन्टा कहलाता है। यह अपनी धुरी पर नाचते हुए सूरज के गिर्द भी घूमती है सूरज के गिर्द इस का एक चक्कर एक साल में पूरा होता है, और जमीन के २३ १/२ डिग्री एक ओर के झुकाव के सबब कभी ज़मीन का उत्तर वाला आधा गोला सूरज के क़रीब हो जाता है और दक्खिन वाला दूर हो जाता है फिर घूमते घूमते कभी इस का उल्टा हो जाता है जिससे सर्दी, गर्मी के मौसम बनते हैं। इतनी तह़क़ीक़ से ऐसा ही लगता है कि जुग़राफ़िया वाले सूरज को ठहरा हुआ मानते हैं जो "वश्शम्सु तज्री" के ख़िलाफ़ है। साथ ही बअ़ज़ उ़लमा ह़ज़रात सूरज चलता है से यह मतलब निकालते हैं कि सूरज़ ज़मीन के गिर्द घूमता है जिससे दिन रात बनते हैं जिसका जुग़राफ़िया वाले मज़ाक़ उड़ाते हैं। लेकिन जुग़राफ़िया वालों की एक तह़क़ीक़ आम जुग़राफ़िया पढ़ाने वालों की नज़रों से भी ओझल है और ग़ैर मुह़क़्क़िक़ उ़लमा की नज़रों से भी। इन्साइक्लो पीडिया बर्टानिक में लफ़्ज़ सन और स्टार के तह़त लिखा है कि सूरज अपने निज़ामे शम्शी (सूर्य मन्डल) के साथ एक तरफ़ को २० किलो मीटर प्रति सेकेण्ड की स्पीड से भाग रहा है पस सूरज का चलना साबित हो गया और ज़मीन के अपनी धुरी पर घूमने में कोई तज़ाद (विलोमता) बाकी न रही। क़ुर्आन की बात तो सहीह़ है ही जुग़राफ़िया वालों की बात भी सहीह़ मानने में कोई ह़रज न रहा।

प्रश्न : ह़ाजी साह़िबान जब ह़ज से वापस हों तो उनके इस्तिक़बाल का क्या ह़ुक्म है?

उत्तर : ह़ाजियों का इस्तिक़बाल (स्वागत) उनसे मुसाफ़ह़ (हाथ मिलाना) मुआ़नक़ा (गले मिलना और उन से दुआ़ कराना मुस्तह़ब है, लेकिन ह़ज्जन (ह़ज्ज करने वाली औ़रत) का इस्तिक़बाल मुसाफ़ह़ व मुआ़नक़ा वग़ैरह सिर्फ़ औ़रतें करें या मह़रम मर्द, देखा गया है कि बअ़ज़ ह़ज्ज करने वाली औ़रतें ना मह़रम अ़ज़ीज़ों से मुसाफ़ह़ कर लेती है और कहती है कि ह़ज्जन के लिए जाइज़ है, याद रह़ किसी भी औ़रत का किसा नामह़रम से मुसाफ़ह़ ह़राम है।

मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद तारिक़ अपने रब से जा मिले।

मुफ़्ती मुह़म्मद तारिक़ साह़िब नदवी दारूलउ़लूम नदवतुल उ़लमा में उस्ताद थे, फ़िक़्ह़ से ख़ास तअ़ल्लुक़ था तअ़मीरे ह़यात में बराबर सुवाल व जवाब लिखते थे जब तब सच्चा राही में भी उन के सुवाल जवाब छापे जाते थे। इस साल वह अपनी वालिदा के साथ ह़ज्ज को गये थे, ह़ज्ज पूरा हो गया था कि बीमार हुए और मक्के ही में अपने रब को लब्बैक कहा अल्लाह तआ़ला उन की मग़फ़िरत और उनके घर वालों को सब्र से नवाज़े।

कुछ अहम शुहदाए इस्लाम का ज़िक्र

इदारा

उम्मते मुस्लिमा की पहली शहीदा उम्मे यासिर सुमय्या हैं, अल्लाह उन से राज़ी हुआ। बे शर्म, बे हया अबू जेहल (उस पर ख़ुदा की लअ़नत हो) ने सिर्फ़ इस्लाम लाने के सबब हज़रते सुमय्या को बर्छा मारा और वह शहीद हो गईं। (रज़ियल्लाहु अन्हा)

कुफ़्फ़ारे क़ुरैश की ज़ियादतिया जारी रहीं, हब्शा हिजरत की इजाज़त मिली, बहुत से मुसलमान हब्शा गये मगर ज़ुल्म व सितम जारी रहा मदीना तय्यिबा की हिजरत का हुक्म आया मुसलमानों के साथ अल्लाह के रसूल ने हिजरत फ़रमाई कुफ़्फ़ारे क़ुरैश अब भी बाज न आए। भारी फ़ौज से मदीना तय्यिबा की जानिब कूच कर दिया १७ रमज़ान जुमे के दिन मैदाने बद्र में ३१३ सहाबा आ गये। इस नाज़ुक मोक़िअ़ पर अल्लह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने दिल हिला देने वाली दुआ फ़रमाई – "ऐ अल्लाह अगर आज तू ने इस मुट्ठी भर जमाअ़त को फना कर दिया तो फिर इस धरती पर तेरी इबादत करने वाला कोई न होगा। ऐ अल्लाह तूने मुझ से जिस चीज का वअ़्दा फ़रमाया है वह पूरा फ़रमा, ऐ अल्लाह तेरी मदद की ज़रूरत है।"

अल्लाह ने मदद की मुसलमानों को फ़तह मिली इस लड़ाई में १४ सहाबा ने शहादत पाई उस में से ६ क़ुरैश के थे और ८ अन्सार के (रज़ियल्लाहु अ़न्हुम) बद्र की जंग में कुफ़्फ़ार के सत्तर सोरमा मारे गये थे। अगले साल क़ुरैशे मक्का ने बड़ी तय्यारी और भारी फ़ौज के साथ फिर मदीने का रुख़ किया, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम भी अपने जांनिसार सहाबा के साथ मैदान में आ गये । ७ शव्वाल स० ३ हि० सनीचर के दिन उहुद के दामन में मुक़ाबला हुआ, मुसलमानों की जीत हुई लेकिन आख़िर में मुसलमानों की एक ग़लती से जंग का पांसा पलट गया जिस में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम भी ज़ख़्मी हुए और सत्तर सहाबा शहीद हो गए (इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिअ़ून) इन्हीं शुहदाए उहुद में हमारे नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के प्यारे चचा हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हु शहीद हुए हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को बड़ा दुख हुआ। आप (सल्ल०) ने अपने चचा के बारे में फ़रमाया "सय्यिदुश्शुहदाअि हम्ज़ा" (रज़ि०) इस फ़रमान की मौजूदगी में मुसलमानों का फ़र्ज़ है कि वह और किसी को सय्यिदुश्शुहदाअ न कहें।

स० ३ हि० ही में क़बीला अ़ज़ल और क़ारः के लोगों ने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से दरख़्वास्त करके दीन की तअ़लीम हासिल करने के लिए छ सहाबा को हासिल किया और जब वह 'रजीअ़' के मक़ाम पर पहुंचे तो ग़द्दारी की। तीन सहाबा तो लड़ कर शहीद हो गये बक़ीया तीन ज़ैद बिन दसन्ना, ख़ुबैब बिन अ़दी और अ़ब्दुल्लाह बिन तारिक़ ने हथियार डाल दिये यह तीनों भी मज़लूमाना शहीद हुए। ख़ुबैब (रज़ि०) से शहादत से पहले पूछा गया था कि क्या तुम्हें यह पसन्द है कि तुम अपने घर में आराम से हो और (मआ़ज़ल्लाह) तुम्हारी जगह मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) को क़त्ल किया जाए? आप ने फ़रमाया मुझे तो यह भी नहीं पसन्द है कि मैं अपने घर आराम से रहूं और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के एक कांटा भी चुभे। फिर आप ने दो रकअ़त नमाज़ पढ़ी और शहीद कर दिये गये। शहादत से पहले आप ने दो अशआ़र भी पढ़े जिन का अनुवाद यह है –

जब मैं इस्लाम के लिय क़त्ल किया जा रहा हूं तो मुझ को इस की परवाह नहीं कि मैं अल्लाह की राह में किस पहलू पर गिर कर जान दूंगा।

यह जो कुछ है ख़ालिसन अल्लाह के लिये है अगर वह चाहे गा तो इस पारा पारा (टुकड़े टुकड़े) जिस्म पर बरकत नाज़िल फ़रमाएगा।

आमिर बिन मालिक की दरख़्वास्त पर उन के क़बीले में तब्लीग़ व दअ़्वत के लिय अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने चुने हुए सत्तर सहाबा को रवाना फ़रमाया उन्होंने बिअरे मऊना पर क़ियाम फ़रमाया। यहां उसय्यः, रअ़ल, और ज़कवान जो बनी सुलैम के कबीले थे इन लोगों ने मुबल्लिग़ीन सहाबा को घेर लिया और सब को शहीद कर दिया सिर्फ़ कअ़ब बिन ज़ैद बच निकले जिन्होंने जा कर हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को ख़बर की आप को बहुत दुख हुआ और

आप ने एक माह तक नमाज़ में उन के लिए बद दुआ की।

स० ५ हिज्री में ग़ज़व–ए–ख़न्दक़ पेश आया, बड़ी सख़्त आजमाइश हुई, कुरैश के काफिरों और उनके सहायकों की भारी फौज थी मदीने के गिर्द खन्दक खोदकर बचाव किया गया, अल्लाह की मदद आई आंधी पानी ने दुश्मन को भागने पर मजबूर कर दिया इस ग़ज़वे में सात सहाबा शहीद हुए।

स० ७ हिज्री में ग़ज़व–ए–ख़ैबर पेश आया, ज़बरदस्त मअरका (लड़ाई) रहा, अल्लाह ने फ़त्ह नसीब फ़रमाई इस ग़जवे में बीस सहाबा शहीद हुए।

स० ८ हिज्री में दरबारे रिसालत के सफ़ीर उमैर अज़्दी को बुसरा के जालिम हाकिम शरहबील ने शहीद कर दिया तो तीन हज़ार जांबाज़ों का इस्लामी लश्कर उस की सरकूबी के लिए रवाना हुआ मूता के मैदान में रूमी फ़ौज जो मुनज़्ज़म भी थी और बहुत ज़ियादा थी ——— ज़ैद बिन हारिस, जअफ़र तैयार और अब्दुल्लाह बिन रवाहा शहीद हुए जिनकी शहादत का मंजर अल्लाह तआला ने अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मदीने में दिखा दिया। और आप (सल्ल०) ने पूरा वाक़िआ अहले मदीना को बता दिया। फिर ख़ालिद बिन वलीद ने ऐसी तदबीर की कि दुशमन की फ़ौज भी मरऊब होकर पीछे हट गयी और इस्लामी फ़ौज भी हिकमत से वापस आ गई।

यहां तक उन शुहदा का जिक्र आया जिन्होंने अल्लाह के महबूब नबी की हयाते मुबारका में शहादत पाई, उन की तअदाद १६४ है, जो सब के सब सहाबी हैं, उन में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के महबूब चचा हज़रत हम्ज़ा भी हैं जिन को ज़बाने रिसालत से सय्युशशुहदाअ का ख़िताब मिला।

ध्यान देने की बात है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनके ग़म की यादगार न क़ाइम की न सहाब–ए–किराम को इस की तअलीम दी।

यहां एक बात और क़ाबिले तवज्जुह है कि बिअरे मऊनः के शहीदों को शहीद करने वालों के लिए एक माह तक बददुआ की मगर अपने महबूब चचा के क़ातिल और कलेजा चबाने वाले के हक़ में बददुआ न की क्यों? इस लिए कि उनकी क़िस्मत में इस्लाम था।

यहां पर एक ख़ास बात कहने को जी चाह रहा है वह यह कि किसी भी आलिम से जिस से आप बे तकल्लुफ़ पूछ सकें , पूछें कि दौरे रिसालत के शुहदा का तआरूफ़ कराएं तो शायद बद्र व उहुद के शुहदा के अलावा दूसरों को बता न सकें यह कोई ऐब की बात नही इस्लाम ने न शुहदा के नाम याद रखने की तल्क़ीन की है, न शुहदा के ग़म की यादगार की तअलीम दी है।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बअद इस्लामी जंगों का सिलसिला चलता रहा, हज़रत अबू बक्र के ज़माने में मुददअीयाने नुबुव्वत और तारिकीने ज़कात वग़ैरह से जो जंगें हुईं उनमें मुसलमानों की ख़ासी तअदाद शहीद हुई जिनमें कितने हुफ़्फ़ाज़ सहाबा भी थे। जिन के नाम व शुमार का ज़िक्र तारीखों में नहीं मिलता फिर ख़लीफ़–ए–सानी, हज़रत उमर (रज़ि०) के दौर में कितने लोग जिहाद में शहीद हुए, खुद हज़रत उमर को अबू लू लू मजूसीने ऐन नमाज़ में ख़ंजर मारा आप गिर गये आप फ़ज्र की नमाज़ की इमामत फ़रमा रहे थे, मुक्तदियों की सफ़ें जमी खड़ी थीं जो अबू लू लू के भागने में रूकावट थीं, इतने बड़े हादिसे पर भी लोगों ने नमाज़ नहीं तोड़ी, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ ने आगे बढ़ कर इमामत संभाली और नमाज़ पूरी की इस दरमियान अबू लूलू हर सफ़ के किसी आदमी को ज़ख़्मी कर के भाग रहा था उसने १३ आदमियों को ज़ख़्मी किया उन में से सात ने जांबहक होकर शहादत का जाम पिया अबू लू लू पकड़ा गया उस ने अपना अंजाम बुरा देखते हुए ख़ुद को ख़ंजर मार कर वासिले जहन्नम हुआ। यह २७ ज़िल्हिज्जा की बात है, हज़रत उमर (रज़ि०) का इलाज शुरूअ हुआ मगर वह जांबर न हो सके पहली मुहर्रम को शहादत पायी। (इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिअून)

हज़रत उस्मान (रज़ि०) का ज़माना आता है। हर्बुलअबादिलः में कैसरे रूम की कुव्वत टूटती है अफ्रीका इस्लामी हुकूमत में शामिल होता है, कितने मुजाहिदीन शहादत का शरफ हासिल करते हैं तारीख़ वालों को मअलूम भी नहीं लेकिन हज़रते उसमान (रज़ि०) की मज़्लूमाना शहादत का तज़किरा तवारीख़ में महफ़ूज़ है। बाग़ियों ने आप का घर घेर लिया। बाहर से राशन या पानी अन्दर जाना बन्द कर दिया कई हफ्ते मुहासरा (घेरा) रहा, नव जवान सहाबा ने बाग़ियों से लड़ने की इजाज़त मांगी आपने फ़रमाया कि मैं किसी कल्मा पढ़ने वाले का ख़ून बहाना नहीं चाहता। आप को किसी

ख़तरे से बचाने के लिए नवजवान दरवाज़े पर आ बैठे उन में हज़रत हसन और हज़रत हुसैन (रज़ि०) भी थे लेकिन बाग़ियों ने पिछली छत से आ कर आप को शहीद कर दिया इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।

हज़रत अ़ली (रज़ि०) का ज़माना आता है। जंगे जमल और जंगे सिफ्फीन में जानिबैन के ७३ हज़ार लोग मारे गये, फ़ित्ने का ज़माना था इस लिये सब को शहीद नहीं कहा जा सकता लेकिन ग़ालिब अक्सरीयत शुहदा ही की थी। फिर ख़ुद हज़रत अ़ली (रज़ि०) को फ़ज्र की नमाज़ के लिए जाते हुए रास्ते में शहीद किया गया, इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। आप की शहादत की तारीख़ २० रमाज़न स० ४० हि० है। शहादत की तारीख़ किसी ने २० लिखी तो किसी ने १८ और शीआ़ हज़रात ने २१ लिखी है।

यहां एक ख़ास बात याद दिलाना है कि इन तमाम शुहदा के लिए सहाब–ए–किराम ताबिईन या तबअे ताबिईन में से किसी ग़म की याद में कोई रस्म या अ़ज़ादारी या तअज़ियादारी न अपनाई इस लिये कि इस्लाम में इस की गुंजाइश न थी। ख़ुद हज़रत अ़ली (रज़ि०) की याद में अ़ज़ादारी या तअ़ज़िया दारी ख़ुद उन के आ़ली तबार साहिब ज़ादगान हज़रते हसन हजरते हुसैन, हज़रत मुहम्मद बिन हनफ़ीयः वग़ैरहुम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने न अपनाई शीआ़ हज़रात की किताबों में भी इस का ज़िक्र नहीं है। इस लिये कि उस दौर तक अ़ज़ादारी और तअ़ज़ियादारी का इस्लाम में तसव्वुर ही न था।

बेशक दौरे यज़ीदी में करबला के मैदान में ज़ालिम उ़बैदुल्लाह बिन ज़ियाद के हुक्म से यज़ीदी फौज़ ने नावस–ए–रसूल और उनके साथियों पर जो ज़ुल्म ढाये उस से पूरी उम्मते मुस्लिमः कांप उठी अल्लाह तआ़ला ने उन ज़ालिमों को इस दुन्या में भी सज़ा दी और आख़िरत में भी उनहें सज़ा भुगतना है।

अल्लाह तआ़ला शुहदाए करबला के दरजात बुलन्द फ़रमाए और उम्मत को उनका जैसा हौसला और इस्तिक़ामत अ़ता फ़रमाए। हर साहिबे ईमान का दिल उनकी महब्बत से आरास्ता है अल्लाह तआ़ला इस महब्बत में इज़ाफ़ा फ़रमाए और अ़ज़ादारी और तअ़ज़ियादारी जो उनके नाना ख़ातमन्नबिय्यीन हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की शरीअ़त के ख़िलाफ़ है उससे हर साहिबे ईमान को महफ़ूज़ रखे। ऐ अल्लाह हक़ दिखा और उस पर चलने की तौफ़ीक़ दे और बातिल को बातिल दिखा और उस से बचने की तौफ़ीक़ दे।

(पृष्ठ १४ का शेष)

है। मैं मस्जिद से सीधा स्टेज पर नहीं आया बल्कि पुस्तकालयों के रास्ते से, अध्ययन के रास्ते से और मालूमात के रास्ते से आप के सामने आया हूं। आप में से कुछ लोग योरप की दो एक भाषायें जानते होंगे मैं खुद योरप को जानता हूं। तुम अंग्रेजी दाँ, मैं अंग्रेज दां हूं। मैं सारे योरोप से खम ठोंक कर कहता हूं कि तुम्हारी पूरी जीवन–व्यवस्था गलत है और वह इन्सानियत को मौत की तरफ ले जा रही हैं। मेरा दावा है और पूरे तर्क और विश्वास के साथ कहता हूं कि दुनिया की नजात पैगम्बरों ही के रास्ते में है और दुनिया के लिये इस समय खुदा के यकीन, उसके खौफ, दूसरी जिन्दगी पर ईमान और पैगम्बरों की रिसालत के इकरार के सिवा कोई चारा नहीं।

(उर्दू मासिक रिजवान नवम्बर २००७ से आभार)

प्रस्तुति : एम० हसन अंसारी

नअ़त

ओम प्रकाश खींची 'दिल'

शत्रु भी मोहित हुए हैं, प्रेम की बौछार से।
चरणों में आकर गिरे हैं, मुग्ध हो सत्कार से।
जब धरा बोझिल हुई थी, पाप के अतिभार से।
धर्म–ज्योति तब जलाने, आये तुम उस पार से।
जब विराजे आप बीबी आमना की गोद में।
गंध–पूरित घर हुआ था, भर गया उजियार से।
सेवा अवसर पर हलीमा, धन्यता से भर गयीं।
नाम मिट सकता नहीं, उसका कभी संसार से।।
सर्वशक्तिमान ईश्वर का संदेशा लाए आप।
झोलियां भर दीं जगत की, ज्ञान के उपहार से।
करुणा, संतोष, धीरज व शौर्य का प्रतिमान तू।
श्रेष्ठतर पायी हैं निधियां, तूने रचनाकार से।
है विधायक दृष्टि तेरी, धर्म–सम्मत हर चरण।
हो नहीं सकता विवेचन, शब्द के श्रृंगार से।
क्या भंवर में नाव मेरी, डूबती ही जाएगी?
उस पार लग जाएगी आपके उपकार से।
महानता, कीर्ति, श्रेष्ठता है ब्रह्माण्ड में फैली हुई।
सारा आलम है मुनव्वर, आपके किरदार से।
दास उस प्यारे नबी का, ये सुभागा 'दिल' हुआ।
गूंजती हैं सब दिशाएं जिसकी जय–जयकार से।

सीधी राह मिलेगी तुमको ...

मैं कैसा हूं? मैं ही जानूं, दूजा कैसे जाने
जो कुछ मैं बतलाऊं जग को उतना ही जग जाने।
ईश्वर के बारे में अटकल लगा रहे अज्ञानी,
अपनी–अपनी अटकल को, कहते हैं ईश्वर–वाणी,
अटकल में न समय गंवाओ, अटकल है नादानी।
वही बड़ा दयावान है जो है जग निर्माता,
सरल, सुचारू मार्ग है उसका जो है भाग्य विधाता।
सृष्टि का निर्माण कठिन है या लिखना कुरआन,
हो जा कहता हो जाता है, ईश्वर बड़ा महान।
बाकर अब तो छोड़ दे इधर–उधर की राह,
सीधी राह मिलेगी तुझको कर ईश्वर की चाह।

शैख़ बाक़र अ़ली

हज़रत उमर के अख़्लाक़ व व्यवहार

इरफ़ान फ़ारूक़ी नदवी

अल्लाह से डरना

तमाम भलाइयों की जड़ अल्लाह का डर है। जब तक आदमी डरता है और वह समझता रहता है कि जो कुछ मैं कर रहा हूं अल्लाह उसे देख रहा है और उसका हिसाब लेगा तो वह गुनाह और गलत काम करने की हिम्मत नहीं करता है। आप अल्लाह की पकड़ से बहुत डरते थे फरमाया करते थे, "अगर आसमान से यह आवाज आए कि एक आदमी को छोड़कर सब जन्नती है तब भी अपनी पकड़ का डर लगा रहेगा कि शायद वह आदमी मैं ही हूं।" (कन्जुल उम्माल)

एक बार रास्ते से तिनका उठा कर फरमाया "काश मैं भी इसी तरह का घास का तिनका होता, काश मैं पैदा ही न किया गया जाता, काश मेरी मां मुझे जन्म न देती।" (कन्जुल उम्माल)

एक बार हजरत अबूमूसा अशअरी से पूछा क्यों अबूमूसा तुम इस बात को पसन्द करते हो कि हम लोग इस्लाम, जिहाद और अल्लाह के रसूल के साथ रहने की वजह से बराबर सराबर छूट जाएं? अबू मूसा ने कहा मैं इस पर तैयार नहीं। हम लोगों ने बहुत सी नेकियां की हैं, उनके बदले की उम्मीद रखते हैं।

कुरआन की आयतों से असर लेना :

हजरत शद्दाद रजियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मैं पिछली सफों में नमाज पढ़ता था। लेकिन उमर रजियल्लाहु अन्हु जब इस आयत को "मैं अपने दुख व गम की शिकायत अल्लाह ही से करता हूं" पढ़ते तो इतनी जोर से रोते कि मैं आपके रोने की आवाज सुनता था। (बुखारी)

हजरत हसन कहते हैं एक बार हजरत उमर नमाज पढ़ा रहे थे। जब सूरः तूर की यह आयत पढ़ी "तुम्हारे पालनहार का अजाब आकर रहेगा और उसे कोई हटाने वाला नहीं" आप इतना रोए कि रोते–रोते आप की आंख सूज गई। (कन्जुल उम्माल)

एक दिन जब सूरः यूसुफ फर्ज की नमाज में पढ़ी और इस आयत पर पहुंचे "उसकी आंखें गम की वजह से सफेद पड़ गईं थीं और वह घुटा जा रहा था।" तो इतना कि आगे न बढ़ सकें। वहीं रूकूअ करना पड़ा। (कन्जुल उम्माल)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से और आपके सगे सम्बन्धियों से महब्बतः

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अपनी जान व माल औलाद व हर चीज से ज्यादा मुहब्बत करते थे। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी बीवियों से नाराज होकर कुछ दिन उनसे अलग रहने लगे थे। तो हजरत उमर आप सल्ल० के पास पहुंचे अन्दर आने की इजाजत मांगने पर भी इजाजत न मिली तो आपने फरमाया अल्लाह की कसम मैं हफ्सा (हजरत उमर की बेटी और रसूलुल्लाह की बीवी) की सिफारिश के लिए नहीं आया हूं, अगर आप हुक्म दें तो मैं उसकी गर्दन उसके बदन से अलग कर दूं। (बुखारी)

जब आप शाम गए तो आप से मिलने हजरत बिलाल आए। अपकी फर्माइश पर उन्होंने अजान दी। उनकी अजान सुनकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का जमाना याद आ गया। आप इतना रोए कि हिचकी बन्ध गई। (फतूहात शाम)

हजरत उमर ने लोगों को तनख्वाहें देना शुरू कीं तो उसामा बिन जैद रजियल्लाहु अन्हु की तनख्वाह जो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के प्यारे गुलाम जैद के बेटे थे अपने बेटे अब्दुल्लाह से ज्यादा रखी। अब्दुल्लाह बिन उमर ने कहा कि उसामा हमसे किसी भी चीज में आगे नहीं। आपने फरमाया सही है लेकिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसामा को तुमसे ज्यादा चाहते थे। (हाकिम)

मतलब यह कि आप केवल रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से ही नहीं, बल्कि जिसे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुहब्बत करते थे उससे भी मुहब्बत करते थे। हजरत हसन और हुसैन रजियल्लाहु अन्हुम बच्चे थे और हजरत इब्ने उमर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ बहुत से लड़ाइयों में शामिल थे लेकिन आपने उन्हें ५०० रूपये और उन दोनों बुजुर्गों को १००० रूपये तनख्वाह दी। (इसाबा)

आप ऊपर पढ़ चुके हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफात (मृत्यु) हुई तो मुहब्बत की वजह से उमर रजियल्लाहु अन्हुम को यकीन न आता था कि आप इस दुनिया

से जा चुके हैं।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नतों पर अमल करना –

हजरत उमर सभी कार्य रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नतों को देखकर किया करते थे। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमेशा गरीबी व फक्र में जिन्दगी काटी थी। इसलिए हजरत उमर के जमाने में सोने और चांदी की नदियां बह गईं लेकिन आपने फक्र (दरिद्रता) को हाथ से न जाने दिया।

एक बार हजरत हफ्सा रजियल्लाहु अन्हा ने कहा – अब तो तंगी के दिन खत्म हो गए अब तो आपको अच्छे कपड़े पहनना, और अच्छा खाना खाना चाहिए। आप ने फरमाया क्या तुम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तंगहाली को भूल गई मैं तो आप ही के तरीके पर चलता रहूंगा। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की गरीबी व फक्र को इतनी देर तक जिक्र करते रहे यहां तक कि हजरत हफ्सा रजियल्लाहु अन्हा बर्दाश्त न कर सकीं और रोने लगीं। (कन्जुल उम्माल)

एक बार आप यजीद बिन सुफ्यान के साथ खाना खा रहे थे। पहले मोटा झोटा खाना आया आप खाते रहे उसके बाद शानदार आइटम आया तो आपने अपना हाथ खींच लिया। फरमाया अल्लाह की कसम! जिसके हाथ में उमर जी जान है। अगर तुम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु के रास्ते से हटोगे तो अल्लाह तुम्हें सीधे रास्ते से हटा देगा। (कन्जुल उम्माल)

इस्लाम ने उन चीजों के अदब व इज्जत करने का हुक्म दिया जो अल्लाह की निशानियों में से है। कअबः में जो पत्थर लगा है वह जन्नत से आया है उसे हजरे अस्वद कहते हैं। आपके दिल में यह बात आई कि कहीं लोग यह न समझने लगें कि पत्थर से भी कुछ होता है। आप ने उसको चूमा तो उसके सामने खड़े होकर फरमायाः मैं जानता हूं तू एक पत्थर है, न नुकसान पहुंचा सकता है न फायदा। अगर मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को चूमते हुए न देखा होता तो मैंन चूमता। (मुस्लिम बुखारी)

उनकी हमेशा यह कोशिश रहती थी कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जिस तरह काम करते हुए देखा है उसी तरह वह भी करें। एक बार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जुल हुलैफा में दो रकअत नमाज पढ़ी थी। आप जब भी उस तरफ से निकलते थे तो दो रकतअत नमाज पढ़ते थे। किसी ने पूछा यह कैसी नमाज़ है? आप ने फरमाया मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यहां नमाज पढ़ते देखा है। (मुस्लिम)

जिस तरह वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हर सुन्नत पर अमल करते थे चाहते थे कि दूसरे लोग भी वैसा ही करें। आप जुमा का खुत्बा दे रहे थे कि एक आदमी मस्जिद में आया। हजरत उमर ने उसकी तरफ देखा और कहा यह आने का कौन सा वक्त है? उन्होंने कहा मैं बाजार से आ रहा था अजान सुनी उसी वक्त वुजू करके आ गया। हजरत उमर ने कहा केवल वुजू किया? रसूलुल्लाह तो नहाने का हुक्म दिया करते थे। (बुखारी)

सादगी

आपकी बड़ाई का यह हाल था कि कैसर व किसरा, रोम व ईरान के महलों में आपके नाम से ही भूचाल आ जाता था। दूसरी तरफ ऐसी सादगी थी कि बदन पर पेवन्द लगा हुआ कुर्ता सरपर फटा हुआ इमामा और पाँव में फटी पुरानी चप्पल, कन्धे पर पानी की मश्क लेकर बेवा औरतों का पानी भरते थे। जिहाद पर जाने वालों के घर का सौदा लाते थे और थक हार कर मस्जिद के किसी कोने में जमीन पर सो जाते थे। (बुखारी)

एक बार आप सर पर चादर डालकर निकले। एक गुलाम को देखा कि गधे पर सवार होकर जा रहा है। चूंकि आप थक चुके थे इस लिए उससे कहा मुझे भी बैठा लो। उसे तो मुंहमांगी चीज मिल गई उसी वक्त वह उतर गया। हजरत उमर ने कहा मैं तुझे अपनी वजह से तकलीफ नहीं दे सकता। तुम बैठे रहो मैं पीछे बैठ जाऊंगा। आप इसी तरह मदीना पहुंचे लोग अचम्भे से देखते थे कि अमीरुल मोमिनीन गुलाम के पीछे गधे पर सवार हैं। (कन्जुल उम्माल)

आप जब सफर करते थे तो आपके लिए तम्बू नहीं लगाए जाते थे। आप पेड़ के नीचे जमीन पर सो जाते। आपके कपड़ों को देखकर शाम के सफर में मुसलमानों को शर्म आती थी। लोगों ने तुर्की घोड़ा और शानदार ड्रेस लाकर दिया तो आपने फरमाया अल्लाह तआला ने हमें इस्लाम की वजह से इज्जत दी है और यही हमारे लिए काफी है।

एक दिन जकात के ऊंटों पर तेल मल रहे थे किसी ने कहा अमीरूल मोमिनीन यह काम किसी गुलाम से

लिया होता, तो आपने कहा जो आदमी मुसलमानों के काम का जिम्मेदार हो वह उनका गुलाम ही है। (कन्जुल उम्माल)

जुहद (सांसारिक बातों से विरक्ति) –

माल व दौलत के लालच में आदमी क्या नहीं कर बैठता बेटा बाप को कत्ल कर देता है, भाई–भाई के खून का प्यासा हो जाता है। इसी लिए हजरत उमर को इन चीजों से नफरत थी। यहां तक कि हजरत तल्हा रजियल्लाहु अन्हु ने फरमाया– बहुत से लोग उनसे पहले इस्लाम लाए और हिजरत की लेकिन वह जुहद में सबसे आगे हैं।

जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आपको कुछ देना चाहते तो आप फरमाते मुझसे ज्यादा जरूरतमंद लोग हैं उन्हीं को दे दीजिए। सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमाते इस को ले लो फिर चाहे अपने पास रखो या सदकः कर दो। अगर इंसान को बेमांगे कोई चीज मिल जाए तो उसे ले लेना चाहिए। (मुस्लिम)

हजरत उमर ने कभी नर्म मुलायम कपड़ा नहीं पहना। बदन पर बारह बारह पेवन्द का कुर्ता सर पर फटा हुआ इमामा और पांव में जूतियाँ होती थीं। इसी हाल में रोमियों व ईरानियों के दूत से मिलते थे। एक बार हजरत आइशा रजियल्लाहु अन्हा और हजरत हफ्सा रजियल्लाहु अन्हा ने कहा आप के पास बहुत से वफ्द (डेपूटेशन) आते हैं इसलिए आपको कुछ बन संवर कर रहना चाहिए। हजरत उमर ने कहा अफसोस तुम दोनों रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बीवी होकर मुझे इस तरह का मश्वरा देती हो। आइशा तुम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उस हालत को भूल गई कि तुम्हारे घर में केवल एक कपड़ा था जिसको दिन को बिछाते और रात को ओढ़ते थे। हफ्सा तुमको याद नहीं एक बार तुमने बिस्तर को दोहरा करके बिछा दिया था उसकी नर्मी से आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रात भर सोते रहे, (तहज्जुद के लिए न उठ सके) बिलाल ने अजान दी तो आंख खुली उस वक्त आप ने फरमाया हफ्सा तुमने यह क्या बिस्तर दोहरा कर दिया कि रात भर सोता रहा। मेरा दुनिया के आराम से क्या सम्बन्ध? बिस्तर की नर्मी की वजह से तुमने मुझे गाफिल कर दिया। (कन्जुल उम्माल)

एक बार मोटे कपड़े में कुर्ते को आपको एक आदमी को धोने और पेवन्द लगाने को दिया। उसने उस के साथ एक नर्म कपड़े का शानदार मुलायम कुर्ता भी आपको लाकर दिया। आपने उसे वापस करके अपना कुर्ता ले लिया और फरमाया इसमें पसीना खूब सूखता है। (कन्जुल उम्माल)

आप कपड़ा गर्मी में बनवाते और उस पर पेवन्द लगाते चले जाते। एक बार देर तक घर में रहे। बाहर लोग आपका इन्तिजार कर रहे थे पता चला कि कपड़ा पहनने को न था। इस लिए उन्हीं कपड़ों को धोकर सूखने के लिए डाल दिया है सूख गए हैं तो पहनकर निकले हैं।

अपनी निगरानी करना :

आजकल लम्बे लम्बे भाषण होते हैं यह कहते वह चोर हैं मैं साहूकार। लोग ऐसे हैं और वैसे हैं। लेकिन हजरत उमर पहले अपने गिरेबान में झांककर देखते थे। एक बार आप मिम्बर पर चढ़े और लोगों से कहा – लोगो मैं एक जमाने में इतना गरीब था कि लोगों को पानी भर कर दिया करता था और वह उसके बदले में खजूर देते थे वही खाकर बसर करता था। यह कहकर बात समाप्त कर दी। लोगों ने कहा यह कहने की कौन सी बात थी? (बल्कि एक सहाबी ने कहा आपने तो अपना अपमान किया है) कहा मेरे दिल में थोड़ा घमण्ड आ गया था। (कि मैं अमीरूल मोमिनीन हूं) यह उसकी दवा है। (इब्ने सअद)

आपकी कठोरता :

हजरत उमर के स्वभाव में सख्ती थी यह बात बहुत मशहूर है। लेकिन यह सख्ती कभी उन्होंने अपने लिए नहीं की। आपने कभी देखा है कि उन्होंने कभी अपने लिए म्यान से तलवार निकाली हो? किसी को मारा पीटा हो? उनकी यह कठोरता केवल दीन के लिए थी, सच के लिए थी, अल्लाह के लिए थी। उन्होंने खुद एक बार फरमाया– "मेरा दिल अल्लाह के बारे में नर्म होता है तो झाग से भी ज्यादा नर्म हो जाता है और सख्त होता है तो पत्थर से भी ज्यादा कठोर हो जाता है।

एक बार आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कुछ बांट रहे थे। एक बदतमीज ने गुस्ताखी की कहा "ऐ मुहम्मद इंसाफ करो" हजरत उमर गुस्से से बेचैन हो गए और उसे कत्ल कर देना चाहते थे। लेकिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने, जिन्हें अल्लाह ने पूरे संसार के लिए रहमत बना कर भेजा था, रोक दिया। (बुखारी)

हजरत हातिब बिन अबीबल्तआ

एक बड़े सहाबी हैं। यह हिजरत करके मदीना चले गए थे। लेकिन उनके परिवार वाले मदीना में थे। ८ हिजरी में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मक्का के फत्ह के लिए निकले तो इन्होंने अपने परिवार की हिफाजत के लिए मुश्रिकों और अपने दोस्तों को सूचना दे दी। हजरत उमर को पता चला तो बिफर पड़े और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहा इजाजत दीजिए मैं इसकी गर्दन उड़ा देता हूं। (बुखारी)

आपकी नर्मी

आप बहुत ही नर्म दिल थे। हम पीछे लिख चुके हैं एक बार आपने एक आदमी को देखा कि बाएं हाथ से खा रहा है, आपने उससे पूछा तो उन्होंने कहा कि मेरा हाथ गज्वः मूता में कट गया है तो आप रोने लगे।

जब अरब में सूखा पड़ा तो आपको किसी भी तरह चैन न आता था। आप अपनी प्रजा के लिए तड़प जाते थे, उनके गुलाम असलम का कहना है कि अगर सूखा ज्यादा दिन रहता तो मुझे डर था कि कहीं आप की मौत इस गम में न हो जाए।

आपको जब रसूलुल्लाह की याद आती तो रोने लगते थे। कुरआन की आयतें पढ़ते तो इतना रोते कि आवाज भर्रा जाती थी। जब आप से एक भिखारी ने एक बार कहा कि कियामत में आपसे सब कुछ पूछा जाएगा फिर जन्नत या जहन्नम जाना होगा। तो आप इतना रोए कि आपकी दाढ़ी भीग गई।

इस तरह की कितनी ही घटनाएं हैं जो बताती हैं कि हजरत उमर का दिल मक्खन जैसा कोमल व मुलायम था।

आपका माफ करना –

आप अपने बारे में लोगों को माफ भी कर दिया करते थे। एक बार उथैना और हुर दो आदमी आपके पास आए। उथैना ने कहा आप इंसाफ के साथ हुकूमत नहीं करते। हजरत उमर को बहुत गुस्सा आया हुर ने कहा अमीरूल मोमिनीन कुरआन में है "नर्मी और माफ करने से काम लो और नेकी का हुक्म करो और जाहिलों से दामन बचाकर निकल जाओ।" यह तो जाहिल आदमी है। इसकी बात पर आप कान न धरिए। यह सुनते ही हजरत उमर का गुस्सा बिल्कुल ठण्डा पड़ गया।

हजरत उमर के वह काम जो आपने सबसे पहले किए –

१. न्यायालय बनाना और उनमें जज रखना।

२. हिजरी सन् शुरू करना।

३. अमीरुल मोमिनीन का लकब (उपाधि) धारण करना।

४. फौज का दफ्तर बनाना।

५. वालिन्टियर को तनख्वाहें देना।

६. माल का दफ्तर बनाना।

७. पैमाइश करना।

८. जनगणना करना।

९. नहरें खुदवाना।

१०. शहर आबाद करना।

११. कूफा, बसरा, फुसतात, मवसिल आदि बसाना।

१२. बिक्री कर लगाना।

१३. समन्दर की पैदावार पर कर लगाना।

१४. जेलखाना बनाना।

१५. कोड़ा का प्रयोग करना।

१६. रातों को गश्त करके प्रजा के हाल का पता लगाना।

१७. पुलिस विभाग बनाना।

१८. फौजी छावनियां बनाना।

१९. खबर लाने के लिए डाकिया का इन्तिजाम करना।

२०. मक्का से मदीना तक मुसाफिरों के आराम के लिए मकान बनवाना।

२१. लावारिस बच्चों के पालन पोषण के लिए वजीफा देना।

२२. मेहमान खाने बनाना।

२३. गरीब व दरिद्र ईसाइयों व यहूदियों को वजीफा देना।

२४. छोटे–छोटे स्कूल खोलना।

२५. उस्तादों को तनख्वाहें देना।

२६. इमामों और मुअज्जिनों को तनख्वाहें देना।

२७. मस्जिदों में रातों को रोशनी का इन्तिजाम करना।

२८. शेअर में औरतों के नाम लेने पर सजा देना।

२९. मस्जिदों में वअज व नसीहत करना सबसे पहले आपके हुक्म से तमीमदारी ने वआज कहा।

और बहुत से काम हैं जिन्हें आपने सबसे पहले किया है सूची लम्बी हो जाने के डर से हमने उन्हें छोड़ दिया है। (अल्फारूक व तारीखुल खुलफा)

आपकी बीवियां

हजरत उमर ने कई निकाह किए थे –

१. जैनब जो मशहूर सहाबी उस्मान बिन मजऊन की बहन थीं। मक्का में ईमान लाईं और वहीं उनकी वफात (मृत्यु) हुई।

२. कुरैबा यह मुश्रिका थीं ६ हिजरी में

इन्हें तलाक दे दी।

३. मुलैका इनको ६ हिजरी में तलाक दे दी।

४. जमीला इनको भी तलाक हुई थी।

५. आतिका बिन्त जैद इनका निकाह पहले अब्दुल्लाह बिन अबूबक्र से हुआ

६. उम्मे कुलसूम रजियल्लाहु अन्हा हजरत फातिमा रजियल्लाहु अन्हा की बेटी और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नवासी थीं। हजरत उमर ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के खानदान से सम्बन्ध बनाए रखने के लिए उनसे १७ हिजरी में ४० हजार महर पर निकाह किया था।

हजरत उमर की औलादें

आपके बेटों के नामः

१. अब्दुल्लाह बिन उमर रजियल्लाहु अन्हु

२. उबैदुल्लाह

३. आसिम

४. अबूशहमा अब्दुर्रहमान

५. जैद

६. मुजैर रजियल्लाहु अन्हु

इनमें पहले तीन लड़के बहुत मशहूर हैं।

हजरत हफ्सा रजियल्लाहु अन्हा आपके औलाद में बहुत मशहूर हैं उनका पहला निकाह खुनैस बिन जुजाफा रजियल्लाहु अन्हु से हुआ था वह गज्वः उहुद में शहीद हो गए। तो ३ हिजरी में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनसे निकाह किया।

आपने संक्षेप में हजरत उमर की पूरी जिन्दगी पढ़ ली। यह इस्लाम के सही तर्जुमान है। इससे पता चलता है कि इस्लाम इस धरती पर किस तरह की हुकूमत और कैसे बादशाह को पसन्द करता है। क्या उनसे बढ़कर इंसाफ पसन्द बादशाह हुआ है? या हो सकता है? जिनके शासन काल में दुनिया में सुख, शान्ति, भ्रष्टाचार का अन्त, इंसाफ का बोलबाला हो गया। हां तो क्या इस्लाम हुकूमत को छोड़कर कोई हुकूमत ऐसी हो सकती है?

(पृष्ठ ३१ का शेष)

डाक्टर जख्मी हो गयें अगर डाक्टरों की बात को सत्य मान लिया जाये तो क्या इस मामूली सी बात को इतना बड़ा इशू बनाना मुनासिब है। उनकी जिद है कि सांसद पर हत्या का प्रयास करने का केस दर्ज किया जाये और उनकी विधान सभा की सदस्यता खत्म की जाये अब भला यह मांग सरकार कैसे स्वीकार करेगी।

इस लिए मुख्यमंत्री ने उसे मानने से साफ इंकार कर दिया है। यद्यपि उन्होंने उनके दूसरे केसों का निरीक्षण करने के लिए ६ सदस्यी पार्टी को चुना है जिसे तीन माह में रिपोर्ट देना है उन डाक्टरों की हड़ताल से आम नागरिक अधिक परेशान हैं। "निलूफर" में कई बच्चे आज भी जीवन एवं मृत्यु के बीच में हैं अब नागरिकों ने भी यह आवाज बुलन्द करना शुरू कर दी है कि डाक्टरों के विरूद्ध भी हत्या का केस दर्ज किया जाये। गैर जिम्मेदाराना रवैया के कारण २० से अधिक बच्चों से उनके माता–पिता को वंचित रहना पड़ा है एवं मुमकिन है कि शहरी भी इस मांग पर बन्द और धरने शुरू कर दें।

वैसे तो १९९७ में ही केरला उच्च न्यायालय ने बन्द को अवैधानिक बताया था उच्चतम न्यायालय ने १९९८ में बन्द पर प्रतिबन्ध लगा दी थी २००४ में तो उच्चतम न्यायालय ने शिव सेना भाजपा पर २०–२० करोड़ का जुर्माना इस लिए लागू किया था क्योंकि उन्होंने मुम्बई बन्द का ऐलान किया था जो बन्द विस्फोटों के विरूद्ध में हुआ था। हाल ही में उच्चतम न्यायालय ने डीएम के सेतु समुद्रम एखतलाफ पर बन्द मनाने से साफ मना कर दिया था परन्तु न्यायालय के सख्त रूख के बावजूद कभी भी कोई पार्टी गिरोह (दल), यूनियन बन्द का ऐलान कर देती हैं – आन्ध्र के डाक्टरों के हड़ताल से पैदा होने वाली स्थिति को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि सरकार बन्द और हड़ताल पर अधिक सख्त रवैया अपनाएं। चिकित्सालय जैसी जीवन और मृत्यु से मिले हुए विभाग में तो इसकी हरगिज अनुमति नहीं देनी चाहिए क्योंकि यह विभाग इतना महत्वपूर्ण और भावुक (हस्सास) है कि चन्द मिन्टों की लापरवाही थी कई जानें ले लेती हैं। चिकित्सालय के अलावा बैंकिक, ट्रांसपोर्ट जैसे महत्वपूर्ण विभागों को भी बन्द और हड़ताल से अलग करने के लिए सरकार को आवश्य प्रयास करने चाहिए क्योंकि इन विभागों में कार्य ठप होने से देश को प्रतिदिन करोड़ों रूपये का घाटा होता है।

माता पिता के साथ व्यवहार

और तेरे रब ने फ़ैसला कर दिया है कि उस के सिवा किसी की बन्दगी न करो, और माता पिता के साथ अच्छा व्यवहार करो। यदि उनमें से कोई एक या दोनों तुम्हारे सामने बुढ़ापे को पहुंच जाएं तो उन्हें उफ तक न कहो। (पवित्र कुर्आन)

धरना, प्रदर्शन, रैली, बन्द, हड़ताल

एन. साक़िब अब्बासी ग़ाज़ीपुरी

धरना एवं प्रदर्शन गणतंत्र व्यवस्था (जमहूरी निजाम) में अधिकारों कर्तव्यों के मांग के लिए महत्वपूर्ण हथियार माने जाते हैं, धरना प्रदर्शन, बन्द एवं हड़ताल के द्वारा नागरिक (शहरी) अपनी आवाज राज्य सरकार तक पहुंचाते हैं, ताकि कर्तव्य को फ़रामोश करके, गूंगे, बहरे और अन्धे हो चुके अधिकारियों के कानों तक उनकी सदाएं पहुंच सकें और वह नागरिकों की उपस्थित कठिनाइयों का निरीक्षण करके उनका समाधान कराने के लिए कदम उठाएं परन्तु उन हथियारों का प्रयोग गैर मशरूत नहीं है। विधान में उसका पूरी तरह से ध्यान रखा गया है कि कोई भी मनुष्य, गिरोह, पार्टी अपने अधिकार की मांग के नाम पर दूसरे नागारिक गिरोह, पार्टी का अधिकार का हनन (हक तलफी) न करे, विधान इसकी हरगिज अनुमति नहीं देता कि किसी भी नागरिक की आजादी पर प्रतिबन्ध लगा दिया जाय या किसी को उसके मौलिक अधिकार (बुन्यादी हुकूक) को प्राप्त करने से वंचित रखा जाय।

अफसोस की बात यह है कि जमहूरी हथियारों का प्रयोग वैध कम अवैध अधिक हो रहा है। उनका गैर जरूरी प्रयोग इतना अधिक होने लगा है कि आज अगर गांधी जी जीवित होते तो शायद संकोच महसूस करते कि उन्होंने देश को स्वंतत्रता दिलाने के लिए अंग्रेजों के विरूद्ध इस हथियार का आविषकार ही क्यों किया? वैसे अहिंसा के नेता महात्मा गांधी ने सविनय अवज्ञा आन्दोलन (सिविल नाफरमानी तहरीक) केवल इस लिए बन्द कर दिया था क्योंकि एक स्थान पर विरोधी हिंसक हो गए थे परन्तु आज जनता गांधी जी के दूसरे संदेशों के प्रकार अहिंसा को भी विस्मृत कर चुकी है। अन्यथा धरना, विरोध, बन्द और हड़ताल के नाम पर वह दूसरों का जीना असम्भव नहीं करते, साधारण जीवन को अपाहिज नहीं करते, खून खराबा और मारपीट का सहारा अपने बन्द एवं धरना के सफल बनाने के लिए नहीं लेते।

अब तो शान्तिपूर्ण धरना, शान्ति पूर्ण बन्द, शान्तिपूर्ण प्रदर्शन की कल्पना ही नहीं की जा सकती स्थिति यह है कि अब लोगों को जोर एवं जबरदस्ती से धरना एवं प्रदर्शन में शामिल होने के लिए मजबूर किया जाता है। धरना देने वालों और प्रदर्शन करने वालों की बात को टालने की वीरता (हिम्मत) किसी में नहीं होती क्योंकि ऐसा करने पर उसको कुछ भुगतान भुगताना पड़ सकता है। इससे हर मनुष्य परिचित होता है।

यह रोग पहले श्रमिक संगठनों एवं राजनैतिक दलों तक ही सीमित था। मगर अब तो हर विभाग इस की पकड़ में है। देश में कहीं न कहीं बन्द और प्रदर्शन होते रहते हैं। कहीं किसी पार्टी की तरफ से तो कहीं किसी यूनियन की जानिब से स्थिति यह है कि आज कहीं भी बम विस्फोट हो तो उसके विरूद्ध शहर और राज्य बन्द का आदेश होता है कहीं अपहरण और हत्या हो तब भी शहर बन्द कर दिया जाता है। वैट के प्रचलन को यकीन बनाने का शासन घोषणा (एलान) करती है, तो व्यापारी ममण्डल बन्द मनाते हैं। समय प्रतिबन्ध की बात होती है तो मजूदर यूनियन धरना देती है और हड़ताल करती है रिजरवेशन दिए जाने की घोषणा हो तो तालीमी इदारे बन्द कर दिए जाते हैं, सड़कें जाम कर दी जाती हैं दुकानें, कार्यालय जबरदस्ती बन्द करवा दिये जाते हैं, ताकि साधारण जीवन पूरी तरह लुंज हो कर रह जाए शहरी हवाबाजी और दूसरे विभागों में प्रत्यक्ष गैर राष्ट्रीय पूंजीवाद बढ़ा देने के लिए शासन बात करती है तो ट्रेड यूनियन कार्मिक संघ कर्मचारी पूरा देश ही ठप कर देते हैं। बैंक, ट्रेन सेवा वगैरा सभी सेवाएं ठप हो जाती हैं। दुकानों में तोड़ फोड़ सड़कों पर यात्रियों के साथ मारपीट ट्रेनों की पटरिया उखाड़ने जैसी घटनाएं आम हो जाती हैं पुलिस और प्रदर्शनकारियों में भी झड़प की नौबत आ जाती है कभी–कभी स्थिति इतनी बिगड़ जाती है कि पुलिस को फायरिंग जैसे कार्य अपनाने पड़ते हैं गोलियां चलती हैं जिसके कारण लाशें ढेर हो जाती हैं और कुछ लोग चोटिल भी होते हैं। संगूर में होने वाली घटना अभी दिमागों से दूर नहीं हुई इस पर कई दिनों तक राजनीति होती रहती है और जब मामला बढ़ जाता है तो उसकी जांच का आदेश होता है और इन सब के बीच धरना एवं प्रदर्शन

और बन्दी का मकसद खत्म हो जाता है।

एक अनुमान के अनुसार देश व्यापी हरताल अगर प्रभावकारी होतो एक दिन में ही देश के अरबों रूपयों का नुकसान होंता है। कुछ माह पहले माओ नवाजों के द्वारा की गयी देश व्यापी हड़ताल के बीच एक दिन में ही केवल झार खण्ड को चार करोड़ से अधिक का घाटा हुआ था पंश्चिमी बंगाल में पूरे साल मे ४० ता ५० रोज दुकानें बन्द हो जाती है। अब भला सोचिये इतने दिनों में राज्य को कितना घाटा उठाना पड़ा होगा।

बन्द और हड़ताल का नकारात्मक प्रभाव सरकारी एवं गैर सरकारी दोनों विभागों पर पड़ता है मगर सब से अधिक घाटा व्यापारियों, मजदूरों को होता है। छोटा कारोबार करने वाले एंव प्रतिदिन की मजदूरी पर जीवन व्यतीत करने वालों के लिए एक दिन की बन्दी भी कभी कभी कयामत से कम साबित नहीं होती क्योंकि ये रोज कमाते हैं और रोज खाते हैं इस स्थिति में बन्द से उनका घरेलू जीवन कितना प्रभावित होता होगा उसका अनुमान लगाया जा सकता है। परन्तु शायद ही कोई इस पहलू को याद रखता है। बन्द का रोग हिन्दुस्तान में विचित्र और बहुत हद तक गमभीर स्थिति स्वीकृत कर चुकी है। और हाल ही में उत्तर प्रदेश के लखनऊ वाराणसी और फैजाबाद में बम विस्फोट हुए तो वीएचपी ने बन्द मनाया निःसन्देह पाठक ये नहीं भूलेंगे कि कुछ माह पहले गुजरात के बड़ौदरा में विश्व हिन्दू परिषद के द्वारा बन्द की घोषण की गयी थी इसका कारण था कि एक मुस्लिम लड़के (इमरान महबूब शेख) और हिन्दू लड़की पराची चन्द्र शाह के बीच शादी हुई थी शादी अपनी नौइयत की वाहिद थी। इधर देखने में आया है कि रोगियों के मसीहा माने जानेवाले डाक्टरों ने भी बन्दी की इस जान लेवा बीमारी की सख्त पकड़ में आते जा रहे हैं। आल इण्डिया मेडिकल आफ साइंसेज में डाक्टरों ने अपने डाइरेक्टर पी वीनू गोयल के विरूद्ध एवं केन्द्रीय हेल्थ मंत्री रामा दोसे की कार्रवाई के विरूद्ध हड़ताल और प्रदर्शन किये थे, अधिकांश राज्यों में अभी भी डाक्टरों की हड़ताल जारी है। जिसका कारण यह है कि केन्द्रीय सरकार की वह स्कीम जिसके अनुसार उन्हें दीहात के इलाके में कार्य करना होगा। इसके अलावा सरकार ने एमबीबीएस करने की मुद्दत पांच वर्ष से बढ़ाकर साढ़े छः वर्ष करने वाली है इसका भी चिकित्सालय के छात्र विरोध ा कर रहे हैं जिसमें उन्हें चिकित्सा कर्मचारी वर्ग (तिब्बी अमला) को सावध ाान किया है कि वह अपनी मुजव्वजह हड़ताल पर न जायें। उनकी मांग रिटायरमेंट की आयु ६० से बढ़ा कर ६२ वर्ष करने और १९९६ से केन्द्रीय मान के अनुसार वेतन और भत्ते की अदाएगी है। डाक्टरों की हड़ताल के गम्भीर परिणाम तो हर जगह भुगतने पड़ रहे हैं मगर इन दिनों इसका सबसे अधिक प्रभाव आंधरा प्रदेश हैदराबाद में देखा जा रहा है। हैदराबाद में उपस्थित राज्य के सबसे बड़े सरकारी बाल चिकित्सालय निलूफर में बीते ५ दिनों में जूनियर डाक्टर और नर्सें हड़ताल के खत्म करने के लिए सरकार और डाक्टरों के बीच बातचीत भी हो चुकी है। मुख्यमंत्री राजशेखर रेड्डी जो खुद भी डाक्टर हैं उन्होंने डाक्टरों से बात की है किन्तु चिकित्सा कर्मचारी वर्ग अपनी हठधर्मी पर अड़े हुए हैं। सहयोग में दूसरे शहरों के डाक्टरों ने भी हड़ताल शुरू कर दी है। इससे सरकारी चिकित्सालयों में चिकित्सक कार्य बुरी तरह प्रभावित हो रही है। इस हड़ताल का कारण केवल यह है कि "निलूफर" में रविवार को अपनी बच्ची के इलाज के लिए आये एक मनुष्य की आरजुओं एवं मिन्नत को नजर अन्दाज करके जूनियर डाक्टर गपशप कर रहे थे अपनी बच्ची की बिगड़ती हालत देखकर उस को क्रोध आया और उसने डाक्टरों से चिल्ला चिल्ला कर बच्ची का इलाज करने को कहा तो डाक्टरों को भी क्रोध आ गया बात हाथापाई तक पहुंच गई। फिर डाक्टरों ने बच्ची का इलाज करने के बजाय पुलिस को बुलाकर उसको पुलिस के हवाले कर दिया मानवता एवं व्यवहार से भला इन खाकी वर्दी वालों से क्या सम्बनध उन्होंने कमाई का एक बहुमूल्य अवसर जानकर उसे तरह–तरह से परेशान करना शुरू किया। उस बेचारे को पूरा दिन पुलिस स्टेशन में ही बिताना पड़ा पुलिस की हरकतों से परेशान होकर जब उसने स्थानीय सांसद को फोन में तफसील बताई तो सार्वजनिक कार्यकर्ताओं ने भी अपनी दुकानों को चमकाने का अवसर समझा और अपने कार्यकर्ताओं के साथ पहले पुलिस स्टेशन फिर "निलूफर" अस्पताल पहुंच गये अब डाक्टरों का कहना है कि सांसद एवं उनके सहयोगियों ने उनके साथ मारपीट की जिससे एक लेडी स्टाफ समेत कई ड्यूटी दे रहे

(शेष पृष्ठ २६ पर)

सौन्दर्य प्रसाधन स्वास्थ्य के लिए खतरनाक

उमेश कुमार साहू

प्रदर्शन और दिखावा वर्तमान युग की संस्कृति बन गयी है। इस उपभोक्तावादी संस्कृति के फलने–फूलने के कारण दिखावे पर पैसा खर्च करने की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है। बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने हमारे देश में बाजार का सर्वेक्षण किया और निष्कर्ष यही निकला कि गोरा होना यहां के लोगों की प्रमुख कमजोरी है। बहुराष्ट्रीय कंपनियां आज इस कमजोरी का भरपूर लाभ उठा रही हैं और पूरी शक्ति से भारत में अपनी जड़ें मजबूत कर रही हैं। परिणाम स्वरूप आज नित्य नयी प्रसाधन सामग्रियां बाजार में आ रही हैं।

अधिकांशतः महिलाओं में इन सौन्दर्य प्रसाधनों के प्रति विशेष आकर्षण रहता है। अपनी इस आतुरता में वे अपनी त्वचा पर कितने अत्याचार कर रही हैं। इस की उन्हें परवाह ही नहीं है। सभी सौन्दर्य प्रसाधन माइक्रो आर्गनिज्म यानी बैक्टीरिया वाइरस, फफूंदी तथा अन्य सूक्ष्म कीटानुणों के बहुत अच्छे वाहक होते हैं। विशेषकर क्रीम व माइश्चरा आदि। चिकित्सकों के अनुसार कोई पदार्थ या तत्व त्वचा के मौलिक रंग को बदल नहीं सकता। त्वचा का काला या गोरा रंग त्वचा में विद्यमान एक पिगमेंट मेलानिन के कारण होता है। यह मेलानिन जितनी भी मात्रा में त्वचा में होता है, त्वचा का रंग उतना ही गहरा होता है। किसी भी उपाय द्वारा मेलानिन को कम नहीं किया जा सकता।

विश्व की अनेक सभ्यताओं में चेहरे, होंठ, आंख, बाल, नाखून एवं त्वचा सौन्दर्य को सुरक्षित रखने एवं बढ़ाने के उद्देश्य से अनेक प्राकृतिक चीजों का प्रयोग होता रहा है। परन्तु आज के वैज्ञानिक युगीन चकाचौंध में अनेक रसायनों, नये यौगिकों ने हमारे जीवन में प्रवेश किया नतीजा कृत्रिम सौन्दर्य प्रसाधनों का सैलाब हमारे सामने हैं। इसमें दुष्प्रभाव एवं जहरीले असर अपने प्रारंभिक दौर से ही सामने आते रहे हैं।

१७वीं शताब्दी में तो यूरोप में एक ऐसी महामारी फैली, जिसने डाक्टरों और विशेषज्ञों को चकित कर दिया। यह महामारी आर्सेनिक युक्त सौन्दर्य घोल के आम प्रयोग से फैली थी। अनेक प्रकार के शैम्पू खिजाब, कंडीशनर आदि के बढ़ते प्रयोग ने गंजेपन की रफतार को काफी बढ़ाया है। सन् १६५० में जन्मी वर्तमान लिपिस्टिक दुनिया के २५ प्रतिशत चर्मरोगों के लिए जिम्मेदार हैं।

एक अध्ययन के बाद यह चेतावनी दी गयी है कि हेयर डाई का अत्यधिक प्रयोग कैंसर को निमंत्रण देने जैसा है। स्वास्थ्य विशेषज्ञों का मानना है कि नेल पॉलिश और लिपिस्टिक ये दोनों सौन्दर्य प्रसाधन इस कारण भी सर्वाधिक घातक सिद्ध होते हैं इनके विषैले तत्व मुंह के द्वारा सीधे पेट में पहुंज जात हैं। जिसमे आंतरिक स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। ऊपर से त्वचा को सुन्दर एवं चिकना बनाने वाला पाउडर भी अनेक त्वचा रोगों के लिए जिम्मेदार है। इसमें तारकोल जैसा खतरनाक पदार्थ होता है।

स्पष्ट है कि स्वास्थ्य एवं सुन्दरता को प्राकृतिक ढंग से सजाया–संवारा जाना बेहतर है। दूध, हल्दी, गुलाब जल, खीरा, आंवला, मेंहदी आदि मिल जाता है जो त्वचा को अच्छी तरह निखार कर संवार देता है। इन सैकड़ों सजह–सुलभ प्राकृतिक व घरेलू उपयोग की चीजों से स्वास्थ्यप्रद सौन्दर्य पाया जाता है न कि कृत्रिम सौन्दर्य प्रसाधनों से।

प्राचीन समय के लोगों को ऐसे प्राकृतिक उपायों की जानकारी थी, जिससे वे स्थायी सौन्दर्य प्राप्त करते थे। अपना देश तो प्राकृतिक जड़ी–बूटियों की सम्पदा का अनोखा भंडार भी है। ऐसे में अच्छा यही है कि हमारे यहां के लोग इन प्राकृतिक औषधियों एवं घरेलू नुस्खों को ही अपनाएं। ऐसा करने से सौन्दर्य में तो निखार आएगा ही साथ ही रासायनिक वस्तुओं की हानियों से भी बचा जा सकता है।

मकबरों में देखते हैं
अपनी इन आंखों से रोज
ये ब्रादर ये पिदर
ये ख्वेश ये फरजन्द हैं
फिर भी रअनाई से ठोकर
मार कर चलते हैं यार
सूझता इतना नहीं सब
खाक के पैवन्द हैं।

काबा के मुताबिक चलें दुनिया भर की घड़ियां

कान्ति से ग्रहीत

हैरत मत कीजिए, सच्चाई यही है कि दुनिया में वक्त का निर्धारण काबा को केन्द्रित करके किया जाना चाहिए क्योंकि काबा दुनिया के बीचो बीच है। इजिप्टियन रिसर्च सेन्टर यह साबित कर चुका है। सेन्टर का दावा है कि ग्रीनविचमीन टाइम में खामियां हैं।

ग्रीनविच टाइम को मानक समय बनाकर पूरी दुनिया पर थोप दिया गया। डॉ० अब्दुल बासित सैयद के मुताबिक ग्रीनविच टाइम में समस्या यह है कि ग्रीनविच रेखा पर धरती की चुम्बकीय क्षमता ८.५ डिग्री है जबकि मक्का में चुम्बकीय क्षमता शून्य है।

डॉ. सैयद के अनुसार शून्य डिग्री चुम्बकीय क्षमता वाले स्थान को आधार मानकर टाइम का निर्धारण ही वैज्ञानिक रूप से सही है। जीरो डिग्री चुम्बकीय क्षमता दोनों ध्रुवों के बीच में यानी दुनिया के केन्द्र में होगी। अगर काबा में कंपास रखा जाता है तो कंपास की सुई नहीं हिलेगी क्योंकि वहां से उत्तरी और दक्षिणी गोलार्द्ध बराबर दूरी पर है। डॉ. अब्दुल बासित कहते हैं कि चांद पर जाने वाले नील आर्मस्टांग भी मान चुके हैं कि काबा दुनिया के बीचो–बीच है। जब अंतरिक्ष से पृथ्वी के फोटो लिए गये थे तो मालूम हुआ कि काबा से खास किस्म की अनन्त किरणें निकल रही हैं।

डॉ. अब्दुल बासित सैयद ने एक टीवी चैनल को दिये अपने इंटरव्यू में इन सब बातों का खुलासा किया। उन्होंने बताया कि ग्रीन विचमीन टाइम के अनुसार उत्तरी और दक्षिणी गोलार्द्ध के बीच साढ़े आठ मिनट का फर्क पड़ जाता है। जो इस टाइम्स निर्धारण की खामी को उजागर करता है। टाइम्स निर्धारण की इस गड्मड् से हवाई यातायात में व्यवधान पैदा हो जाता है। यही वजह है कि हवाई यातायात के दौरान इन साढ़े आठ मिनटों को एडजेस्ट करके हवाई यातायात का संचालन किया जाता है। अगर काबा को केन्द्रित रखकर समय तय हो तो साढ़े आठ मिनट वाली परेशानी भी दूर हो जाएगी।

डॉ० सैयद के मुताबिक मक्का में धरती की चुम्बकीय क्षमता जीरो डिग्री होने से वहां जाने वाले लोगों को सेहत के हिसाब से भी काफी फायदा होता है, क्योंकि उन्हें वहां एक खास तरह की ऊर्जा हासिल होती है। जब कोई मक्का में होता है तो उस व्यक्ति के रक्त की आक्सीजन ग्रहण करने की क्षमता दुनिया के अन्य स्थानों से कहीं अधिक होती है। मक्का में आपको अधिक मेहनत करने की जरूरत नहीं पड़ती। यही वजह है कि अच्छी तरह नहीं चल पाने वाला बुजुर्ग व्यक्ति भी हज के दौरान जबर्दस्त भीड़ होने के बावजूद काबा का तवाफ उत्साहित होकर कर लेता है। वहां लोग ऊर्जा से भरे होते हैं क्योंकि वे उस खास मकाम पर होते हैं जहां धरती का चुम्बकीय बल जीरो है।

वे आगे बताते हैं – मानव संरचना के बारे में इल्म रखने वाला व्यक्ति जानता है कि शरीर के सभी प्रवाह दायीं ओर है। अब कोई व्यक्ति काबा का तवाफ करता है, जो घड़ी की विपरीत दिशा में यानी दायीं तरफ से बायीं तरफ होता है, तो वह ऊर्जा से भरपूर हो जाता है। तवाफ से शरीर के दायीं ओर के प्रवाह को अधिक गति मिलती है और ऊर्जा हासिल होती है।

इन सब बातों से जाहिर होता है कि अल्लाह ने अपने घर को कितना बुलंद मकाम अता किया है।

(पृष्ठ ३६ का शेष)

में जानकारी देते हैं।

रिसर्च की राहें : (१) फिजिक्स, कमेस्ट्री और बायोलाजी या गणित (पीसीबी, पीसीएम) के साथ १०+२ पास करने के बाद ग्रेजुएशन और पोस्ट ग्रेजुएशन की पढ़ाई। (२) फिजिक्स, केमेस्ट्री और गणित विषय के साथ १०+२ की परीक्षा पास करने के बाद केमिकल इंजीनियरिंग में ग्रेजुएशन की डिग्री लेने के बाद एम०ई० या एम०टेक करना। (३) केमेस्ट्री में ग्रेजुएट विद्यार्थी अगर चाहें तो पोस्टग्रेजुएशन की डिग्री प्राप्त करने के बाद रिसर्च से भी जुड़ सकते हैं। डाक्ट्री लाइन में १०+२ के बाद जा सकते हैं किन्तु इण्टर में कुल प्राप्तांक ५० प्रतिशत से कम न हो, और रिसर्च के लिए पोस्ट ग्रेजुशन के विषय में न्यूनतम ५५ प्रतिशत प्राप्तांक का होना जरूरी है। रिसर्च की न्यूनतम अवध बाईस महीना है। (राष्ट्रीय सहारा उर्दू से साभार)

प्रस्तुति : एम. हसन अंसारी ।

गुजरात नरसंहार का सुबूत सहित सच
अब सजा से दूर क्यों है मुसलमानों के हत्यारे?

रहमानी

गुजरात में मुसलमानों का जिस बेरहमी और नृशंस तरीके से नरसंहार किया गया उसका सच तभी सामने आ गया था। लेकिन तब सुबूत का सवाल खड़ा हो गया था। सुबूत मांगे जा रहे थे। देश ही नहीं दुनिया के इस कत्लेआम की खबरों से रोंगटे खड़े हो गये थे। लेकिन अब तहलका और टुडे ग्रुप के माध्यम से वह छुपी हुई सच्चाई मय सुबूत के साथ सामने लायी गयी है जिसके बारे में लोग बात तो करते थे मगर सुबूत के लिए इधर–उधर देखते थे।

हत्यारों, बलात्कारियों और नरपिशाचों ने यह कबूल किया कि यह गौरवपूर्ण कार्य उन्हीं ने किया था। लेकिन गुनहगारों, हत्यारों, बलात्कारियों, उनके श्रयदाताओं, हमदर्दों और उन्हें इस महापाप करने के लिए उकसाने वालों के चेहरों पर पश्चाताप का कोई भाव नहीं। इस बात का प्रमाण है कि वे कलंकी न तो देशभक्त हैं, न हिन्दू हैं और न मनुष्य हैं। किसी कौम विशेष की जिस नृशंस तरीके से हत्या की गयी उसको अंजाम देने वाले सिर्फ राक्षस ही हो सकते हैं मानवता पर कलंक ये लोग आज भी अपने आप को गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं और किये गये कुकृत्यों को सही ठहराने का प्रयास कर रहे हैं। यह उनका नहीं देश का दुर्भाग्य है।

इससे पहले कि कलंक आपरेशन परिषद, बजरंगदल, शिवसेना और भाजपा के बारे में कोई बात करें मुझे इससे पहले दो बातें याद आ रही हैं। एक, कुछ लोग ऐसे होते हैं जो बुरा काम करने के बारे में सोचने की हिम्मत तक नहीं कर पाते। कुछ आदमी थाने जाने तक से शर्म महसूस करते हैं, तो कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो थाने में मार खाने और जेल जाने के बाद भी उनके चेहरे पर लज्जा का भाव नहीं होता है। उलट उन लोगों को यह कहते हुए सुना जा सकता है, हां मेरा क्या बिगड़ गया चार डंडे ही मार लिए। कुछ दिन जेल ही में तो रहना पड़ा। मुझ पर क्या फर्क पड़ गया। अपन तो जेल में भी बड़े मजे से रहे हैं। बेशर्मी की पराकाष्ठा है। दो, एक दार्शनिक/कलाकार ने कहीं कहा है कि जो व्यक्ति गलती करने के बाद पश्चाताप कर लेता है वह मनुष्य नहीं देवता है और जो लोग गलती करने के बाद भी जानबूझ कर गलती दोहराते हैं वह मनुष्य नहीं राक्षस है। ऐसा ही भाजपा, विहिप एंड कंपनी का चरित्र है।

अब बात कलंक आपरेशन की। यहां यह सवाल बार–बार उठाया जा रहा है कि कलंक आपरेशन करने की क्या जरूरत थी? भाजपा–विश्व हिन्दू परिषद एंड कंपनी यह कह रही है कि पैसे देकर और राजनीतिक लाभ उठाने के लिए यह स्टिंग आपरेशन किया या कराया गया। हो सकता है कि इस आपरेशन से कुछ राजनीतिक पार्टियां लाभ उठाने की कोशिश भी करें लेकिन इस कलंक आपरेशन का मुख्य उद्देश्य उन दरिन्दों को अपने किये उस कार्य जिससे मानवता शर्मसार हुई और भारत की छवि को बट्टा लगा, का एहसास कराना और पछतावा करने का मौका था लेकिन ऐसा हुआ नहीं है।

भाजपा के शूरवीर और परिषद के देशभक्त लगातार इस जघन्य हत्याकांड के समर्थन में टीवी पर दलीलें पेश करते देखेग गये। ऐसा नहीं है कि तहलका ने जो जानकारी दी है वह कोई नयी है या फिर इस बारे में लोगों को पता नहीं है। नयी बात यह है कि इसमें उन लोगों से यह कबूल करते दिखाया गया है कि उन्होंने अपने हाथों से इस निर्मम हत्याकांड को कैसे अंजाम दिया। लोगों को बाबू बजरंगी, नरेन्द्र मोदी, पुलिस प्रशासन, वहां के गृह मंत्री तथा अन्य नेताओं और लोगों के बारे में पहले ही पता था। लेकिन तहलका ने इसे सुबूत के साथ पेश किया है।

• बाबू बजरंगी ने बताया कि मैंने मुस्लिम गर्भवती महिला का तलवार से पेट चीरकर उसके बच्चे को निकाल कर फेंक दिया था। दंगाइयों ने प्रदेश के गृहमंत्री जडाफिया के घर मदद मांगी थी। मोदी ने मुझे जेल से छुड़ाया था। जब मैंने हत्याएं की तो मोदी ने मुझे शाबाशी दी थी। विधायक हरेश भट्ट ने माना कि मुसलमानों को मार के लिए उनकी पटाखा फैक्ट्री में बम बने थे। मुस्लिम बस्तियों में फेंकने के लिए पुलिस की मदद से रॉकेट लांचर लाए गए थे। मोदी ने मुसलमानों का

नामोनिशान मिटाने के लिए तीन दिन का समय दिया था। बीएचपी नेता मदन धनराज धवन ने माना, दंगों में पुलिस की मदद से डायनामाइट का इस्तेमाल किया गया था। कांग्रेस नेता एहसान जाफरी के पहले हाथ–पैर और गुप्तांग काटे फिर उसे जलाया था।

टीवी पर हैरत अंगेज बात देखने को मिली कि परिषद के एक बुजुर्ग नेता को यह कहते सुना कि तहलका ने ऐसे बयान देने के लिए उन लोगों को मोटी रकम दी होगी तब उन्होंने ये बयान दिये होंगे। चलिये! आपकी ही बात मान ली, तो क्या आपके देशभक्त शूरवीर बिकाऊ भी हैं और हां तो आपको इन लोगों पर कैसा गर्व? बिक जाना तो आपके बहादुरों की फितरत है? अगर वह बिक सकते हैं तो आप क्यों नहीं?

बाबू बजरंगी को अब भाजपा और परिषद के नेता पागल बता रहे हैं अगर वह पागल हैं तो फिर उसे मुसलमानों की हत्याएं करने और गर्भवती महिला का पेट चीर कर गर्भ बाहर फेंकने पर शाबाशी क्यों दी गयी। मोदी ने मुसलमानों को मारने के लिए उन्मादियों, पुलिस प्रशासन, नेताओं और गुंडों को तीन दिन का समय क्यों दिया? हैरत और अफसोस की बात यह है कि भाजपा और परिषद अपने ही आदमियों को रिश्वतखोर और भ्रष्ट तो बता रही है मगर किसी ने यह नही कहा कि जो लोग सुबूत सहित पकड़े गये हैं उन्हें सजा दी जाए।

अगर भाजपा एंड कंपनी का यह तर्क है तो हमारे कुछ लोग बिक गये तो फिर मुसलमानों या किसी दूसरे धर्म में ऐसे लोग क्यों नहीं हो सकते? अगर चन्द आतंकवादियों के कारण पूरी को गद्दार देशद्रोही और उनकी हत्या करने लायक माना जा सकता है तो फिर आपकी पार्टी, परिषद, बजरंग दल देशद्रोही और गद्दार क्यों नहीं? अगर गुजरात दंगे क्रिया की प्रतिक्रिया थी तो फिर ६ दिसम्बर १९९२ को बाबरी मस्जिद शहीद की गयी तब कौन–सी प्रतिक्रिया थी? दरअसल गुजरात में जो मुस्लिम नरसंहार हुआ वह प्रतिक्रिया नहीं थी बल्कि एक सुनियोजित कार्यक्रम था। १९९२ में बाबरी मस्जिद विध्वंस के समय कम से कम कल्याण सरकार को बर्खास्त तो कर दिया गया था लेकिन गुजरात सरकार निर्धुंध चल रही है।

भाजपाई और परिषदी मुसलमानों की हत्याओं, बलात्कार और लूट की घटनाओं को यह कहकर दरकिनार करने की कोशिश कर देखे/सुने गये कि गुजरात देश का सबसे अधिक विकसित प्रांत है। क्या किसी विकसित प्रांत, देश या समाज के मुखिया को यह अधिकार मिल जाता है कि वह किसी दूसरे समुदाय विशेष की हत्याएं करे या कराए?

यह कैसा प्रजातंत्र है? यह निर्लज्जता की पराकष्ठा है कि इतना सब कुछ होने के बाद भी मोदी गद्दी पर बैठे हैं। मोदी, भाजपा और उसके सहयोगी संगठनों को इस लोमहर्षक हत्याकांड का लेशमात्र भी पछतावा होता तो मोदी ब्रांड को पूरे देश में लागू करने की बात नहीं की जाती। इस बात की कोशिश की गयी कि बिहार और उत्तर प्रदेश के चुनावों में भाजपा का स्टार प्रचारक मोदी को बनाकर भेजा जाए। अगर उन लोगों को अपराध बोध होता तो विजय दिवस और शौर्य दिवस नहीं मनाते।

एक प्रश्न यह है कि केन्द्र सरकार और सुप्रीम कोर्ट को अब किस साक्ष्य की और जरूरत रह गयी है जो मोदी, बाबू बजरंगी, हरेश भट्ट, मदन धनराज धवल, अरविन्द पांड्या जैसे लोगों को सजा नहीं दी जा रही है। संजय दत्त सहित अनेक लोगों को मुंबई बम काण्ड में सिर्फ इसलिए सजा मिली कि उनेंने खुद हादसे नहीं किया लेकिन उन्होंने लोगों को बम काण्ड करने के लिए उकसाया, उनकी मदद की या फिर उन्हें शरण दी। जब मुम्बई कांड के दोषियों को ऐसे मामले में सजा मिल सकती है तो फिर मोदी एण्ड कंपनी क्यों छुट्टा घूम रही है? उन पर हत्याएं करने, हत्याएं करने के लिए उकसाने/प्रोत्साहित करने, उन्मादियों को प्रश्रय देने जैसी दफाएं लगाकर क्यों नहीं मौत के झूले पर लटकाया जाता? सरकारी वकील अरविंद पांड्या ने खुद माना है कि उन्होंने गवाहों, वकीलों और न्यायाधीशों को मैनेज किया है।

ध्यान दीजिए

आपने कितने लोगों की जनाज़े की नमाज़ में शिरकत की? कितने लोगों को दफ़्न किया? जब आप छोटे थे तो आप के खान्दान मे कितने लोग थे? अब उन में से कौन कौन नहीं है? आख़िर यह लोग कहां गये? हम को आप को भी एक रोज़ जाना है। पस बुद्धिमान वह है जो अगले जीवन का सामान करे।

कैरियर - क्या करें ?

बेरोजगार शिक्षित युवा वर्ग के लिए

इदारा

केमेस्ट्री में चमकता कैरियर

किसी भी मुल्क की तरक्की व खुशहाली उसकी तकनीकी तरक्की से नापी जाती है। इस हवाले से वैज्ञानिकों का काम उनकी नजर और सोच विशेष महत्व रखती है। देश में पचास हजार से अधिक रासायनिक वस्तुओं की पैदावार तथा प्रयोग होता है। इस लेहाज से विभिन्न क्षेत्रों में कमेस्ट्री के वैज्ञानिकों की बड़ी मांग रहती है। केमेस्ट्री (रसायन विज्ञान) से प्रत्यक्ष (डाइरेक्ट) तथा अप्रत्यक्ष (इनडाइरेक्ट) रूप से अनेक क्षेत्र जुड़े हुए हैं। इस प्रकार इस विषय में शोध (रिसर्च) तथा रोजगार की विशाल सम्भावनायें हैं।

उच्च शिक्षा में एक विषय के रूप में रसायन विज्ञान की पढ़ाई के लिए मजबूत साइंसी रसायन शास्त्र में ग्रेजुएटों और पोस्ट ग्रेजुएटों के लिये। (१) कपड़ा उद्योग तथा पेट्रोलियम (२) प्लास्टिक, काश्तकारी, कागज, दवा, खाद, पेन्टस, खाद्य सामग्री, कास्मेटिक्स, खुशबू, व श्रंगार की वस्तुओं से जुड़े उद्योगों में विशाल अवसर होते हैं। (३) बिजली पेपर और पल्प, धातु, सीमेन्ट तथा सरोस्पेस उद्योगों में भी रसायन शास्त्र के विद्यार्थियों की बहुत मांग है। (४) पानी को साफ करने, सफाई और सीवेज ट्रीटमेंट प्लान्ट में अच्छी तन्ख्वाह और सहूलियात है। (५) खाने वाले रसायन और तकनीक खाने के फ्लेवर जानवरों का खाना और खाने को ताजा बनाये रखने के मैदान में खोज व पैदावार की सम्भावनाओं के अनुसार कैरियर की अनेक सम्भावनायें हैं। (६) रसायन शास्त्र के क्षेत्र में ग्रेजुएट पोस्ट ग्रेजुएट, बिक्री, बाजारकारी तथा मैनेजमेन्ट, पेटेन्ट कानून, कीमिया के कारोबार बाजार तथा रिसर्च के क्षेत्र में भी काम करते हैं। रिसर्च लैब में अक्सर पीएचडी डिग्री धारी ही लिये जाते हैं। (७) कमेस्ट्री में डिग्री प्राप्त महिलाओं को नियुक्ति मिलती है। इसके लिए बायोकेमेस्ट्री, आर्गेनिक कमेस्ट्री में पोस्टग्रेजुएट डिग्री होनी चाहिए। रसायन शास्त्र में स्नातकों (ग्रेजुएटों) कोड आर्मी आर्डीनेंस को में आसानी से प्रवेश मिल जाता है। (८) केमिस्ट और कमेस्ट्री इंजीनियरों को उन सलाहकार क्षेत्रों में भी सेवा का अवसर मिलता है, जो उन की रिसर्च की विशेषताओं वाले क्षेत्रों में एक विशेषज्ञ की हैसियत से राय देते हैं।

कार्यक्षेत्र –

केमेस्ट्री साइंसदानों के लिए कार्य क्षेत्र उनकी विशेषता पर निर्भर करता है। यह निर्मित या अनिर्मित वस्तुओं के किसी भी मैदान में काम कर सकते हैं। अनिर्मित रसायनिक विज्ञान विशेषज्ञ तथा तकनीकी व मैनेजिंग स्टाफ मार्केटिंग और प्रशासनिक अधिकारी के रूप में काम कर सकते हैं।

रसायन शास्त्र के निम्नलिखित क्षेत्र में केमेस्ट्री के ज्यादा तर साइंटिस्ट स्पेशलाइजेशन हासिल करते हैं –

१. प्रयोगिक रसायन वैज्ञानिक आर्गेनिक तथा इनआर्गेनिक नमूनों का रायायनिक विश्लेषण करके उनसे सम्बन्धित कठिन उपायों और उनकी विशेषताओं का पता लगाते हैं। वह अपनी खोजों से सम्बन्धित विश्लेषण को डाक्टरों को बता कर संख्यात्मक विवेचना भी करते हैं।

२. आर्गेनिक रसायन वैज्ञानिक आर्गेनिक कारबन कम्पाउंड पर काम करते हैं। यह पेट्रोलियम डाई, रबर अल्कोहन, तेल, कुदरती चर्बी, तेजाब, कीटनाशक, आर्गेनिक कम्पाउंड और उनके पालीमर तैयार करने और प्लास्टिक व साबुन जैसी चीजें तैयार करने में माहिर होते हैं।

३. इन आर्गेनिक रसायन वैज्ञानिक धातु, तेजाब, नमक तथा गैस पर काम करते हैं। और इन की पैदावार में विशिष्टता प्राप्त करते हैं।

४. फिजिकल केमेस्ट्री के वैज्ञानिक धातु, खनिज गैस तथा विभिन्न वस्तुओं पर काम करके उनके भौतिक गुणों तथा विभिन्न वस्तुओं पर काम करके उनके भौतिक गुणों की खोज करते हैं। इसके अन्तर्गत तैयार चीजों की रेडियो ऐक्टीविटी, बनावट, आणविक तथा ऐटमी विशेषता आदि आते हैं।

५. औद्योगिक रसायन के वैज्ञानिक विशेषकर पैदावार के नमूनों की जांच का काम करते हैं।

६. रसायन इंजीनियर रासायनिक उत्पादों के तरीके तथा औजार डिजाइन करते हैं।

७. इंजीनियरिंग रसायन तकनीक के विशेषज्ञ खास तौर पर उत्पादन विधि के लिए काम करते हैं। साथ ही मार्केटिंग की रणनीति बनाकर उपभोक्ताओं को निर्मित वस्तुओं के बारे

(शेष पृष्ठ ३३ पर)

वैलेन्टाइन डे-इतिहास के दर्पण में

एन. साकिब अब्बासी

ढाई अक्षर का प्रेम शब्द एक ऐसा शब्द है जिसका अर्थ कायनात का हर प्राणी जानता है। विश्व का हर धर्म, देश, संस्कृति तथा भाषा एक दूसरे से प्रेम करने पर बल देते हैं किन्तु इसी ढाई अक्षर शब्द के कारण अनगिनत लोगों को अन्धे और बरबाद होते देखा गया है, इन दीवानों ने जब भी अनैतिक प्रेम की ढफ्ली बजाई है तो सभ्य समाज ने दुत्कारा है, नैतिक प्रेम का कोई विरोधी नहीं परन्तु जब अनैतिक प्रेम के कारण सभ्य समाज पर आंच आने लगती है और हमारे बड़ों व पूर्वजों की पगड़ियाँ सरे बाजार उछलने लगती हैं तो सभ्य समाज अपना रोद्र रूप धारण करने पर मजबूर हो जाता है। वर्तमान परिवेश में १४ फरवरी अर्थात वैलेन्टाइन डे का ज्वर भारतीय युवा पीढ़ी के सिर चढ़कर बोलने लगा है, और कहीं कहीं तो ये दिवस युवा पीढ़ी के लिए अपने धार्मिक व राष्ट्रीय पर्व से अधिक महत्व रखने लगा है किन्तु विश्वास के साथ कहा जा सकता है कि अधिकांश युवाओं को वैलेन्टाइन डे के सम्बन्ध में जानकारी नहीं है आइये इस पर एक दूरदृष्टि डालते हैं।

इतिहास में तीन संत वैलेन्टाइन के नाम आते है और संयोग से तीनों की मृत्यु १४ फरवरी को ही है। कहा जाता है कि रोम में एक क्लाडियस नाम का राजा था जिसे अपने साम्राज्य विस्तार की सनक सवार थी अतः वह अपनी सेना के साथ शत्रुओं से युद्ध के लिए निकला परन्तु उसे लगातार पराजय का सामना करना पड़ा। ज्ञात करने पर पता चला कि सेना के युवाओं का अपनी प्रेमिकाओं से अनैतिक सम्बन्ध है जिसके कारण वह पूरी शक्ति से युद्ध नहीं कर पाते हैं। तब राजा क्लाडियस ने आदेश दिया कि कोई भी पादरी सेना के युवाओं का विवाह न कराए किन्तु एक पादरी ने आदेश का उल्लंघन किया जिसका नाम वैलेन्टाइन था जो गोपनीय ढंग से सेना के युवाओं का विवाह उनकी प्रेमिकाओं से करा देता था। जब राजा को इस बात की भनक लगी तो बड़ा क्रोधित हुआ और पादरी को कारागार में डाल दिया, इसी बीच कारागार में जेलर की बेटी से उसे प्रेम हो गया और जेलर व उसकी बेटी वैलेन्टाइन के बहकावे में आकर इसाई धर्म स्वीकार करलिया। जब इस अनैतिक सम्बन्ध का समाचार राजा को मिला तो उसने पादरी को ये सन्देश भेजा कि अगर वह रोमी धर्म स्वीकार कर ले तो उसे छोड़ दिया जायेगा किन्तु वैलेन्टाइन ने इसे अस्वीकार कर दिया, अतः १४ फरवरी को उसे फांसी दे दी गयी। ईसाइयों ने उस पादरी के कथित महान बलिदान के मद्देनजर उसे संत की उपाधि दी और १४ फरवरी का नाम वैलेन्टाइन डे रख कर बतौर जश्न मनाने लगे। इसी प्रकार एक और वैलेन्टाइन नाम का व्यक्ति था जो ऐन्टरऐमा का बिशप था और २७० ए०डी० में रोम में मारा गया। तीसरे वैलेन्टाइन के सम्बन्ध में इतना ही ज्ञात हो सका कि वह अफ्रीकियों को ईसाई बनाते समय मारा गया।

ईसाइयों के धर्म गुरू पोप जैलासिक ने ४९६ ए०डी० में इन तीनों की मृत्यु तिथि १४ फरवरी को बलिदान दिवस के रूप में मनाने का निर्णय लिया। दिलचस्प बात ये है कि १९६१ में रोमन कैथोलिक कैलेन्डर से १४ फरवरी को सेन्ट वैलेन्टाइन डे के रूप में हटा दिया गया था। वास्तव में देखा जाये तो वैलेन्टाइन कार्ड या उपहार भेजने की प्रथा ईसाई धर्म से प्राचीन और रोम की प्राचीन संस्कृति से जुड़ी है। रोम की स्थापना दो भाइयों रोमुलस और रेमस ने की थी। बचपन में इनको भेड़ियों ने एक गुफा में पाला था, वह गुफा आगे चलकर लुपरकल कहलाई। गुफा जिस पहाड़ी पर थी वह रोमन साम्राज्य का केन्द्र बनी। यहां के पुजारी जिन्हें लुपरकाई कहा जाता था, बकरी की खाल ओढ़ कर एक चाबुक से रोमन स्त्रियों को स्पर्श करते थे जिससे लोगों में संतान वृद्धि का अंधविश्वास था। रोमन भाषा में कोड़ो को फेब्रुआ कहते हैं, आगे चलकर इसी फेब्रुआ शब्द से फेब्रुअरी महीने का नाम पड़ा।

कुछ लोगों के अनुसार इस दिन का सम्बन्ध रोमवासियों के त्योहार ल्योपरकेलिया से है। उस दिन रोमवासी अपने देवता–योनो की याद में जश्न मनाते थे और वहां मौजूद लड़कियां अपने नामों को शीशे के एक बर्तन में डाल देती थीं। उस बर्तन के पास मुहल्ले के सभी युवा लड़के जमा होते और लाटरी के अन्दाज में वह नाम निकालते

जिस के हाथ जो नाम लगता उसी के साथ जश्न मनाता था। इस प्रथा को मनाने की शुरूआत का स्पष्ट ज्ञान नहीं हो सका है।

अब मुसलमान युवाओं या समस्त गैर ईसाई युवाओं को तय करना है कि वह किस वैलेन्टाइन की याद में जश्न मना रहे हैं और किस संस्कृति को बढ़ावा दे रहे हैं। क्या हम उसकी संस्कृति और सभ्यता को बढ़ावा नहीं दे रहे हैं जिसने हमें सदियों गुलाम बनाये रखा और हमारे ऊपर अत्याचार के पहाड़ तोड़े? आखिर हम उनकी संस्कृति को क्यों बढ़ावा दे रहे हैं? क्या वह हमारी संस्कृति को और हमारे तौर तरीके को पसंद करते हैं ?

हमारे नौजवान चाहे वह मुस्लिम हों या गैर मुस्लिम दोनों से हमारा प्रश्न है कि तुम वैलेन्टाइन डे मना कर कौन सा काबिले तारीफ काम कर रहे हो। इसको तो गुमराहों का जश्न कहना ज्यादा सही होगा बेहयाई व बदलचनी का प्रदर्शन होता है। बहर हाल इस्लाम में तो इसकी सिरे से गुंजाइश नहीं, गैर मुस्लिम दानिश्वर स्वयं निर्णय लें।

मोबाइल के अधिक प्रयोग से नामर्दी का भय

नई दिल्ली । मोबाइल फोन की रेडयाई लहरों की ताब्कारी का मानवी स्वास्थ और विशेषकर मर्दों की बच्चा पैदा करने की योग्यता पर प्रभाव पड़ता है और भारतीय वैज्ञानिक इसविषय पर दो वर्षों में अन्तिम बात कहने की पोजीशन में पहुंच सकते हैं। स्वास्थ्य मंत्री डा० अम्बो मुनी राम दास ने एक प्रश्न के लिखित उत्तर में बताया कि इस विषय पर इन्डियन इंस्टीट्यूट आफ मेडिकल रिसर्च में अन्वेषण चालित है और इस का प्रोटोकोल बना रही है। उन्होंने बताया कि यह अन्वेषण दो वर्षों में पूरे हो जाने की आशा है। स्वस्थ्य मंत्री ने आईआईएआर के सन्दर्भ से बताया कि रेडियो फ्रेन्कुवेन्सी रेडीएशन से सेकोरेटी या खतरे के सम्बन्ध में कोई स्पष्ट सुबूत नहीं है परन्तु साइन्सी तहकीक से इस बात के संकेत मिले हैं कि इनका मानवी स्वस्थ पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है, इसी लिये शासन ने इस पर नियति रूप से अन्वेषण का निर्णय लिया है।

सत्य प्रकाश

कमल रामनगरी

मान ले काश अल्लाह को रब आदमी
फिर तो हो जाएं हम सबके सब आदमी
देन नवयुग नयी सभ्यता की है यह
हो गया बेहया बेअदब आदमी
कितना कृपालु, कितना दयावान है
दास हैं जिसके दुनिया के सब आदमी
औरों से फिर कोई वस्तु क्यों मांगें वो
पाए हर वस्तु जब बेतलब आदमी
पुण्य की ज्योति से जगमगाता है वह
पाप से दूर रहता है जब आदमी
लोक–परलोक दोनों में कल्याण हो
सीख ले काश जीने का ढब आदमी
कोई देखो तनिक युग के प्रभाव को
पहले कैसे थे, कैसे हैं अब आदमी
शान्ति, सुख–चैन जीवन में पाते नहीं
धर्म से दूर हो जाए जब आदमी
मानव–मानव में अब प्रेम बाकी नहीं
जुल्म ढाते हैं अब बेसबब आदमी
खौफ हृदय से ईश्वर का जाता रहा
पाप करते हैं अब रोजो शब आदमी
आदमीयत तो ढूंढे से मिलती नहीं
यूं हैं दुनिया में अरबों अरब आदमी
जिसको ईश्वर के होने में सन्देह है
सोचो कितना है वह भी अजब आदमी।

ऐ मालिके अर्शेबरीं

अमतुल्लाह अज़ीज़

ऐ मालिके अर्शे बरीं
कर तू मुझे रुस्वा नहीं
ऐसा न हो तेरे तईं
बरबाद हो जाऊं कहीं
रहमो करम वक़्ते हिसाब
अपना न कर मुझ पर इताव

अपने नबी की ऐ ख़ुदा
मुझ को शफ़ाअत कर अता
हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा
हाथों से उन के तू पिला
कौसर के मुझ को जाम तू
और दूर कर आलाम तू

मुझको तेरा दीदार हो
क़िस्मत मेरी बेदार हो
बेदाग हर किरदार हो
बेड़ा मेरा फिर पार हो
अल्लाह तेरा नाम है
तेरा करम तो आम है

जन्नत में कर दाख़िल ख़ुदा
नारे जहन्नम से बचा
लुत्फ़ो करम से कर अता
क़ुर्बे नबी ख़ौरुल वरा
दीदार तेरा हो नसीब
मेरी दुआ सुन ले मुजीब

बेहतर बना दुन्या मेरी
दे आख़िरत में बरतरी
महफ़ूज़ रख जां को मेरी
नारे जहन्नम से वली
ऐ अफ़्व मुतआलो वदूद
जन्नत का हासिल हो ख़ुलूद

दर की तेरी मैं हूं गदा
कब से मैं देती हूं सदा
कासा मेरा भर दे ख़ुदा
हों रहमतें नाज़िल सदा
मुनअ़िम है तू मन्नान है
मोमिन है तू हन्नान है।

वैद्य की सलाह

डॉ० अजय शर्मा

प्रश्न : तेजाब बहुत बनता शरीर में थकान रहती है।

उत्तर : हल्का भोजन लें। साथ में बतीना चूर्ण एक चम्मच सुबह शाम ताजे पानी से लें। एसिड नहीं बनेगा।

प्रश्न : नजर कम हो रही है चश्मा जल्दी जल्दी बदलना पड़ रहा है। परामर्श का आग्रह है।

उत्तर : आप मान्यवर त्रिफला चूर्ण एक चम्मच सुबह और शाम लें। तली भूजी चीज कम लें। पंचासव सुबह शाम ले।

प्रश्न : मेरा मासिक ठीक नहीं रहता है। क्या करूं।

उत्तर : सुबह शाम अवलारी सीरप २–२ चम्मच सुबह शाम २–४ मास ले ले। सब ठीक रहेगा।

प्रश्न : मैं वर्षों से मधुमेह का रोगी हूं। पमरार्श का आग्रह है।

उत्तर : सब से पहले आप नानवेज छोड़ें। सुबह शाम ताजी हरी सब्जी का सेवन करें। यथा सम्भव शाम हरी घास पर टहलें। पेट साफ रखें। सुबह शाम २–२ ग्राम नसकूर ले। शर्तिया आराम होगा।

प्रश्न : मैं अपने पिता जी के लिए सलाह चाहता हूं। कैसे क्या करूं।

उत्तर : ६२३५७८७५१६ पर बात कर सकते हैं। सच्चा राही के पाठकों के लिए मेरा मशविरा निःशुल्क रहता है।

प्रश्नः मेरा लड़का ७ वर्ष का है। पोलिया ग्रस्त क्या करूं ?

उत्तर : बलारिस्ट ४–४ चम्मच दोपहर शाम पानी से दो महा नारायण तेल की मालिश करें। आराम मिलेगा।

प्रश्न : मेरे पेट में अकसर कीड़े हो जाते है। कोई देशी दवा बतायें।

उत्तर : २–३ नीम दल रोजाना निहार मुंह ले। रोग चला जायेगा।

प्रश्न : मेरे वालिद की आयु ७० वर्ष है। उच्च रक्त चाप से परेशान रहते है। मैं उन की क्या मदद कर सकती हूं।

उत्तर : आप पिता जी को सुबह पपीता और गाय का दूध नाश्ते में दे। रात में सोते समय २ कै० ब्राहनी व २ गो० हृदयविरण रस की ४–५ महीने दे रोग चला जायेगा।

प्रश्न : मेरी उम्र ३० वर्ष है मोटापा बहुत है। चलने फिरने में परेशानी होती है। क्या करूं।

उत्तर : आप सेब शाम को रोजाना लें। साथ में बायोसलिम कैप्सूल लें। मोटापा कम होगा।

प्रश्न : मेरी उम्र ज्यादा नहीं है लेकिन लिंग में तनाव पूरा नहीं आता है बहुत परेशान हूं।

उत्तर : आप ताजा और हल्का भोजन लें। सुबह शाम दूध से बी ई वन कैपसूल २–४ मास लें। सुबह ३–४ बादाम लें। जेहनी तनाव छोड़ें।

मेरी शादी को चार साल हो रहा है। बच्चा नहीं ठहर रहा है। क्या करूं। घर वाले परेशान करते हैं।

उत्तर : आप गर्भ पाल रस २–२ गोली सुबह शाम लें। साथ में २–२ गोली एलीयूज कम्पाउण्ड लें।

प्रश्न : मेरे चार वर्षों से सफेद दाग है।

उत्तर : बी प्यूर सीरप ४–४ चम्मच सुबह शाम लें। डरमेक्स कैप्सूल सुबह शाम लें।

प्रश्न : एड्स रोगी को क्या दिया जाये।

उत्तर : सेब पपीता दलिया लें। लौहासब २–२ चम्मच सुबह शाम लें। मनोरंजन पर्याप्त करें।

प्रश्न : मेरी बच्ची दिमागी कमजोर है।

उत्तर : आप बच्चियों को मेन्टल सीरप ४–४ चमचे सुबह शाम दें।

(पृष्ठ ४० का शेष)

निर्माण का विरोध किया जा रहा है।

इटली में इसी साल सुनहरे गुंबद वाली एक बड़ी मस्जिद के निर्माण स्थल के सामने सूवर के सिर फेंके गये थे जिस के विरोध में मुसलमानों, यहूदियों और स्थानीय जिम्मेदारों ने विरोध प्रदर्शन किया था। यूरोप में मस्जिदों के निर्माण के खिलाफ विरोध में आन्दोलन इसलिए किया जाता है कि मस्जिद मुसलमानों की स्थायी उपस्थिति (मुस्तकिल मौजूदगी) का प्रतीक (अलामत) हुआ करता है।

ब्रिटेन की आबादी में तेजी से वृद्धि :

ब्रिटेन में पाकिस्तान, हिन्दुस्तानी और बंगलादेशी नस्ल के लोगों की वजह से आबादी में बढ़ोत्तरी हो रही है जिन के यहां जन्म प्रतिशत सबसे अधिक है। पिछले वर्ष ब्रिटेन में पैदा होने वाले बच्चों में इन विदेशी बाशिन्दों का दखल पांच प्रतिशत बताया गया है। जनगणना कार्यालय की एक समीक्षा के अनुसार पैदा होने वाले हर पांच बच्चों में एक बच्चा समुद्र पार देशों से सम्बन्ध रखने वाली महिला ने पैदा किया है। समीक्षा के अनुसार प्रवासी बाशिन्दों ने यहां जन्म प्रतिशत में २००१ ई० के बाद एक तिहाई वृद्धि हुई है। इन प्रवासी लोगों में सबसे अधिक जन्म प्रतिशत ४.५ पाकिस्तानी बाशिन्दों में पाई जाती है जो ब्रिटेन मूल के बाशिन्दों की जन्मदर से (१.७) से तीन गुना अधिक है। पिछले पांच वर्षों में प्रवासियों की आबादी ब्रिटेन की कुल आबादी में १० लाख से अधिक बढ़ोतरी हुई है।

डॉ० मुईद अशरफ नदवी

पाकिस्तान को नहीं चाहिए अमेरिकी फौज की मदद

पाकिस्तान राष्ट्रपति परवेज मुशर्रफ ने कहा कि देश में अलकायदा के शीर्ष आतंकियों के होने की खुफिया सूचना मिलने पर पाकिस्तान फौज उनसे खुद निपटने में सक्षम है। उसे अमेरिका की मदद नहीं चाहिए। मुशर्रफ ने यह भी कहा कि अमेरिका और ब्रिटेन की खुफिया एजेंसियों के पास ओसामा बिन लोदन और अल जवाहिरी के पाकिस्तान में होने के ठोस सबूत नहीं हैं। वह सिर्फ अनुमान के आधार पर ऐसा दावा कर रहे हैं।

कुछ दिनों पहले अमेरिकी राष्ट्रपति जार्जबुश ने कहा था कि पाकिस्तान में अल–कायदा के शीर्ष आतंकियों के होने की सूचना मिलने पर वह अपनी फौज पाकिस्तान भेजेंगे। इसके लिए उन्हें इस्लामाबाद से इजाजत लेने की जरूरत नहीं है। इसके जवाब में मुशर्रफ ने कहा, मैं बुश के बयान से सहमत नहीं हूं। उन्होंने यहां मीडिया से कहा कि आतंकियों के बारे में हमें जो भी सूचना मिलती है, हम उसे अमेरिका को भी बताते हैं और अमेरिका से संभव मदद लेने की कोशिश करते हैं, लेकिन आखिरकार कार्रवाई पाकिस्तानी फौज ही करती है।

पाकिस्तानी राष्ट्रपति ने कहा कि हम इस व्यवस्था को आगे भी जारी रखेंगे। अमेरिका और ब्रिटेन की खुफिया एजेंसियों के अलकायदा सरगना ओसामा बिन लादेन और उसके साथी अयमन अल जवाहिरी के पाकिस्तान में होने के दावे पर उन्होंने कहा, "हां, वह अफगानिस्तान–पाकिस्तान के सीमावर्ती बाजौर इलाके में छिपा हो सकता है। हम उसे खोजने का भरसक प्रयास भी कर रहे हैं, लेकिन इन खुफिया एजेंसियों के पास क्या सबूत है कि वह पाकिस्तान में हैं। मुशर्रफ ने इस आरोपों को भी सिरे से खारिज कर दिया कि पाकिस्तान के खुफिया तंत्र और सेना में कुछ लोग तालिबान और अल–कायदा आतंकियों से हमदर्दी रखने वाले हो सकते हैं। मुशर्रफ ने कहा, 'पश्चिमी देशों के मीडिया में की जा रही इस तरह की आलोचनाओं का मैं सख्त विरोध करता हूं। उन्होंने कहा कि आतंकी सेना के हजार से ज्यादा सैनिकों को मार चुकें हैं। ऐसे में मैं ख्वाब में भी नहीं सोच सकता कि सैनिकों को मारने वाले दस्ते सैनिक हो सकते है।

फ्रांस में ७४ लाख डालर की लागत से मस्जिद का निर्माण :

फ्रांस में एक लकड़ी के कारखाने में नमाज के लिए एकत्र होने वाले मुसलमानों को अगले साल जून तक ७४ लाख डालर की लागत से एक ऐसी मस्जिद मिल जाएगी जिसमें ढाई हजार मुसलमान नमाज अदा कर सकेंगे। इस्लाम इस समय यूरोप में ईसाई धर्म के बाद दूसरा सबसे बड़ा धर्म है जो तेजी से फैल रहा है।

मस्जिद का निर्माण अपनी आखिरी मंजिल में है जिसका मीनार ८१ फिट ऊंचा रखा गया है ओर यह मस्जिद शहर के किसी कोने में नहीं बल्कि सिटी हाल के निकट स्थानीय पुलिस स्टेशन की नजर के सामने हो गी।

यह फ्रांस की महान मस्जिदों में से एक होगी। यह मस्जिद फ्रांस के क्रेटिकल नगर में बन रही है। यहां के मेयर ओरियन्ट कैथलिक के हवाले से मीडिया ने खबर दी है कि उन्होंने कहा है कि हम नहीं चाहते थे कि यह मस्जिद किसी पोशीदा (गुप्त) स्थान पर हो बल्कि हम चाहते हैं कि मस्जिद ऐसी जगह हो कि उस पर सब की नजर पड़े और इसको मेयर और पुलिस की नजर के सामने रखना ही आतंकवादियों को समाप्त करने का उत्तम उपाय है। फ्रांसीसियों अधिकारी इस मस्जिद के इमाम को देश निकाला देने पर तुले हुए हैं और स्टीकौंसिल के प्रवासी विरोधी सदस्य इस के निकट सांस्कतिक केन्द्र (सकफती मर्कज) के निर्माण में सरकारी धन लगाने का विरोध कर रहे हैं।

यूरोपीय मुसलमान कई दहाइयों तक तह खानों और उजड़ी हुई इमारतों में इबादत किया करते थे उनके लिए नई मस्जिद का निर्माण इनकी आबादी में वृद्धि को प्रमाणित करता है। लन्दन में भी २०१२ में होने वाले ओलम्पिका खेलों के पार्क के निकट बारह हजार नमाजियों की क्षमता वाली मस्जिद के

(शेष पृष्ठ ३६ पर)